राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 हरियाणा के ओलिंपियन बॉक्सर छोड़ेंगे पॉजिटिक्स...

हम रिश्ते बेहतर बनाना चाहते लेकिन... 12

वर्ष : 14 | अंक : 219 | नई दिल्ली, शुक्रवार, 22 दिसंबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

राफेल-एम फाइटर जेट का सौदा फाइनल करने फ्रांस की टीम नई दिल्ली पहुंची

- फ्रांस ने भारत की ओर से मांगी गई निविदा के लिए अपनी बोली जमा की
- भारत अब फ्रांसीसी सरकार के अधिकारियों से सौदे पर बातचीत करेगा

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के पहले स्वदेशी विमानवाहक आईएनएस 'विक्रांत' के लिए 26 राफेल-एम फाइटर जेट का सौदा फाइनल करने फ्रांस की एक टीम नई दिल्ली पहुंची है। फ्रांस ने भारत की ओर से मांगी गई निविदा के लिए अपनी बोली भी जमा कर दी है। अब भारतीय पक्ष वाणिज्यिक प्रस्ताव सहित इस सौदे के लिए फ्रांसीसी बोली का विस्तृत अध्ययन करेगा। सरकार-से-सरकार अनुबंध के तहत फ्रांसीसी सरकार के अधिकारी भारत के साथ इस सौदे पर बातचीत करेंगे। इस साल जुलाई में बैस्टिल डे परेड के लिए राजकीय अतिथि के रूप में प्रधानमंत्री मोदी की फ्रांस यात्रा से ठीक पहले रक्षा अधिग्रहण परिषद ने लगभग 5.5 बिलियन यूरो के विमान सौदे को मंजूरी दे दी थी। राफेल-एम के सौदे को भारत और फ्रांस के संबंधों में मील का पत्थर करार दिया जा रहा है। इससे पहले भारतीय वायु सेना ने दो लड़ाकू स्क्वाड्रन (36 विमान) के लिए राफेल को चुना था, अब भारतीय नौसेना राफेल-एम का अधिग्रहण करने के लिए तैयार है। नौसेना को फ्रांस से 22 सिंगल और 4 ट्विन सीट वाले 4.5 पीढ़ी के राफेल-एम जेट मिलेंगे। नौसेना के विमानवाहक विक्रांत और विक्रमादित्य के लिए 26 राफेल-एम फाइटर जेट की जरूरत है, यह सौदा 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक का होगा। दरअसल, एक महीने पहले भारत ने फ्रांसीसी सरकार को एक अनुरोध पत्र (एलओआर) भेजा था। यह एक निविदा दस्तावेज की तरह है, जिसमें भारत सरकार ने अपनी सभी जरूरतों और क्षमताओं का उल्लेख किया था, जो वह विमान वाहक आईएनएस विक्रांत और आईएनएस विक्रमादित्य के लिए खरीदे जाने वाले राफेल समुद्री विमान में रखना चाहती है। फ्रांस ने भारतीय नौसेना के विमान वाहक आईएनएस विक्रांत और आईएनएस विक्रमादित्य के लिए 26 राफेल समुद्री जेट खरीदने के लिए भारत की निविदा पर अपनी बोली भी जमा कर दी है। विदेशों में सैन्य बिक्री से जुड़े फ्रांसीसी सरकारी अधिकारियों की एक टीम भारतीय निविदा पर प्रतिक्रिया प्रस्तुत करने के लिए पेरिस से आई है। फ्रांस की ओर से बोली जमा होने के बाद भारतीय पक्ष वाणिज्यिक प्रस्ताव, विमान की कीमत, अनुबंध के अन्य विवरणों के साथ इस सौदे के लिए फ्रांसीसी बोली का विस्तृत अध्ययन करेगा।

भारत अब फ्रांसीसी सरकार के अधिकारियों के साथ सौदे पर बातचीत करेगा, क्योंकि यह एक सरकार-से-सरकार अनुबंध है। नौसेना प्रमुख ने भी सौदे को शीघ्र अंतिम रूप देने के लिए परियोजना की समय सीमा को कम करने का निर्देश दिया है। भारतीय नौसेना और भारत सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए फास्ट-ट्रैक मोड में काम कर रही है ताकि अनुबंध पर जल्द से जल्द हस्ताक्षर हो सके और भारतीय वाहक हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की बढ़त सुनिश्चित करने के लिए विमान संचालित कर सकें।

अधिकतम तापमान 22°C

न्यूनतम तापमान 13°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

हां	40%
नहीं	45%
कह नहीं सकते	15%

बाजार

सोना	64,280
चांदी	75,400
सेंसेक्स	70,865
निफ्टी	21,255

संक्षिप्त खबरें

किरण सिंह देव बने छत्तीसगढ़ भाजपा के नये अध्यक्ष

नई दिल्ली। नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ में जगदलपुर से नवनिर्वाचित विधायक किरण सिंह देव को नया प्रदेश भाजपा अध्यक्ष नियुक्त किया है। पार्टी की आज यहां जारी एक विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गयी। श्री सिंह देव को बिलासपुर से सांसद श्री अरुण साव के स्थान पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बनाया गया है। श्री साव छत्तीसगढ़ की नई सरकार में उपमुख्यमंत्री बनाये गये हैं। श्री किरण सिंह देव ने अपनी राजनीति की शुरुआत भारतीय जनता युवा मोर्चा से की थी। वह पिछले 30 सालों से भाजपा से जुड़े हुए हैं। श्री सिंह देव भारतीय जनता युवा मोर्चा के बस्तर जिला अध्यक्ष भी रहे हैं। भारतीय जनता युवा मोर्चा के अलावा भाजपा के बस्तर जिला अध्यक्ष भी रहे हैं। वह वर्ष 2009 से 2014 तक जगदलपुर नगर निगम के महापौर रहे। वह अभी बिलासपुर संभाग के भाजपा के प्रभारी के तौर पर दायित्व संभाल रहे थे।

कम दाम की हवाई सेवा पर फोकस कर रही है सरकार

नई दिल्ली। सरकार ने कहा है कि देश में वायु सेवा को बढ़ावा देने के साथ सस्ता करने पर जोर दिया जा रहा है और अहमदाबाद जैसी नगरों से अमेरिका आदि राज्यों को सीधी हवाई सेवा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है! लोकसभा में नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने एक पूरक प्रश्न के जवाब में कहा कि अहमदाबाद से अमेरिका, कनाडा आदि के प्रमुख शहरों के लिए सीधी उड़ान देने की कोशिश की जाएगी। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के दौरान पूर्वोत्तर का 'उदय पूर्वोत्तर' किया जा रहा है। वहां के विभिन्न शहरों को हवाई यातायात से जोड़ा जा रहा है। मोदी सरकार आने के बाद पूर्वोत्तर के राज्यों में उड़ान सेवा की सुविधा को दोगुना करने का काम हुआ है। राज्य मंत्री सेवानिवृत जनरल वीके सिंह ने कहा कि एक शहर को दूसरे शहर से हवाई सेवा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है और कम किराए में लोगों को हवाई यात्रा उपलब्ध कराई जा सके।

दिल्ली में फुट-ओवर ब्रिज से गिरकर स्कूल के छात्र की मौत

नई दिल्ली। उत्तरपूर्वी दिल्ली में वजीराबाद सड़क पर एक फुट-ओवर ब्रिज से गिरकर 16 वर्षीय एक स्कूली छात्र की मौत हो गई। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह घटना बुधवार दोपहर करीब पौने दो बजे हुई जब कक्षा नौ का छात्र गाजियाबाद में अपने घर लौट रहा था। गंभीर रूप से घायल छात्र को जीटीबी अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस उपायुक्त जॉय तिर्की ने बताया, छात्र करीब छह मीटर की ऊंचाई से नीचे गिरा जिससे उसे गंभीर चोटें आई ।ह्व अधिकारी के अनुसार, घटना के दौरान छात्र के साथ मौजूद उसके सहपाठी ने पुलिस को बताया कि गिरने से पहले वह ग्रिल पर झूल रहा था।

लोकसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित, सत्र में 18 विधेयक पारित

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा के शीतकालीन सत्र की कार्यवाही गुरुवार को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सत्र का समापन करते हुए कहा कि चार दिसंबर को शुरू हुए सत्र के दौरान उत्पादकता 74 प्रतिशत रही। इस दौरान 14 बैठकें हुईं जो लगभग 61 घंटे 50 मिनट तक चली। इस सत्र में 12 सरकारी विधेयक पुरस्थापित हुए और 18 विधेयक पारित किये गये। उन्होंने कहा कि इस दौरान भारतीय न्याय (द्वितीय) संहिता, 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा (द्वितीय) संहिता, 2023, भारतीय साक्ष्य (द्वितीय) विधेयक, 2023, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2023, और दूरसंचार विधेयक, 2023 जैसे महत्वपूर्ण विधेयक पारित किए गए। श्री बिरला ने कहा कि वर्ष 2023-24 के लिए अनुदानों की पूरक मांगों को तथा वर्ष 2020-21 के लिए अतिरिक्त अनुदानों की मांगों को मतदान के उपरांत पारित किया गया। श्री बिरला ने बताया कि सत्र के दौरान 55 तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए और नियम 377 के अधीन कुल 265 मामले उठाए गए। सत्र के दौरान अविलंबनीय लोक महत्व के 182 मामले उठाए गए। अध्यक्ष ने बताया कि लोकसभा की विभागों से संबंधित स्थायी समितियों ने 35 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। निर्देश 73क के अधीन 33 वक्तव्य दिए गए और संसदीय कार्य के संबंध में संसदीय कार्य मंत्री द्वारा दिए गए तीन वक्तव्यों सहित कुल 34 वक्तव्य दिए गए। श्री बिरला ने यह भी बताया कि सत्र के दौरान कुल 1930 दस्तावेज सभा के पटल पर रखे गए।

प्रेस और पत्रिका रजिस्ट्रीकरण विधेयक लोकसभा में पारित

नई दिल्ली। लोकसभा के शीतकालीन सत्र की कार्यवाही गुरुवार को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सत्र का समापन करते हुए कहा कि चार दिसंबर को शुरू हुए सत्र के दौरान उत्पादकता 74 प्रतिशत रही। इस दौरान 14 बैठकें हुईं जो लगभग 61 घंटे 50 मिनट तक चली। इस सत्र में 12 सरकारी विधेयक पुरस्थापित हुए और 18 विधेयक पारित किये गये। उन्होंने कहा कि इस दौरान भारतीय न्याय (द्वितीय) संहिता, 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा (द्वितीय) संहिता, 2023, भारतीय साक्ष्य (द्वितीय) विधेयक, 2023, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2023, और दूरसंचार विधेयक, 2023 जैसे महत्वपूर्ण विधेयक पारित किए गए। श्री बिरला ने कहा कि वर्ष 2023-24 के लिए अनुदानों की पूरक मांगों को तथा वर्ष 2020-21 के लिए अतिरिक्त अनुदानों की मांगों को मतदान के उपरांत पारित किया गया। श्री बिरला ने बताया कि सत्र के दौरान 55 तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए और नियम 377 के अधीन कुल 265 मामले उठाए गए। सत्र के दौरान अविलंबनीय लोक महत्व के 182 मामले उठाए गए। अध्यक्ष ने बताया कि लोकसभा की विभागों से संबंधित स्थायी समितियों ने 35 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। निर्देश 73क के अधीन 33 वक्तव्य दिए गए और संसदीय कार्य के संबंध में संसदीय कार्य मंत्री द्वारा दिए गए तीन वक्तव्यों सहित कुल 34 वक्तव्य दिए गए। श्री बिरला ने यह भी बताया कि सत्र के दौरान कुल 1930 दस्तावेज सभा के पटल पर रखे गए।

सेना के वाहन पर आतंकी हमला, तीन जवान शहीद

जम्मू। जम्मू संभाग के जिला पुंछ में गुरुवार दोपहर आतंकियों द्वारा घात लगाकर सैन्य वाहन पर हमला करने की खबर है। बताया जा रहा है कि जिले के दोनाड़ क्षेत्र में थानामंडी-बफलियाल सड़क पर अपने गंतव्य की ओर जा रहे सैन्य वाहन पर आतंकियों अचानक हमला बोल दिया। सूत्रों के अनुसार, इस हमले में तीन जवानों का बलिदान हो गया है और तीन अन्य घायल हैं। जवानों ने तुरंत स्थिति को भांपते हुए मोर्चा संभाल लिया। हमले की सूचना पुलिस और सेना के अधिकारियों को भी दी गई। घटनास्थल पर अतिरिक्त बल पहुंच गया है। आसपास के इलाके को घेर लिया गया है। सूत्रों की मानें तो आतंकियों ने पहले ग्रेनेड फेंका और फिर गोलीबारी शुरू कर दी। जवानों ने भी आतंकियों को उनके हमले का जवाब दिया। एक महीने से भी कम समय में इस क्षेत्र में सेना पर यह दूसरा आतंकी हमला है। इससे पहले 22 नवंबर को राजौरी में हुए एनकाउंटर में 5 जवान शहीद हुए थे। सूत्रों के मुताबिक, यह हमला थानामंडी-सुरनकोट रोड पर डेरा की गली (डीकेजी) नाम के इलाके में हुआ है। यह वाहन जवानों को लेकर सुरनकोट और बफलियाज जा रहे थे, जहां बुधवार रात सुरक्षाबलों ने आतंकियों के खिलाफ घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया था।

सीएम ने बोधगया में बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा से की मुलाकात

सीएम ने महाबोधि मंदिर में की पूजा अर्चना

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरुवार को बोधगया के तिब्बतियन मोनेस्ट्री पहुंच कर बौद्ध धर्म गुरू परम पावन दलाई लामा से मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने परम पावन दलाई लामा को पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्र एवं प्रतीक चिह्न भेंटकर उनका स्वागत किया और उन्हें नमन कर उनका आशीर्वाद लिया। परम पावन दलाई लामा ने मुख्यमंत्री को दीघार्यु एवं स्वस्थ रहने का आशीर्वाद दिया और मुख्यमंत्री ने भी परम पावन दलाई लामा के स्वस्थ और सुदीर्घ जीवन की कामना की। परम पावन दलाई लामा से बातचीत के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि आप जब भी यहां आते हैं तो हम आपसे मिलने आते हैं और आपका आशीर्वाद लेते हैं। सभी धर्मों के प्रति हमलोगों का सम्मान है। बौद्ध धर्म के प्रति भी हमलोगों का सम्मान है। मुख्यमंत्री ने परम पावन दलाई लामा को वैशाली में बनने वाले बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय के उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री के आग्रह को परम पावन दलाई लामा ने स्वीकार किया। इसके पश्चात तिब्बतियन मोनेस्ट्री में ही मुख्यमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय संघ मंच के प्रतिनिधियों से मुलाकात की और उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया। इसके पश्चात महाबोधि मंदिर परिसर में मुख्यमंत्री ने महाबोधि महाविहार एवं बोधगया टेंपल मैनेजमेंट कमिटी कार्यालय में 180 के डब्ल्यूपी सोलर पावर प्लांट का शिलापट्ट अनावरण कर शिलान्यास किया।

अनुभवों को ध्यान में रखते हुए करें लोकसभा चुनाव-2024 की तैयारी : गुप्ता

प्रात : किरण/एजेंसी

जयपुर। राजस्थान में हाल में संपन्न विधानसभा चुनाव के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए आगामी लोकसभा चुनाव-2024 की तैयारियों को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए हैं। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने राज्य विधानसभा चुनाव-2023 को लेकर सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों के साथ बुधवार को सचिवालय में वीसी के माध्यम से बैठक में यह निर्देश दिए। उन्होंने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों से विधानसभा चुनाव के अनुभवों को जाना तथा लोकसभा चुनाव-2024 की तैयारियों को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। श्री गुप्ता ने मतदाता सूचियों के शुद्धिकरण, सहायक मतदान केन्द्र, मतदान दिवस से पूर्व एवं मतदान दिवस के दिन मतदाता जागरूकता गतिविधियां, मीडिया एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ प्रबंधन, चुनाव के दौरान किए गए नवाचार, पोस्टल बैलेट्स एवं सुरक्षा प्रबंध को लेकर सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों से अनुभव एवं चुनौतियों को लेकर विस्तार से चर्चा की। प्रदेश में लोकसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर उन्होंने कहा कि गत अक्टूबर-दिसंबर तिमाही के दौरान 17 वर्ष से अधिक उम्र के युवाओं के नाम मतदाता सूची में शामिल करने के लिए आगामी छह जनवरी से विशेष अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने निर्देश दिए कि मतदाता सूचियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के दौरान ट्रांसजेंडर, दिव्यांग एवं सहरिया आदिवसियों के नामांकन पर विशेष ध्यान दिया जाए। श्री गुप्ता ने मतदाता सूचियों में फोटो सिमिलर एंट्री (पीएसई) एवं डेमोग्राफिक सिमिलर एंट्री (डीएसई) वाले दोहरे नाम हटाने के संबंध में जानकारी एवं निर्देश दिए गए। प्रदेश भर की मतदाता सूचियों में डीएसई के रूप में लगभग 51 हजार एवं पीएसई के रूप में एक लाख 10 हजार 439 दोहरे नाम अंकित हैं।

उन्होंने बताया कि राजस्थान विधानसभा चुनाव- 2023 में मतदान प्रक्रिया व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न कराने के लिए निर्वाचन विभाग की ओर से मतदान दलों के प्रशिक्षण और सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा गया। निर्वाचन विभाग की ओर से किए गए इस माइक्रो मैनेजमेंट से मतदान व्यवस्थित सम्पन्न हुआ और एक भी मतदान केन्द्र पर पुनर्मतदान की आवश्यकता नहीं पड़ी।

जाम से छुटकारे के लिए एलीवेटर को महत्व: गडकरी

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। सरकार ने कहा है कि जाम से छुटकारे के लिए और एक शहर से दूसरे शहर की दूरी कम करने के लिए बड़े स्तर पर सड़कों का निर्माण किया जा रहा है। सड़क एव परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने गुरुवार को लोकसभा में पूरक प्रश्न के जवाब में कहा कि महाराष्ट्र के मराठवाड़ा में सड़कों के विकास के लिए विशेष ध्यान दिया जा रहा है और पुणे में जो ट्रैफिक की समस्या है उसका निपटान किया जा रहा है। उन्होंने राजस्थान के सीकर में भी जाम से निटने के लिए जरुरी कदम उठाने की बात कही है। उन्होंने कहा हम दिल्ली के बाजू में एनसीआर में 65 हजार करोड रुपए के काम कर रहे हैं। दिल्ली देहरादून राजमार्ग का काम पूरा हो गया है। सहारनपुर से देहरादून तक हाईवे बन रहा है और दिल्ली से अब सिर्फ दो घंटे में देहरादून और डेढ़ घंटे में हरिद्वार पहुंचा जा सकेगा।

निलंबन के खिलाफ विपक्षी सांसदों ने मार्च निकाला

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। विपक्षी सांसदों ने दोनों सदनों से 140 सदस्यों के निलंबन पर विरोध जताते हुए बृहस्पतिवार को संसद भवन से एक मार्च निकाला जो विजय चौक पर संपन्न हुआ।

राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अगुवाई में विपक्षी सांसदों ने संसद भवन से विजय चौक तक पैदल मार्च किया। विपक्षी सांसदों ने एक बड़ा बैनर ले रखा था जिस पर 'लोकतंत्र बचाओ' लिखा था। खरगे ने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह संसद से जुड़े विषयों पर सदन के बाहर बोल रहे हैं जो विशेषाधिकार हनन का मामला बनता है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, "निलंबन के खिलाफ हमारा प्रदर्शन है। सरकार और मोदी जी यह नहीं चाहते कि सदन चले।"

खरगे ने कहा, "हम लोकसभा में, संसद की सुरक्षा में सेंध की घटना से जुड़ा विषय उठाना चाहते थे कि यह क्यों हुआ, कैसे हुआ और इसके लिए कौन जिम्मेदार है। हम चाहते थे कि सरकार सदन को इस बारे में बताए। प्रधानमंत्री और गृह मंत्री दोनों सदन में नहीं आए। वे, सदन में जिन बातों को कहना है, उन्हें बाहर बोल रहे हैं।" उन्होंने बताया कि निलंबन के मुद्दे को लेकर विपक्षी नेता शुक्रवार को जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन करेंगे। सदन में तख्तियां लहराने और नारे लगाने के आरोप में पिछले कुछ दिनों के भीतर 143 सांसदों को लोकसभा और राज्यसभा से निलंबित कर दिया गया है। विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) के सांसद 13 दिसंबर को संसद की सुरक्षा में हुई चूक की घटना को लेकर गृह मंत्री अमित शाह से बयान की मांग कर रहे हैं।

पीड़ितों की सहायता में लापरवाही पर होगी कार्रवाई : सीएम योगी

प्रात : किरण / एजेंसी

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को चेतावनी दी है कि पीड़ितों की मदद में विलंब और लापरवाही कतई नहीं होनी चाहिए। गोरखनाथ मंदिर में जनता जनता दर्शन के दौरान लोगों की समस्याएं सुनने के दौरान श्री योगी ने अधिकारियों से कहा कि जनता की समस्याओं के समाधान में किसी तरह की लापरवाही हुई तो संबंधित के खिलाफ कार्रवाई भी तय है। किसी पीड़ित की समस्या के समाधान में अगर कहीं भी कोई दिक्कत आ रही है तो उसका पता लगाकर निराकरण कराया जाए और किसी स्तर पर जानबूझकर कर प्रकरण को लंबित रखा गया है तो संबंधित की जवाबदेही तय की जाए।

मंदिर परिसर के महंत दिग्विजय नाथ स्मृति भवन के सामने आयोजित जनता दर्शन में मुख्यमंत्री ने करीब 300 लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं और सभी को आश्वस्त किया कि किसी को भी घबराने की आवश्यकता नहीं है। हर समस्या का वह प्रभावी निस्तारण कराएंगे। इसे लेकर उन्होंने प्रशासन व पुलिस के अधिकारियों को मौके पर ही दो टूक समझाया कि जनता की समस्याओं का समयबद्ध, निष्पक्ष और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें।

कुछ प्रकरणों पर उन्होंने अफसरों को निर्देशित किया कि यह भी पता लगाएं कि यदि किसी को प्रशासन का सहयोग नहीं मिला है तो ऐसा क्यों और किन कारणों से हुआ। हर पीड़ित की त्वरित मदद की जाए। उन्होंने जमीन कब्जाने की शिकायतों पर विधि सम्मत कठोर कदम उठाने का निर्देश दिया। हर बार की तरह इस बार भी जनता दर्शन में कई लोग इलाज में आर्थिक सहायता की गुहार लेकर पहुंचे थे। इस पर सीएम योगी ने अधिकारियों से कहा कि जल्द से जल्द अस्पताल के इस्टीमेट की प्रक्रिया पूर्ण कराकर शासन को उपलब्ध करा दें। इलाज के लिए मुख्यमंत्री विवेकाधीन कोष से पर्याप्त मदद की जाएगी।

विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करेंगे : यादव

प्रात : किरण/एजेंसी

भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा है कि विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य विधायक और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कार्यकर्ता करेंगे। डॉ यादव ने कल शाम यहां भाजपा कार्यालय में विधायक दल की बैठक के बाद मीडिया से चर्चा में यह बात कही। इस मौके पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा भी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि विधायक दल की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में निकाली जा रही विकसित भारत संकल्प यात्रा में सभी विधायकों को सहभागिता कर प्रदेश की जनता को केंद्र सरकार और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए चर्चा की गई है। बैठक में प्रदेश की जनता को जनहितैषी योजनाओं का लाभ दिलाने प्रदेश सरकार की विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में महत्वपूर्ण बातचीत हुयी है ।प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने भाजपा विधायक दल की बैठक के बाद मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में गरीब कल्याण की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली जा रही है। प्रदेश में यह यात्रा 16 दिसंबर से प्रारंभ हुई है। इस यात्रा को लेकर भाजपा विधायक दल में चर्चा हुई है।

राजनीति | जातिगत जनगणना और महिला आरक्षण अहम मुद्दा रहेगा

कांग्रेस कार्य समिति की बैठक : खरगे ने भारत जोड़ो यात्रा के दूसरे चरण का रखा प्रस्ताव

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पार्टी की शीर्ष नीति निर्धारण इकाई कार्य समिति की बैठक में बृहस्पतिवार को अगले लोकसभा चुनाव के लिए ठोस रणनीति बनाने पर जोर दिया और यह प्रस्ताव रखा कि राहुल गांधी पूर्व से पश्चिम की ओर दूसरे चरण की भारत जोड़ो यात्रा निकालें, क्योंकि पार्टी के नेता एवं कार्यकर्ता लंबे समय से यह मांग कर रहे हैं। खरगे की अध्यक्षता में हुई बैठक में कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और कार्य समिति के विभिन्न सदस्यों ने शिरकत की। बैठक में दिए गए अपने संबोधन में कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, पिछले कई महीनों से पार्टी के सभी नेता और कार्यकर्ता एक स्वर में लगातार एक मांग मेरे सामने रखते रहे हैं कि राहुल गांधी जी पूर्व से पश्चिम की ओर भारत जोड़ो यात्रा निकालें। मैं कार्यसमिति में राहुल जी के समक्ष यह बात रखता हूं और निर्णय आप सभी पर छोड़ता हूं। खरगे ने कार्य समिति की बैठक में कहा, उन सवालों को हमें नहीं भूलना है, जिन पर आगे की राजनीति प्रभावित होगी। जातिगत जनगणना और महिला आरक्षण अहम मुद्दा रहेगा। हम चाहते हैं कि महिला आरक्षण तत्काल लागू हो और महिलाओं को आरक्षण के दायरे में लाया जाए। उन्होंने कहा, हमें आगामी लोकसभा चुनाव के लिए कुछ ठोस रणनीति बनानी होगी। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि लोकसभा चुनाव को लेकर ठोस रणनीति बनानी होगी तथा समान विचारधारा वाले दलों के साथ मिलकर ज्यादा से ज्यादा सीटें जीतनी होंगी। खरगे ने राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ की नकल उतारे जाने के विवाद तथा विपक्षी सांसदों के निलंबन का हवाला देते हुए बृहस्पतिवार को आरोप लगाया। कि संवैधानिक पदों पर बैठे जिन लोगों पर सांसदों के संरक्षण की जिम्मेदारी है, वो दलगत राजनीति का हिस्सा बनकर तथा जाति, क्षेत्र और व्यवसाय को ढाल बनाकर राजनीति कर रहे हैं और दायित्वों को पूरा करने में विफल रहे हैं। खरगे ने आरोप लगाया कि सरकार अहम विधेयकों को मनमाने ढंग से पारित कराने के लिए लोकतंत्र का गला घोंट रही है तथा संसद को सत्ता पक्ष के मंच के रूप में बदलने का षड्यंत्र चल रहा है।

संक्षिप्त समाचार

विवि परिसर के खेल मैदान की मरम्मत की मांग

ऋषिकेश, एजेंसी। श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विवि के पं. ललित मोहन शर्मा परिसर के छात्रसंघ ने परिसर के खेल मैदान को खेलने योग्य बनाने की मांग की है। जिसको लेकर छात्रसंघ ने परिसर के निदेशक एमएस रावत को ज्ञापन सौंपा है। साथ ही आगामी 20 दिसंबर तक कार्य शुरू नहीं होने पर कानूनी कार्रवाई की चेतावनी दी है। विवि परिसर के छात्रसंघ अध्यक्ष हिमांशु जाटव ने बताया कि बीते दिनों खानपुर विधायक उमेश कुमार की ओर से निजी खर्च पर परिसर के खेल मैदान के समतलीकरण और सौंदर्यीकरण की घोषणा की गई थी। जिसको लेकर कार्य भी शुरू किया गया। लेकिन उक्त कार्य में मैदान की खुदाई के बाद रोलर चलाकर छोड़ दिया गया। यह कार्य पिछले कई माह से बंद पड़ा है। जिससे खेल मैदान पूर्व की भांति खेलने योग्य भी नहीं बचा है। इससे छात्र-छात्राओं को विभिन्न खेलों के अभ्यास में दिक्कतें हो रही हैं। बताया कि इसको लेकर पूर्व में परिसर निदेशक सहित कुलसचिव को कई बार ज्ञापन के माध्यम से सूचना दी गई थी। लेकिन विवि प्रशासन की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई। कहा कि अब छात्रसंघ की यह आखिरी चेतावनी है। आगामी 20 दिसंबर तक क्रीड़ा मैदान का कार्य शुरू नहीं होने पर छात्रसंघ की ओर से संबंधित लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी विवि प्रशासन की होगी। इस मौके पर छात्रसंघ महासचिव माधवेंद्र मिश्रा, हिमांशु कश्यप, रवि बिष्ट, निशांत बागड़ी, अमन निषाद, सत्यम मिश्रा, विनायक, आदित्य पंवार आदि मौजूद रहे।

सफाई कर्मचारियों ने की नियमितीकरण की मांग

ऋषिकेश, एजेंसी। नगर पालिका मुनिकीरेती, ढालवाला और नगर पंचायत जौंक के सफाई कर्मचारियों ने अखिल भारतीय सफाई मजदूर संघ के बैनर तले निकाय के अधिशासी अधिकारी को तीन सूत्रीय ज्ञापन दिया। इसमें कर्मचारियों की नियमितीकरण की मांग की गई। भारतीय सफाई मजदूर संघ के उत्तराखंड प्रभारी विशाल बिरला ने बताया कि पहली शिफ्ट में काम करने के बाद अधिकांश कर्मचारी जुलूस की शक्ल में अधिशासी अधिकारी मुनिकीरेती के कार्यालय पहुंचे। स्वर्गाश्रम जौंक के कर्मचारियों ने ईओ मंजू चौहान को ज्ञापन दिया। विशाल बिरला ने कहा कि सफाई कर्मचारियों की नियमितिकरण की मांग संघ शासन से मांग कर रहा है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है। संघ ने समस्त निकायों के ठेकेदारी प्रथा, संविदा, गैंग, पुरानी समिति, दैनिक मजदूरी आदि की व्यवस्था समाप्त कर कर्मचारियों को स्थाई नियुक्ति देने की मांग की। साथ ही ललित मोहन रयाल कमेटी की सिफारिशों को लागू करने और सफाई कर्मचारियों के लिए आवास की व्यवस्था करने की मांग की। संघ के प्रतिनिधियों ने कहा कि उक्त मांगों पर कार्रवाई न होने पर एक जनवरी 2024 से कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल चले जाएंगे। ज्ञापन देने वालों में कुलदीप, आकाश बिट्टू, राकेश कुमार, समीर कुमार आदि मौजूद रहे।

ठंड से ठिठुरे लोग, हवाओं ने बढ़ाई परेशानी

लक्सर, एजेंसी। सुबह घना कोहरा छाने से लोगों को ठंड का सामना करना पड़ा। दोपहर को धूप निकली तो लोगों को ठंड से राहत मिली। दोपहर बाद हवाएं चलने से लोगों की परेशानी झेलनी पड़ी। मंगलवार की सुबह घना कोहरा छाए रहने से वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ा। लेकिन कोहरे का प्रकोप ज्यादा देर नहीं रहा। मौसम साफ होने के साथ ही धूप निकलने से लोगों को राहत मिली। वहीं, अन्य दिनों की अपेक्षा बाजार में भीड़ रही। जबकि, सर्दी बढ़ जाने व कोहरे के चलते सबसे ज्यादा दिक्कत स्कूलों बच्चों को हुई। स्कूल के छोटे बच्चे मंगलवार को ठंड में स्कूल पहुंचे। अभिभावक मोनू चौधरी, अरविंद पाल व संदीप शर्मा आदि का कहना है कि सरकार को वह कोहरे के चलते स्कूलों की छुट्टी करे। ताकि बच्चों को ठंड से बचाया जा सके।

गुंडी मल्ली में मुर्गीबाड़ा में घपला का आरोप

ऋषिकेश, एजेंसी। यमकेश्वर ब्लॉक के गुंडी मल्ली ग्राम पंचायत में मनरेगा के तहत बने मुर्गीबाड़े में घपला होने का आरोप लाभार्थी ने लगाया है। लाभार्थी ने मुर्गीबाड़े निर्माण में पूरे पैसे न मिलने का आरोप लगाया। वहीं विभागीय अधिकारियों ने जांच की बात कही है। मनरेगा के तहत गुंडी तल्ली निवासी अनिल कुमार को वित्त वर्ष 2021-22 में मुर्गीबाड़ा स्वीकृत हुआ था। नियमानुसार लाभार्थी को मुर्गीबाड़ा निर्माण के लिए 40 हजार रुपये की धनराशि स्वीकृत हुई थी। लेकिन लाभार्थी के खाते में मात्र 28 हजार रुपये की धनराशि ब्लॉक मुख्यालय की ओर से भेजी गई। लाभार्थी ने आरोप लगाया कि उन्हें 12 हजार रुपये कम दिए गए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मुर्गीबाड़े के निर्माण के लिए उन्होंने सीमेंट स्वयं खरीदी थी, लेकिन सीमेंट के पैसे नहीं दिए गए। उन्होंने बताया कि जब उन्होंने ब्लॉक मुख्यालय में बाकी के भुगतान को लेकर संपर्क किया तो वहां से जानकारी मिली की जिस फर्म के नाम के सीमेंट के बिल लगे हैं, उस फर्म के खाते में पैसे भेजे गए हैं। लेकिन अब बकाया भुगतान को लेकर खंड विकास अधिकारी कार्यालय से कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है।

एक जनवरी से राशन वितरण का काम नहीं करेंगे डीलर

ऋषिकेश, एजेंसी। सरकारी सस्ता गल्ला डीलरों ने बैठक का आयोजन कर पूर्ति निरीक्षक ऋषिकेश विजय डोभाल को दो सूत्री ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में एक जनवरी से राशन वितरण न करने और बकाया बिलों के भुगतान की मांग की गई। बैठक में ऑल इंडिया फेयर प्राइस शॉप डीलर फेडरेशन उत्तराखंड के ऋषिकेश इकाई के अध्यक्ष अजय कुमार शर्मा ने कहा कि पिछले दशकों से राशन डीलर अपने मांगों को लेकर संघर्ष कर रहे हैं। लेकिन राज्य और केंद्र सरकार को सुनवाई को तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय संगठन के आह्वान पर एक जनवरी से राशन डीलर हड़ताल पर जा रहे हैं। पिछले दशकों से राशन डीलरों की ओर से मानदेय (न्यूनतम आय गारंटी) की मांग की जा रही है, लेकिन केंद्र और राज्य सरकार अनदेखी कर रही है। कहा कि कोविड के दौरान प्रधान गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त में वितरित किए गए राशन के बिलों का अभी तक भुगतान नहीं हो पाया है। एक जनवरी से न तो राशन उठाई जाएगी और न ही किसी प्रकार का चालान लगाया जाएगा।

उत्तराखण्ड में कोरोना का एक भी केस नहीं, हर परिस्थिति से निपटने को तैयार स्वास्थ्य विभाग- डॉ आर राजेश

कोविड पॉजिटिव सैंपल की होगी जीनोम सीक्वेंसिंग- डॉ आर राजेश कुमार

प्रात : किरण, संवाददाता

देहरादून। देश में कोविड के नए मामले सामने आने के बाद उत्तराखण्ड स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से अलर्ट मोड पर है। कोविड गाइडलाइंस जारी करने के बाद स्वास्थ्य सचिव डॉक्टर आर राजेश कुमार ने डेली मॉनिटरिंग शुरू कर दी है। कोविड के नये वेरियंट के दृष्टिगत आज राज्य सचिवालय में स्वास्थ्य सचिव डॉ आर राजेश कुमार की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में सभी जनपदों के जिलाधिकारी, मुख्य चिकित्साधिकारी व स्वास्थ्य अधिकारी वर्चुअल माध्यम से मौजूद रहे। स्वास्थ्य सचिव डॉक्टर आर राजेश कुमार ने कहा उत्तराखंड में अभी कोरोना का एक भी मामला सामने नहीं आया है। कोरोना के नए वेरिएंट को लेकर विस्तृत गाइडलाइन के साथ ही अस्पतालों में सभी व्यवस्थाएं चाक चौबंद रखने के निर्देश जारी किए गए हैं। हर परिस्थिति से निपटने के लिए स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से तैयार है। उन्होंने आम मानस से अपील करते हुए कहा कि सभी कोरोना गाइडलाइंस का पालन करें। राज्य के सभी अस्पतालों में सैंपलिंग हो रही है। संदिग्ध मरीजों की निगरानी की जा रही है। कोविड को लेकर सचिवालय में हुई अहम बैठक में स्वास्थ्य सचिव ने अधिकारियों को निर्देशत करते हुए कहा कि कोविड की जांच आरटीपीसीआर के माध्यम से की जाए।उन्होने कहा सभी कोविड पॉजिटिव सैंपल की जीनोम सीक्वेंसिंग की जाए। कोविड मरीजों की लगातार निगरानी जनजागरुकता अभियान संचालित करें साथ ही यह सुनिश्चित किया जाए की किसी भी स्वास्थ्य इकाइयों में चिकित्सा सुविधाओं की कमी ना हो। सचिव द्वारा कोविड की दैनिक मॉनिटरिंग पर भी जोर दिया गया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कोविड के मामले शून्य व नए वेरियंट जेएन.1 को लेकर भी भारत सरकार से मिले दिशा.निर्देशों का अनुपालन किया जा रहा है। सचिव डॉ आर राजेश कुमार ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी जिलाधिकारी आम जनमानस में कोविड संबंधित भ्रातियों को बढ़ने ना दें व स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी आधिकारिक सूचनाओं का ही अनुपालन करें। बैठक में महानिदेश स्वास्थ्य डॉ विनीता शाहए अपर सचिव स्वास्थ्य अमनदीप कौर संयुक्त निदेशक चिकित्सा शिक्षा डॉ महेंद्र कुमार पंतए कार्यक्रम अधिकारी डॉ पकंज कुमार सहित समस्त मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य राज्य एवं जिला आईडीएसपी टीम द्वारा प्रतिभा किया गया।

विकसित भारत यात्रा से आमजन को मिल रही योजनाओं की जानकारी

हरिद्वार, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं नगर विधायक मदन कौशिक ने कहा कि विकसित भारत यात्रा से आमजन को केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी मिल रही है। गरीब, किसान, छोटे व्यापारियों और समाज के विभिन्न वर्गों की मदद के लिए यात्रा बेहतर विकल्प साबित हो रहा है।

टिबड़ी स्थित अंबेडकर पार्क में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा में मौजूद लोगों ने अपने लंबित प्रकरण के निस्तारण कराए और करीब सौ लोगों का हेल्थ कार्ड भी बनाया गया। इस दौरान जिला उपाध्यक्ष विकास तिवारी ने कहा की सरकार की योजनाओं का लाभ आम जनता तक पहुंचे और अंत्योदय से सर्वोदय की परिकल्पना धरातल पर सरकार हो इस उद्देश्य से मोदी की गारंटी की गाड़ी देशभर में घूम रही है।

कार्यक्रम में भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश उपाध्यक्ष अनु कक्कड़, मंडल अध्यक्ष राजेश शर्मा, विधायक प्रतिनिधि राजकुमार अरोड़ा, मंडल महामंत्री आकाश चौहान, महिला मोर्चा जिला उपाध्यक्ष पारुल चौहान, मंडल अध्यक्ष मृदुल शास्त्री आदि मौजूद रहे।

रसूलपुर मीठीबेरी ग्राम पंचायत में विकसित भारत संकल्प यात्रा के पहुंचने पर ग्रामीणों ने स्वागत किया। रसूलपुर बारात घर आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान ग्रामीणों ने अपनी-अपनी समस्याएं रखी। कार्यक्रम में ग्राम्य विकास, लोनिवि, समाज कल्याण, स्वास्थ्य, उद्यान, कृषि, बाल विकास, पंचायती राज, ऊर्जा निगम खाद्यान, शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे। सहायक समाज कल्याण अधिकारी शालिनी बलोदी ने सरकार द्वारा चल रही योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। एवं पिछले दो माह से पेंशन नहीं आने पर जल्द भुगतान का आश्वासन दिया। इस दौरान सांसद प्रतिनिधि ओम प्रकाश जमदग्नि, राजेश कुंवर, जिला पंचायत सदस्य बृज मोहन पोखरियाल, ग्राम प्रधान कमलेश द्विवेदी, मंडल अध्यक्ष सीमा चौहान, सरिता अमोली, पंकज चमोली, सुरेन्द्र रावत, मोहित वर्मा, आदि।

जच्चा-बच्चा को वितरित की मुख्यमंत्री महालक्ष्मी किट

ऋषिकेश, एजेंसी। विकसित भारत संकल्प यात्रा में कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने सरकार की योजनाओं की जानकारी दी। साथ ही जच्चा-बच्चा के लिए मुख्यमंत्री महालक्ष्मी किट योजना की किट वितरित की। जिसमें समाज कल्याण, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, महिला सशक्तिकरण व बाल विकास, खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग की ओर से स्टॉल लगाकर विभिन्न विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई।

अयोध्या से आए पूजित अक्षत के साथ निकाली शोभायात्रा

रुद्रपुर/ दिनेशपुर, एजेंसी। श्री राम मंदिर अयोध्या से आए पूजित अक्षत का खाटू श्याम मंदिर गल्ला मंडी में पहुंचने पर विश्व हिंदू परिषद और राष्ट्रीय स्वयं संघ के कार्यकर्ताओं समेत तमाम लोगों ने पुष्प वर्षा और जयघोष के साथ स्वागत किया। इसके बाद पूजित अक्षत के साथ शहर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

मुख्य बाजार, भगत सिंह चौक, बाटा चौक से गांधी पार्क होते हुए शोभायात्रा संघ कार्यालय पहुंची, जहां पूजित अक्षत रखे गए। वहां पर विहिप के विभाग संगठन मंत्री उमाकांत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला प्रचारक जितेंद्र, जिला मंत्री राजेंद्र मेहरा, जिला अध्यक्ष रविंद्र पाल सिंह, भारत भूषण चुघ, सरिता चौधरी, अंजू सिंह, सुभाष डोगरा आदि मौजूद रहे। इधर दिनेशपुर में पूजित अक्षत पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। निवर्तमान चेयरमैन सीमा सरकार के निवास पर स्थित शिव मंदिर में पूजित अक्षत कलश को स्थापित कर पूजा अर्चना की गई। इसके बाद कलश को एक वाहन में सजाकर कार्यकर्ताओं ने नगर में शोभायात्रा निकाली। यात्रा में शामिल राम भक्तों पर लोगों ने पुष्पवर्षा की। जगह जगह महिलाओं ने अक्षत कलश की आरती उतारकर पूजा अर्चना की।

महिला किसानों को मशरूम उत्पादन के तरीके बताए

अल्मोड़ा, एजेंसी। मोहन उप्रेती लोक संस्कृति कला एवं विज्ञान शोध समिति और उत्तराखंड राज्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी संस्थान की ओर से रूरल बिजनेस इनक्यूबेटर परिसर में पांच दिनी प्रशिक्षण का मंगलवार को समापन हुआ। ग्रामीण महिलाओं को मशरूम उत्पादन के तरीके बताए गए।

इस मौके पर हुई गोष्ठी में संस्था के सचिव कमल पांडे ने मशरूम उत्पादन करने की जानकारी दी। उन्होंने इस कार्यक्रम के जरिए मशरुम उत्पादकों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया। इस मौके पर मशरुम की खेती कर रहीं पार्वती बिष्ट, निर्मला फर्त्याल, लता कांडपाल, यजुवेंद्र शाह, पंकज आर्या को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि मोहित चन्याल ने किसानों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। रूरल बिजनेस इनक्यूबेटर के प्रभारी योगेश भट्ट ने किसानों को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। इस मौके पर नमिता टम्टा, यश, रश्मि, शिवानी, राजू कांडपाल आदि मौजूद रहे।

उत्तराखंड के युवाओं को विदेश में भी अवसर

- मुख्यमंत्री कौशल उन्नयन एवं वैश्विक रोजगार योजना बन रही वरदान
- 15 युवाओं ने पास की जापान की नेट-4 दक्षता परीक्षा
- दो अभ्यर्थियों का जापान में नौकरी के लिए हुआ चयन

प्रात : किरण, संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी राज्य के युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए हरसंभव प्रयासों में जुटे हैं। उत्तराखंड ही नहीं अब विदेशों में भी नौकरी का मौका सरकार दे रही है। मुख्यमंत्री कौशल उन्नयन एवं वैश्विक रोजगार योजना युवाओं के लिए वरदान बन रही है। योजना के तहत 15 युवाओं ने जापान में सेवायोजन के लिए ली जाने वाली नेट-4 दक्षता परीक्षा में सफलता हासिल की है। सफल युवाओं में से दो अभ्यर्थियों को जापान के चीदा प्रान्त में जॉब मिला है। उन्हें वेतन के रूप में प्रति माह 200000 येन (जापानी मुद्रा) मिलेंगे। दोनों अभ्यर्थी फरवरी में जापान जाएंगे। अन्य अभ्यर्थियों का अगले माह जनवरी में जॉब इंटरव्यू प्रस्तावित हैं। बता दें कि मुख्यमंत्री की विशेष पहल पर प्रदेश में कौशल विकास एवं सेवायोजन विभाग के अन्तर्गत विदेश रोजगार प्रकोष्ठ गठित किया गया है। यह प्रकोष्ठ राज्य के युवाओं को विदेश में रोजगार उपलब्ध कराने के लिए काम कर रहा है। योजना के तहत 33 अभ्यर्थियों को जापानी भाषा का तीन माह प्रशिक्षण दिया गया। इनमें 15 युवाओं ने जापानी एजेंसी द्वारा ली जाने वाली नेट-4 दक्षता परीक्षा उतीर्ण कर ली है। अभ्यर्थियों ने मुख्यमंत्री धामी को धन्यवाद कहा जापान की सेवायोजन नेट-4 दक्षता परीक्षा में सफलता हासिल करने वाले विद्यार्थियों और युवाओं ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को धन्यवाद कहा है। पौड़ी गढ़वाल के थलीसैंण ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम ऐंठी निवासी उज्जवल सिंह की पुत्री प्रियंका का भी जापान में जॉब के लिए चयन हुआ है। उनका कहना है कि विदेश जाकर काम करने का अवसर मिलना एक बहुत बड़ी बात है। उन्होंने कभी सोचा नहीं था कि उन्हें भी एक ऐसा अवसर मिलेगा।

टिहरी गढ़वाल निवासी दूसरी छात्रा कल्पना बिष्ट ने भी उत्तराखंड सरकार का आभार प्रकट करते हुए कहा कि सरकार की योजना ने उन्हें विदेश में नौकरी का अवसर दिया है।

घर में सो रहे थे पिता-पुत्र- डकैतों ने बोला धावा, दोनों को बंधक बनाकर पीटा, लाखों के जेवर और नगदी लेकर भागे

नैनीताल, एजेंसी। काशीपुर में मंगलवार की देर रात दड़ियाल रोड पर स्थित स्कूल संचालक यशपाल सिंह चौहान के घर में नकाबपोश बदमाशों ने डकैती कर दी। बदमाशों की संख्या 8 बताई जा रही हैं।

काशीपुर में बेखौफ चोरों के हौसले बुलंद हो गए हैं। काशीपुर में सोमवार की रात रामनगर रोड पर एसबीआई का एटीएम उखाड़ ले जाने की घटना के मामले में पुलिस अभी अपराधियों की तलाश कर ही रही है कि बीती रात दड़ियाल रोड पर स्थित स्कूल संचालक यशपाल सिंह चौहान के घर में नकाबपोश बदमाशों ने डकैती कर दी। बदमाशों की संख्या 8 बताई जा रही हैं।

जानकारी के अनुसार, रात करीब 1-30 बजे नकाबपोश बदमाश यशपाल सिंह चौहान के घर में घुस आए। घर पर यशपाल सिंह चौहान और उनका बेटा हिमांग सो रहे थे। बदमाशों ने दोनों को बंधक बनाकर पीटा। बता दें कि, मकान में दो युवतियां बतौर किराएदार रहती हैं। शोर सुनकर उनकी आंख खुल गई, तो उन्होंने अपने आप

को कमरे में बंद कर लिया और फोन करके पड़ोसियों को जानकारी दी। जब तक पड़ोसी आए तब तक हथियार बंद नकाबपोश बदमाश लाखों रुपये के जेवर और नगदी लूटकर फरार हो गए।

पड़ोसियों की सूचना पर एसपी अभय सिंह, सीओ वंदना वर्मा सहित नगर कोतवाली और आईटीआई थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और तलाश शुरू की। अभी तक डकैतों का कुछ पता नहीं चल पाया है। यशपाल सिंह चौहान का यूपी के रामपुर जिले में मूंगा देवी स्मृति हाई स्कूल के नाम से स्कूल है। उनकी पत्नी शिक्षिका है जो बीती रात घर पर नहीं थी। बताया गया कि वह गांव गई हुई थी। सूचना पाकर वे भी सुबह घर पहुंची। एसपी अभय सिंह ने बताया कि घटना को लेकर जांच पड़ताल की जा रही है। अपराधियों की तलाश के लिए अलग-अलग टीमें गठित की गई है। बताया गया की 2 दिन पहले यशपाल सिंह चौहान के घर के पास ही एक घर में ताला तोड़कर लाखों रुपए की चोरी कर ली गई थी।

बीमार बकरे का मांस खाने से वन रावत जनजाति के नौ लोगों की हालत बिगड़ी

नैनीताल, एजेंसी। खटीमा में वन रावत बस्ती में बीमार बकरे का मांस खाने से नौ लोगों की हालत बिगड़ गई। मंगलवार देर रात सभी को खटीमा नागरिक चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। समाचार लिखे जाने तक दो की हालत में सुधार हो गया था।

खटीमा में वन रावत बस्ती में बीमार बकरे का मांस खाने से नौ लोगों की हालत बिगड़ गई। मंगलवार देर रात सभी को खटीमा नागरिक चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। समाचार लिखे जाने तक दो की हालत में सुधार हो गया था।

खटीमा के चकरपुर में वन रावत जनजाति के लोगों की बस्ती है। गांव में रविवार को पार्वती नामक महिला ने अपना बकरा काटा था। बताया जा रहा है कि बकरा बीमार था। मांस खाने के बाद मंगलवार देर रात अचानक गांव की देवकी देवी, पार्वती, सुमेर सिंह, प्रिया, संतोष, विजय, पंकज, कमला देवी और कलावती की तबियत बिगड़ गई।

सूचना मिलने पर वन रावत बस्ती में पहुंची 108 एंबुलेंस के माध्यम से बीमार लोगों को खटीमा नागरिक चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद विजय और संतोष स्वस्थ हो गए जबकि सात लोग अभी भी भर्ती हैं। अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. वीपी सिंह ने बताया कि बीमार बकरे का मांस खाने से नौ लोगों को फूड प्वाइजनिंग की शिकायत हुई थी।

महानगर कांग्रेस का विस्तार, नौ उपाध्यक्ष और 24 बने सचिव

नैनीताल, एजेंसी। कांग्रेस महानगर अध्यक्ष गोविंद सिंह बिष्ट ने सोमवार को हल्द्वानी महानगर कमेटी का विस्तार करते हुए नई कार्यकारिणी की घोषणा कर दी। जिसमें नौ उपाध्यक्ष, नौ महामंत्री समेत 24 सचिव और कोषाध्यक्ष, मीडिया प्रभारी बनाए।

कांग्रेस महानगर अध्यक्ष गोविंद सिंह बिष्ट ने सोमवार को हल्द्वानी महानगर कमेटी का विस्तार करते हुए नई कार्यकारिणी की घोषणा कर दी। जिसमें नौ उपाध्यक्ष, नौ महामंत्री समेत 24 सचिव और कोषाध्यक्ष, मीडिया प्रभारी बनाए। विधायक सुमित हृदयेश ने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दी।

नई कार्यकारिणी में गिरीश तिवारी, हरीश लाल, आलोक शर्मा, हेमा पंत, त्रिलोचन मेलकानी, मधुकर बनोला, मुर्तजा अली, विनोद कुमार, हाजी मोहम्मद नबी को उपाध्यक्ष बनाया गया। कमलेश पांडे, राजू रावत, अनिल कन्नौजिया, भुवन आर्य, कौशलेंद्र भट्ट, अमित रावत, पुष्पा मेहता, चंपा चिलवाल और हाजी इस्लामुद्दीन को महामंत्री बनाया। इसके अलावा कृष्णा कुमार परगाई कोषाध्यक्ष, आशीष कुड़ई मीडिया प्रभारी समेत 24 सचिव भी बनाए।

तहसील प्रशासन ने किया महिला छात्रावास की भूमि का सर्वे

ऋषिकेश, एजेंसी। तहसील प्रशासन ने एसडीएस विवि ऋषिकेश परिसर के महिला छात्रावास की भूमि का निरीक्षण कर नापजोख की है। परिसर प्रशासन ने उक्त भूमि पर अवैध कब्जे की शिकायत तहसील प्रशासन से की थी।

श्रीदेव सुमन विवि के ऋषिकेश परिसर का कोयल घाटी में महिला छात्रावास है। इसे वर्ष 2019-20 में करीब 50 लाख की लागत से बनाया गया था। लेकिन निर्माण के बाद किसी महिला ने उक्त भूमि को अपना बता कर छात्रावास भवन पर ताला लगा दिया था। जिससे ऋषिकेश परिसर की छात्राओं को छात्रावास का लाभ नहीं मिल पा रहा था।

परिसर प्रशासन ने अवैध कब्जे की शिकायत तहसील व पुलिस प्रशासन से की थी। लेकिन काफी समय बाद भी दोनों विभागों की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई। मीडिया में खबर प्रकाशित होने पर तहसील प्रशासन हरकत में आया। तहसील प्रशासन ने उक्त भूमि का निरीक्षण कर सर्वे किया है। एसडीएम योगेश मेहरा ने बताया कि भूमि का सर्वे किया गया है। जिस महिला ने भूमि पर दावा किया है उसे दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए 10 दिन का समय दिया गया है। उसके बाद अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

नए भारत का नया कानून, अब दंड के बदले मिलेगा न्याय: शाह

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

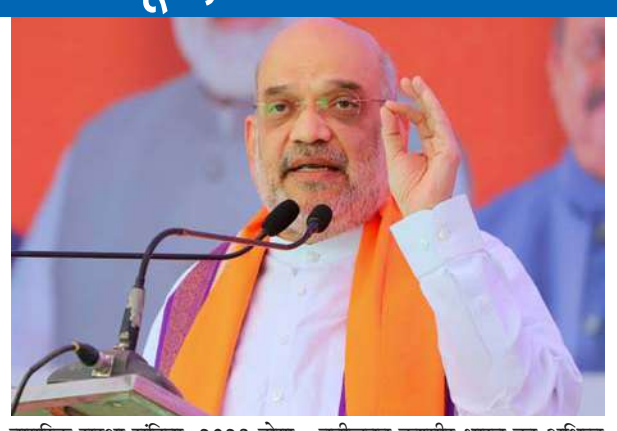

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा बुधवार को लोकसभा में 3 नए क्रिमिनल विधेयक को पेश किया गया। तीनों नए क्रिमिनल विधेयक लोकसभा में पास हो गए हैं। अब इसे राज्यसभा में रखा जाएगा। वहाँ से पास होने के बाद इसे मंजूरी के लिए राष्ट्रपति के पास भेजा जाएगा। यह तय है कि कानून के बनते ही गुलामी की मानसिकता और अंग्रेजों की निशानी से छुटकारा मिल जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुआई में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने अमृतकाल में गुलामी की निशानी को उखाड़ फेंकने और जन-जन को दंड के बदले न्याय दिलाने की पूरी तैयारी कर ली है। शाह का स्पष्ट मानना है कि इंडियन पीनल कोड, क्रिमिनल प्रोसीजर कोड और इंडियन एविडेंस कोड उस दौर में अंग्रेजों द्वारा थोपे गए ऐसे कानून हैं जो न्याय के लिए नहीं बल्कि दंड के लिए बनाए गए थे। शाह के इस कदम से अब इंडियन पीनल कोड, 1860 का नया नाम भारतीय न्याय संहिता, 2023 होगा, क्रिमिनल प्रोसीजर कोड, 1898 का नया नाम भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 होगा और इंडियन एविडेंस एक्ट, 1872 का नाम भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 होगा।

बीते 9 वर्षों में यह देखा गया है कि मोदी जी के नेतृत्व और अमित शाह के कुशल मार्गदर्शन में भारतीय जनता पार्टी ने अपने मेनिफिस्टो और वादे को बखूबी निभाया है। मोदी सरकार ने वादा किया था कि सरकार बनते ही धारा 370 और 35 ए को हटा दिया जाएगा। राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक और भारतीय राजनीति के चाणक्य शाह की सख़्त नीतियों के कारण आज धारा 370 और 35 ए हट चुकी है। नतीजतन कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। मोदी-शाह की जोड़ी ने एक तरफ जहाँ मुस्लिम महिलाओं के सम्मान में तीन तलाक को हटाने का वादा पूरा किया तो दूसरी ओर लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं को 33% आरक्षण देकर देश की मातृ-शक्ति को सम्मान देने का काम भी किया है। आतंकवाद और उग्रवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति लाने का अपना वादा भी भाजपा ने पूरा किया है। इसके कारण तीन हॉट स्पॉट झ्र जम्मू-कश्मीर, वामपंथी उग्रवादी क्षेत्र और नॉर्थ ईस्ट झ्र में आतंकी घटनाओं में 65% की कमी आई है और मृत्यु में 73% की कमी आई है। पूर्वोत्तर से 70 % से अधिक क्षेत्रों से अफ्सपा को हटा लिया गया है। मोदी सरकार ने वादा किया था अयोध्या में राम मंदिर बनाएंगे और अब 22 जनवरी को वहाँ पर रामलला विराजमान होने वाले हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के कद्दावर नेता शाह ने कहा था कि न्याय मिलने की गति को बढ़ाएंगे, न्याय अब दंड के आधार पर नहीं बल्कि न्याय के आधार पर होगा। देश की जनता इस बात की गवाह है कि नए भारत का नया कानून लाने और इस वादे को पूरा करने के लिए शाह किस कदर प्रयासरत हैं। बीते 9 सालों की उपलब्धि के आधार पर कहा जा सकता है कि मोदी-शाह की जोड़ी अपने इस वादे को भी पूरा करके दम लेगी।

अमृतकाल में इन बदलावों के साथ नए भारत का नया कानून अर्थात क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम एक नए युग में प्रवेश करने वाला है, जहाँ कानून का मकसद दंड या सजा देना नहीं होगा बल्कि कानून का मकसद न्याय देना होगा। यह प्रयास साबित करता है कि ये नरेन्द्र मोदी सरकार है, जो कहती है वो करती है।

राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका पर आईएपीएम का आयोजित हुआ राष्ट्रीय सम्मेलन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

प्रेस काउंसिल ऑफ इण्डिया द्वारा अधिसूचित राष्ट्रीय पत्रकार संगठन इंडियन एसोसियशन ऑफ प्रेस-एन-मीडियमैन (आईएपीएम) द्वारा राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि यूपी की योगी सरकार के कैबिनेट मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी ने कहा कि मीडिया ही है जो जिम्मेदारों को उनकी जिम्मेदारी याद दिलाता है और जनमानस की आवाज को बुलंद करता है। मीडिया को जहां जनहितकारी समस्याओं को उठाना चाहिए वहीं निष्पक्ष बात कहनी और लिखनी चाहिए। यह कटु सत्य है कि राष्ट्र के निर्माण में मीडिया की भूमिका को कभी नकारा नहीं जा सकता। उल्लेखनीय है कि सम्मेलन की अध्यक्षता आईएपीएम के राष्ट्रीय अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार पवन सहयोगी द्वारा की गई। सम्मेलन मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण की जन्म भूमि स्थित होटल शीतल रीजेंसी में आयोजित हुआ जिसमें उ.प्र. के पूर्व कैबिनेट मंत्री सरजीत सिंह डंग, भारतीय प्रेस परिषद के 3 सदस्य सर्व श्री गुरिंदर सिंह, जय शंकर गुप्ता, श्याम सिंह पंवार, विधायक राजेश चौधरी, महापौर विनोद अग्रवाल, अ.भा. समाचार पत्र एसोसिएशन के अध्यक्ष अखिलेश चन्द शुक्ल, भारतीय प्रेस परिषद के पूर्व सदस्य अशोक नवरत्न, मथुरा के जिलाधिकारी शेलेंद्र सिंह, एस एस पी शैलेश पाण्डेय और प्रदेश सरकार निदेशक मीडिया दिवाकर खरे सहित कई प्रतिष्ठित और आईएपीएम की विभिन्न प्रदेशों की इकाईयों के सैकड़ों प्रतिनिधि सम्मलित हुए।

राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका विषय पर सम्मेलन में विस्तृत मंथन हुआ और पत्रकारों से संबंधित मामले उठाये गये। इस मौके पर आईएपीएम की ओर से प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नाम 7 सूत्रीय एक ज्ञापन भी मुख्य अतिथि लक्ष्मी नारायण चौधरी को सौपा गया। जिसमें पत्रकार सुरक्षा कानून बनाये जाने, नेशनल जर्नलिस्ट रजिस्टर बनाये जाने, प्रदेश में पत्रकारों को न्यूनतम 15 हजार रुपए पेंशन सम्मान राशि योजना शुरू किये जाने, पत्रकारों के रेल यात्रा किराये में छूट को पुनः बहाल किये जाने व पत्रकारों के खिलाफ कोई वाद या गिरफ्तारी किये जाने से पूर्व राज्य सरकार की अनुमति अनिवार्य किये जाने जैसी मांग की गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन सहयोगी ने आईएपीएम के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि एसोसियशन का लक्ष्य ग्रामीण व अंचलिक स्तर पर पत्रकारिता कर रहे पत्रकारों को मुख्य धारा से जोडना है। जिससे कि उन्हे आवश्यक सुविधाएं व सुरक्षा मिल सके। उन्होने इस अवसर पर प्रेस की स्वतंत्रता को स्वस्थ लोकतंत्र के लिए जरूरी बताया।

प्रदेश सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. सरजीत सिंह डंग ने इस अवसर पर कहा कि हर इंसान राष्ट्रीय इमारत की ईंट है। अगर ईंट मजबूत हो तो राष्ट्र रूपी इमारत भी मजबूत रहेगी। इसके लिए जरुरी है कि हम खुद श्रेष्ठ बनें तभी राष्ट्र निर्माण की भूमिका भी श्रेष्ठ बनेगी। मीडिया के शब्दों के घाव बहुत गहरे होते है, इसलिए यह शब्द जहां किसी का मरहम बने, वहीं जरूरत पड़ने पर चोट भी करे।

प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य जयशंकर गुप्त ने सरकार समर्थक या सरकार विरोधी मीडिया के अलावा निष्पक्ष और जिम्मेदार मीडिया होने को जरूरी बताया और कहा कि मीडिया की जिम्मेदारी है कि वह जनहित में मामले उठाये चाहे वह सरकार को खटटे लगे या मीठे। प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य गुरिन्दर सिंह व श्याम सिंह पवांर ने भी मीडिया को उसकी जिम्मेदारी याद दिलायी और लोकतंत्र में इसकी स्वतंत्रता को आवश्यक बताया।

विधायक राजेश चौधरी ने मीडिया को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप आवाज बनिए उसकी जिसकी कोई सुनता नही, क्योंकि कमजोर लोगों की जब कोई नहीं सुनता तब मीडिया

ट्रांसजेंडर और समलैंगिक समुदाय के लिए कार्यशाला आयोजित : अमित मिश्रा

नई दिल्ली। ट्रांसजेंडर (अधिकार संरक्षण) अधिनियम 2019 आप के अधिकारों का संरक्षण करता है यह अधिनियम ट्रांसजेंडर को समाज में बराबरी का अधिकार दिलाता है। इस अधिनियम के लागू होने के बाद से आप को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, संपत्ति आदि सभी अधिकार आम जन की तरह ही मिलेंगे कोई भी व्यक्ति, संस्थान और परिवार ट्रांसजेंडर होने के नाते इनका हनन नही कर सकता यदि वह ऐसा करता हैं तो उसके खिलाफ कानून के तहत कार्यवाही होगी जिसमे दो साल तक सजा का भी प्रावधान है। यह विचार आज एडवोकेट अमित मिश्रा ने सरस्वती एजुकेशनल सोसाइटी और सतवा के संयुक्त तत्वावधान में ट्रांसजेंडर और समलैंगिक समुदाय के लिए आयोजित कार्यशाला में व्यक्त किये। इस मौके में रमेश नेगी और प्रदीप कुमार ने पॉजिटिव लोगो के अधिकारों और वह किस प्रकार अपने जीवन को आगे बढ़ाए इस पर प्रकाश डाला। कार्यशाल में सतवा से रचना ठाकुर और शबाब आलम ने क्विज के माध्यम से भी उपस्थित समुदाय को एच आई वी /एड्स विषय पर जागरूक किया।

महत्वपूर्ण सूचना

सर्वसंबंधित को सूचित किया जाता है कि रेलवे द्वारा दिनांक 01.02.2024 से रेलगाड़ी सं. 12915/12916 अहमदाबाद–दिल्ली जं. –अहमदाबाद आश्रम एक्सप्रेस के आवागमन हेतु अहमदाबाद के स्थान पर साबरमती स्टेशन से संचालित करने का निर्णय लिया गया है। ठहराव की समय–सारणी निम्नानुसार होगा:–

गाड़ी सं. 12915 अहमदाबाद–दिल्ली आश्रम एक्सप्रेस				स्टेशन	गाड़ी सं. 12916 दिल्ली–अहमदाबाद आश्रम एक्सप्रेस			
वर्तमान		संशोधित			संशोधित		वर्तमान	
आगमन	प्रस्थान	आगमन	प्रस्थान		आगमन	प्रस्थान	आगमन	प्रस्थान
–	19:25	–	–	अहमदाबाद	--	--	06:20	–
19:38	19:40	–	19:40	साबरमती	05:55	--	05:30	05:32

साबरमती स्टेशन के बाद समय–सारणी में कोई परिवर्तित नहीं।

उपरोक्त रेलगाड़ियों के मार्ग में आने वाले ठहरावों की समय–सारणी के लिए कृपया रेलमदद हेल्पलाइन नं. 139 डायल करें अथवा रेलगाड़ी पूछताछ वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in देखें।

रेलमदद हेल्पलाइन नं. 139

रेलमदद वेबसाइट देखें : www.railmadad.indianrailways.gov.in

रेलमदद ऐप डाउनलोड करें

पर हमें फॉलो करें

उत्तर रेलवे

आपकी सुविधा - हमारा ध्येय

हमें www.nr.indianrailways.gov.in पर मिलें

आज़ादी का अमृत महोत्सव

4000/23

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

कनॉट प्लेस की गोपाल दास बिल्डिंग में लगी भीषण आग, दमकल की 16 गाड़ियों ने पाया काबू

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

राजधानी दिल्ली के बाराखंबा रोड स्थित गोपाल दास बिल्डिंग में गुरुवार को भीषण आग लग गई। सूचना पाकर मौके पर आग बुझाने के लिए दमकल विभाग की कई गाड़ियां पहुंची। साथ ही स्थानीय पुलिस भी मौके पर पहुंची। इस घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया था। आग 11वीं मंजिल पर लगी थी, और देखते ही देखते इमारत के बाहर धुएं का गुबार छा गया। फिलहाल, फायर कर्मियों ने आग पर काबू पा लिया है। कूलिंग का काम जारी है।

फायर डायरेक्टर अतुल गर्ग ने बताया कि गुरुवार को करीब 12:56 बजे पर आग लगने की कॉल मिली थी। मौके पर पहुंची 16 फायर की गाड़ियां ने मिलकर आग पर काबू पाया। आग बिल्डिंग के 11वें फ्लोर पर लगी थी। हादसे के तुरंत बाद ही इमारत में मौजूद लोगों को बाहर निकाल लिया गया था। इस घटना में अभी तक किसी के हताहत या घायल होने की सूचना नहीं है। दिल्ली अग्निशमन विभाग के अधिकारियों ने क्षेत्र की घेराबंदी कर दी है। लोगों को इमारत से दूर रहने को कहा है। अभी यह पता नहीं चल पाया है कि यह आग कैसे लगी है। इस बिल्डिंग में कई ऑफिसेस हैं। जानकारी के अनुसार, बिल्डिंग में आग लगने के बाद फायर अलार्म तुरंत ही बज गया, जिसके बाद तुरंत ही लोग बाहर आने लगे थे। बता दें कि ब्रांटो स्काई लिफ्ट, स्नैक लेडर सहित और दूसरी हाई राइज बिल्डिंग में आग बुझाने वाली गाड़ियों का इस्तेमाल किया गया। बिल्डिंग से धुआं का गुब्बार आसमान छू रहा था। वहीं, चीफ फायर ऑफिसर वीरेंद्र सिंह ने बताया कि डिविजनल ऑफीसर राजेंद्र अटवाल, अउ्ड रविंद्र, भूपेंद्र, रळड परवीन, रविंद्र सहित लगभग 70 से ज्यादा फायर कर्मियों की टीम ने मौके पर कड़ी मशक्कत के बाद पर काबू पाया।

धन शोधन मामला : अभिनेत्री जैकलीन की याचिका पर ईडी से जवाब तलब

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडीज की उस याचिका पर जवाब मांगा है, जिसमें उन्होंने कथित ठग सुकेश चंद्रशेखर से जुड़े 200 करोड़ रुपये के धन शोधन मामले में अपने खिलाफ दर्ज प्राथमिकी को रद्द करने का आग्रह किया है। न्यायमूर्ति ज्योति सिंह ने अभिनेत्री की याचिका पर ईडी को नोटिस जारी किया है। साथ ही मामले को 29 जनवरी, 2024 को अगली सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया। याचिका में इस मामले में ईडी द्वारा दायर दूसरे पूरक आरोप पत्र और यहां एक निचली अदालत के समक्ष लंबित संबंधित कार्यवाही को रद्द करने का भी अनुरोध किया गया है। फर्नांडीज, चंद्रशेखर के खिलाफ दर्ज धन शोधन मामले में आरोपी हैं। ईडी के वकील ने विचारणीयता के आधार पर याचिका का विरोध करते हुए कहा कि एक विशेष अदालत ने अभियोजन की शिकायत (चार्जशीट) पर संज्ञान लिया है। विशेष अदालत ने यह विचार किया है कि प्रथम दृष्टया मामला बनता है और आगे बढ़ना चाहिए तथा संज्ञान आदेश को कोई चुनौती नहीं है। ईडी के वकील ने दलील दी, जब विशेष न्यायाधीश द्वारा लिए गए संज्ञान के आदेश को कोई चुनौती नहीं है, तो अभियोजन की शिकायत को चुनौती देना स्वीकार्य नहीं है। अभिनेत्री ने इन आरोपों का खंडन नहीं किया है कि उन्हें चंद्रशेखर से 7.12 करोड़ रुपये के उपहार मिले और 1.12 करोड़ रुपये के उपहार श्रीलंका में उनकी बहन को पहुंचाए गए। उन्होंने तर्क दिया कि अपराध की आय प्राप्त करने और उसे अपने पास रखने के आरोप हैं और ये मनी लॉन्ड्रिंग कार्यवाही को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त हैं। जैकलीन के वकील ने कहा कि याचिका में प्रार्थना मामले में शुरू की गई आपराधिक कार्यवाही में पारित हर आदेश को कवर करती है और अभियोजन शिकायत के संज्ञान के आदेश का जैकलीन फर्नांडीज से कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा कि मामले में उन्हें आरोपी बनाए जाने से काफी पहले संज्ञान का आदेश पारित किया गया था। फर्नांडीज ने अपनी याचिका में कहा, प्रारंभ में यह प्रस्तुत किया गया है कि प्रवर्तन निदेशालय द्वारा दायर सबूत साबित करेंगे कि याचिकाकर्ता (फर्नांडीज) सुकेश चंद्रशेखर के दुर्भावनापूर्ण लक्षित हमले का एक निर्दोष शिकार है।

फतेहपुर बेरी में क्लब ओनर की पिटाई, एम्स ट्रॉमा सेंटर में चल रहा इलाज

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के फतेहपुर बेरी थाना इलाके में आपराधियों ने एक क्लब ओनर की पिटाई कर दी। गुरुवार सुबह आरोपियों ने सुंदर को बीच सड़क पर लोहे की रोड से पीट-पीटकर अधमरा कर दिया और कई राउंड हवा में गोलियां चलाते हुए फरार हो गए। घटना की सूचना मिलने पर फतेहपुर बेरी थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर घायल को अस्पताल में भर्ती करवाया है। इसके साथ ही पीड़ित के बयान पर एफआईआर दर्ज कर लिया है। इस वारदात में क्लब के ओनर को गंभीर चोट लगी है। घटना डेरा मंडी इलाके के फार्म नंबर 21 के सामने हुई है। घायल के भाई राहुल ने बताया कि उसका भाई सुंदर गुरुग्राम में क्लब चलाता है। आज सुबह वह सफेद रंग की क्रेटा कार में गुरुग्राम क्लब से अपने घर डेरा गांव आ रहा था। उसने मुझे फोन पर बताया कि दो एचआर-51 नंबर की कारें उसका पीछा कर रही हैं। कार में सवार लोगों ने ग्वाल पहाड़ी चौकी, गुरुग्राम के पास उस पर गोलियां चलाईं और वे उसका पीछा कर रहे। जब सुंदर फतेहपुर बेरी पहुंचा तो उन्होंने उसे रोका और उसकी सफेद रंग की क्रेटा कार पर फायरिंग की और लोहे की रॉड से उस पर हमला कर दिया।पुलिस को सड़क पर तीन खाली कारतूस मिले और सड़क किनारे क्षतिग्रस्त क्रेटा कार भी मिली है। घायल को उसके परिजनों और पुलिस ने एम्स ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया है। क्राइम टीम मौके पर पहुंचकर छानबीन कर रही है।

आरटीआई कानून के दुरुपयोग पर हाईकोर्ट ने चिंता जताई

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने सूचना के अधिकार (आरटीआई) के दुरुपयोग पर चिंता जताई है। जस्टिस सुब्रमण्यम प्रसाद ने एक मामले में फैसला सुनाते हुए कहा कि आरटीआई के दुरुपयोग से सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों में भय का माहौल बना रहता है। दरअसल, हाईकोर्ट एक मामले की सुनवाई कर रहा था, जिसमें केंद्रीय सूचना आयोग के आदेश को चुनौती दी थी। याचिका शिशिर चंद ने दायर किया था। शशिर चंद के भाई की इलाज के दौरान जमशेदपुर के टाटा मेमोरियल अस्पताल में मौत हो गई थी। उन्होंने अपने भाई की मौत के पीछे इलाज करने वाले डॉक्टर अतुल छाबड़ा की लापरवाही को बताया था। इसे लेकर याचिकाकर्ता ने आरटीआई दाखिल किया था। केंद्रीय सूचना आयोग ने अपने रजिस्ट्री को निर्देश दिया था कि वो भविष्य में याचिकाकर्ता के किसी भी आवेदन को स्वीकार नहीं करें। हाईकोर्ट ने कहा कि आरटीआई कानून का दुरुपयोग करते हुए याचिकाकर्ता ने एक ही सूचना हासिल करने के लिए कुल 15 आवेदन दाखिल किए थे।

इंडिया-अफ्रीका फ्रेंडशिप रोज गार्डन, चाणक्यपुरी में ऑल इंडिया विंटर रोज शो का आयोजन करेगी

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी), इंडिया रोज सोसाइटी के सहयोग से इस सप्ताहांत (23 और 24 दिसंबर, 2023) नई दिल्ली के चाण्क्यपुरी में भारत-अफ्रीका फ्रेंडशिप रोज गार्डन में विंटर रोज शो का आयोजन करेगी। दिल्ली के स्थानीय और बाहरी दोनों तरह के बड़ी संख्या में संस्थान और व्यक्ति अपने सर्वोत्तम फूल के पौधों में अपनी गतिविधियाँ शुरू करते हैं। पौधों की विवेकपूर्ण ढंग से छंटाई की जाती है, इसके बाद इनको नियंत्रित आहार दिया जाता है और विभिन्न बीमारियों के खिलाफ निवारक/उपचारात्मक छिड़काव भी किया जाता है। दिसंबर में फूलों की क्यारियाँ सबसे अच्छा खिलना शुरू कर देती हैं। यह शो गुलाब प्रेमी लोगों के लिए एक अद्भुत दृश्य होगा क्योंकि यह फूलदानों के साथ-साथ गमलों में गुलाब के फूलों की बड़ी किस्मों को एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हुए देखने का मौका है। गुलाब के बगीचे के बारे में अधिक जानने और गुलाब की क्यारियों में शानदार फूलों के दृश्य का आनंद लेने से व्यक्ति भी ऊजार्वान और तनाव से राहत महसूस करेंगे। यह गुलाब प्रेमियों के लिए एक अनौपचारिक मिलन समारोह का एक अनूठा अवसर होगा, जहां वे रंग और सुगंध की दावत का आनंद लेते हुए गुलाब उगाने में अपने अनुभव साझा करेंगे। इस गुलाब शो में, चाहे एक प्रतिभागी के रूप में या दर्शकों के एक हिस्से के रूप में, हर किसी को बढ़ते कार्यस्थल और पारिवारिक तनाव के खिलाफ आराम और खुशी की भावना का अनुभव होगा। गुलाब प्रकृति की सबसे खूबसूरत कृतियों में से एक है। आकार, आकृति, रंग, सुगंध और पत्ते की अनगिनत किस्में इसे फूलों की तरह दुनिया में सर्वोच्च स्थान पाने के लिए एक आकर्षक विशिष्टता प्रदान करती हैं। इस गुलाब फूल को प्रेम, तुलना और शाश्वत सौंदर्य के प्रतीक के रूप में महिमामंडित किया गया है। एनडीएमसी ने लोगों से 23 दिसंबर को दोपहर 12 बजे से शाम 5 बजे तक और 24 दिसंबर 2023 को सुबह 10 बजे तक शो देखने और शाम 4:30 बजे पुरस्कार वितरण समारोह में आने के लिए आने का आग्रह किया है।

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ई–नीलामी सूचना

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक/पीएस, उत्तर रेलवे, दिल्ली मंडल, नई दिल्ली निम्नलिखित रेलवे स्टेशनों/स्थानों पर मल्टी परपज स्टॉल (MPS) एवं जनरल माइनर यूनिट्स (GMUs) छोटी खानपान यूनिट्स के अनुबंधों के आवंटन के लिए आईआरईपीएस (https://ireps.gov.in/) के माध्यम से ई–नीलामी आमंत्रित करता है:

मल्टी परपज स्टॉल (MPS) के लिए ई–ऑक्शन विवरण:

ई–कैटलॉग नं.	विज्ञापन का प्रकार	रेलवे स्टेशन एवं श्रेणी	लॉट संख्या/श्रेणी	ई–नीलामी के लिए दिनांक और समय
MPS-01-2023	बहुउद्देशीय स्टॉल (एम.पी.एस.)	आनंद विहार टर्मिनल (ANVT) A1	MPS-DLI-ANVT-MPS-1-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-2-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-3-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-4-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-5-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-6-23-1	प्रारंभ होने का समय: 08.01.2024 को 11:00 बजे
MPS-02-2023	बहुउद्देशीय स्टॉल (एम.पी.एस.)	आनंद विहार टर्मिनल (ANVT) A1	MPS-DLI-ANVT-MPS-7-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-8-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-9-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-10-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-12-23-1 MPS-DLI-ANVT-MPS-25-23-1	प्रारंभ होने का समय: 09.01.2024 को 11:00 बजे
MPS-03-2023	बहुउद्देशीय स्टॉल (एम.पी.एस.)	हज़रत निज़ामुद्दीन (NZM) A1, गुड़गाँव (GGN) A, दिल्ली सराय रोहिल्ला (DEE) A, पानीपत (PNP) A	MPS-DLI-NZM-MPS-13-23-1 MPS-DLI-NZM-MPS-14-23-1 MPS-DLI-GGN-MPS-15-23-1 MPS-DLI-DEE-MPS-16-23-1 MPS-DLI-PNP-MPS-18-23-1 MPS-DLI-PNP-MPS-26-23-1	प्रारंभ होने का समय: 10.01.2024 को 11:00 बजे
MPS-04-2023	बहुउद्देशीय स्टॉल (एम.पी.एस.)	शकूरबस्ती (SSB) B, कुरुक्षेत्र (KKDE) B, देवबंद (DBD) B, दिल्ली सदर बाजार (DSB) D, दिल्ली सफदरजंग (DSJ) D, सकौती टांडा (SKF) D	MPS-DLI-SSB-MPS-19-23-1 MPS-DLI-KKDE-MPS-28-23-1 MPS-DLI-DBD-MPS-21-23-1 MPS-DLI-DSB-MPS-22-23-1 MPS-DLI-DSJ-MPS-23-23-1 MPS-DLI-SKF-MPS-24-23-1	प्रारंभ होने का समय: 11.01.2024 को 11:00 बजे

जनरल माइनर केटरिंग यूनिट्स (GMUs) के लिए ई–ऑक्शन विवरण:

ई–कैटलॉग नं.	विज्ञापन का प्रकार	रेलवे स्टेशन एवं श्रेणीवार आरक्षण	ई–नीलामी के लिए दिनांक और समय
CATG-24-2023	जनरल माइनर यूनिट (जी.एम.यू.)	गढ़ी हरसरू (GHH-1-GMU-W), ताजनगर (TNJR-1-GMU-W), बुडलाडा (BLZ-1-GMU-W), गोतरा हाल्ट (GTRA-1-GMU-PH), बेहटा हाजीपुर (BHHZ-1-GMU-W), परतापुर (PRTP-1-GMU-W), राठधाना (RDDE-1-GMU)	प्रारंभ होने का समय: 04.01.2024 को 15:00 बजे
CATG-25-2023	जनरल माइनर यूनिट (जी.एम.यू.)	मोहिउद्दीनपुर (MUZ-1-GMU-W), कांधला (KQL-1-GMU), खरावर (KRZ-1-GMU-FF), मौर (MAUR-1-GMU), सांपला (SPZ-1-GMU), सांपला (SPZ-2-GMU), असावटी (AST-1-GMU)	प्रारंभ होने का समय: 05.01.2024 को 15:00 बजे
CATG-26-2023	जनरल माइनर यूनिट (जी.एम.यू.)	पटेल नगर (PTNR-1-GMU), शिवाजी ब्रिज (CSB-1-GMU), नया गाजियाबाद (GZN-1-GMU-W), शाहाबाद मारकंडा (SHDM-1-GMU), खेकड़ा (KEX-1-GMU-W), टोहाना (TUN-1-GMU)	प्रारंभ होने का समय: 08.01.2024 को 15:00 बजे
CATG-27-2023	जनरल माइनर यूनिट (जी.एम.यू.)	होलंबी कलां (HUK-1-GMU-FF), मंडावली चंदर विहार (MWC-1-GMU-FF), सुजरा हाल्ट (SUJR-1-GMU-FF), उचाना (UCA-1-GMU-FF), विवेक विहार (VVB-1-GMU-FF), मंगोलपुरी (MGLP-1-GMU-FF)	प्रारंभ होने का समय: 09.01.2024 को 15:00 बजे
CATG-28-2023	जनरल माइनर यूनिट (जी.एम.यू.)	सुन्हेरा (SFA-1-GMU-FF), खेकड़ा (KEX-1-GMU-W), अहेरा हाल्ट (AHQ-1-GMU-W), असावटी (AST-1-GMU-W), जुलाना (JNA-1-GMU-W), घरौंदा (GRA-1-GMU-W)	प्रारंभ होने का समय: 10.01.2024 को 15:00 बजे
CATG-29-2023	जनरल माइनर यूनिट (जी.एम.यू.)	फकरपुर हाल्ट (FAP-1-GMU-W), खलीलपुर (KIP-1-GMU-W), बेहटा हाजीपुर हाल्ट (BHHZ-1-GMU-W), गढ़ी हरसरू (GHH-1-GMU-W), बरेटा (BRZ-1-GMU-W), असौदाह (ASE-1-GMU-W	प्रारंभ होने का समय: 11.01.2024 को 15:00 बजे

वेबसाइट विवरण जहां ई–नीलामी का पूरा विवरण देखा जा सकता है। https://ireps.gov.in/ (E-Auction-Leasing)

आईआरईपीएस के ई–नीलामी लीजिंग मॉड्यूल के माध्यम से आयोजित ई–नीलामी में भाग लेने के इच्छुक सभी ठेकेदारों को अपनी बोलियां जमा करने से पहले निम्नलिखित अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए: • ई–नीलामी लीजिंग मॉड्यूल के लिए आईआरईपीएस पर पंजीकरण – ई–नीलामी लीजिंग मॉड्यूल के लिए सक्रिय आईआरईपीएस उपयोगकर्ता खाता। • एकमुश्त पंजीकरण शुल्क का भुगतान; भारतीय स्टेट बैंक में चालू खाता; • IREPS खाते के साथ SBI बैंक के खाते का एकीकरण; निधियों का ग्रहणाधिकार अंकन; टर्नओवर विवरण का अद्यतनीकरण। • ई–नीलामी लीजिंग मॉड्यूल के लिए अब वर्चुअल अकाउंट नंबर (VAN) नाम से एक नया तंत्र शुरू किया गया है, जिसका उपयोग बोलीदाताओं द्वारा लियन मार्किंग तंत्र के विकल्प के रूप में किया जा सकता है। • बोलीदाता किसी भी समय लियन मार्किंग मैकेनिज्म (यदि सक्रिय है) और VAN तंत्र के बीच स्विच करने के लिए स्वतंत्र हैं। VAN तंत्र के लिए बोली लगाने वाले के पास भारतीय स्टेट बैंक में चालू खाता होना आवश्यक नहीं है। उपयोगकर्ता किसी भी बैंक में अपने किसी भी मौजूदा बैंक खाते से अपने VAN खाते में धन स्थानांतरित करने के लिए स्वतंत्र हैं, जो उन्हें IREPS ई–नीलामी में भाग लेने में सक्षम बनाता है। • जिन ठेकेदारों के पास IREPS के किसी भी मॉड्यूल के लिए IREPS खाता नहीं है, वे IREPS होम पेज पर नए विक्रेताओं/ठेकेदारों (ई–निविदा/ई–नीलामी पट्टे) लिंक पर क्लिक करके पंजीकरण के लिए अपना ऑनलाइन अनुरोध प्रस्तुत कर सकते हैं।

किसी भी प्रश्न के मामले में संपर्क करने के लिए रेलवे प्राधिकरण: मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, वाणिज्य शाखा, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली–110055 E-Mail: catering.delhidivision@gmail.com Tel.:011-23743084

No. 23AC/CTG/MPS E-AUCTION Dated: 19.12.2023 3975/2023

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

दिल्ली में लोग अब अपनी सहूलियत के अनुसार किसी भी सब-रजिस्ट्रार ऑफिस में करवा सकेंगे प्रॉपर्टी का रजिस्ट्रेशन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

केजरीवाल सरकार ने दिल्ली के लोगों को सुविधा देते हुए एक बड़ा फैसला लिया है। दिल्ली में अब लोग अपनी सहूलियत के अनुसार किसी भी सब-रजिस्ट्रार ऑफिस में प्रॉपर्टी का रजिस्ट्रेशन करवा सकेंगे। सरकार इसके लिए एनी वेयर रजिस्ट्रेशन की पॉलिसी लेकर आई है। इसके तहत लोगों को रजिस्ट्री के लिए किसी निश्चित सब-रजिस्ट्रार ऑफिस में जाने की बाध्यता की खत्म हो जाएगी और लोग अपनी सुविधानुसार दिल्ली के 22 सब-रजिस्ट्रार ऑफिस में से किसी में भी ऑनलाइन अपॉइंटमेंट ले सकेंगे।

इस बाबत प्रेस-कॉन्फ्रेंस के माध्यम से साझा करते हुए राजस्व मंत्री आतिशी ने कहा कि, दिल्ली में प्रॉपर्टी की खरीद-फरोख़्त के लिए लोगों को सब-रजिस्ट्रार ऑफिस में जाना होता है। वहाँ प्रॉपर्टी की खरीद बीच हो या किसी अन्य तरीको से प्रॉपर्टी को रजिस्टर्ड करवाना हो तो सब-रजिस्ट्रार ऑफिस में जाना होता है।

उन्होंने कहा कि, अक्सर सब-रजिस्ट्रार ऑफिस को लेकर कई प्रकार की शिकायते सामने आती है। कई शिकायतें मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी के पास आई। एक शिकायत ये आई कि, कई सब-रजिस्ट्रार ऑफिस ऐसे है जहां लंबी ल

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण

राजधानी किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, शुक्रवार, 22 दिसंबर, 2023

केजरीवाल जी को आया ये समन ईडी नहीं बल्कि भाजपा का समन, ये गैरकानूनी और राजनीति से प्रेरित:आतिशी

- 2 साल से तथाकथित शराब घोटाले में सैकड़ों अफसरों को लगाने के बाद भी भाजपा की ईडी-सीबीआई एक पैसे के घोटाले का सबूत भी देश के सामने पेश नहीं कर पाई-आतिशी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा की ईडी द्वारा तथाकथित शराब घोटाले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को भेजे समन का वरिष्ठ आप नेता व दिल्ली कैबिनेट मंत्री आतिशी ने जबाव देते हुए प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से कहा कि, अरविंद केजरीवाल जी को आया ये समन ईडी नहीं बल्कि भाजपा का समन है। ये पूरी तरह गैरकानूनी और राजनीति से प्रेरित है। भाजपा को अरविंद केजरीवाल जी से, उनकी बढ़ती लोकप्रियता से डर लगता है। ये समन उसी डर का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि, भाजपा, आप के गवर्नेंस मॉडल मुकाबला नहीं कर पा रही है, अपने गवर्नेंस मॉडल के कारण आप पूरे देश में फैल रही है इसलिए हमें रोकने के लिए भाजपा षड्यंत्र कर रही है। आम आदमी पार्टी के देशभर में बढ़ते ग्राफ को देखकर भाजपा खौफ खाई हुई है। इसलिए हमारे नेताओं को झूठे केसों में गिरफ़्तार कर रही है जबकि पिछले 2 साल में सैकड़ों अफसरों को लगाने के बावजूद ईडी-सीबीआई को इस तथाकथित शराब घोटाले में एक पैसे का भी सबूत नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि, भाजपा जान ले, हम ईडी-सीबीआई की धमकियों से डरने वाले नहीं है, चाहे दिल्ली हो या पंजाब हम वहाँ के लोगों के लिए काम करते रहेंगे। आप नेता आतिशी ने कहा कि, भाजपा की दोनों एजेंसियाँ सीबीआई और ईडी जो इस तथाकथित शराब घोटाले पर पिछले 2 सालों से जाँच कर रही है। इस जाँच पर सीबीआई ने, ईडी ने सैकड़ों अफसरों को लगा दिया। पिछले 2 साल से ज्यादा समय से 500 से ज्यादा अफसर इस तथाकथित शराब घोटाले की जाँच कर रहे है। उन्होंने कहा कि, शायद 1947 के बाद से अबतक भारतीय इतिहास में किसी एक पॉलिसी की इतनी जाँच नहीं हुई होगी जितनी इस तथाकथित घोटाले की हो रही है। 2 साल से अधिक समय से चल रही इस जाँच के बाद, सैकड़ों अफसरों को लगाने के बाद अभी तक चाहे ईडी हो या सीबीआई हो एक रुपये के घोटाले का भी सबूत देश के सामने, न्यायालय के सामने नहीं रख पाई है। उन्होंने सैकड़ों जगह छापे मार लिए लेकिन अभी तक ईडी-सीबीआई को एक रुपया तक नहीं मिला है। लेकिन इसके बावजूद एक के बाद एक आम आदमी पार्टी के नेताओं को गिरफ़्तार किया जा रहा है, जेल में डाला जा रहा है और अब दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को भी समन किया जा रहा है।

आतिशी में कहा कि, बिना किसी सबूत के, बिना पैसा बरामद हुए इन गिरफ़्तारियों को, समन को कैसे समझे? ये गिरफ़्तारिया, समन पिछले 8 सालों में दिल्ली में जनहित में हुए कामों का परिणाम है, पिछले 1 साल में पंजाब में बिजली-पानी, शिक्षा-स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुए कामों का परिणाम है। उन्होंने कहा कि, भाजपा ने देश के कई राज्यों में दशकों से सरकार चलाई है लेकिन कही भी 24 घंटे बिजली और मुफ़्त बिजली नहीं दे पाई, कही भी सरकारी स्कूलों के प्राइवेट से बेहतर शिक्षा नहीं दे पाई, भाजपा किसी भी राज्य में, देश के सामने मोहल्ला क्लीनिक जैसा मॉडल जहां हर व्यक्ति को फ्री दवाइयाँ, फ्री टेस्ट, फ्री इलाज मिलता है, नहीं रख पाई।

क्योंकि भाजपा, आम आदमी पार्टी के गवर्नेंस का मुकाबला नहीं कर पा रही है, क्योंकि भाजपा को लगता है कि अपने गवर्नेंस मॉडल से आम आदमी पार्टी पूरे देश में फैल रही है इसलिए आप की इस लोकप्रियता को रोकने के लिए, हमारे बढ़ते चुनावी ग्रोथ को रोकने के लिए भाजपा आम आदमी पार्टी के नेताओं को गिरफ़्तार कर रही है। चाहे वो सतेंद्र जैन हो, मनीष सिसोदिया हो या संजय सिंह हो।

आतिशी ने कहा कि, जैसे ही भाजपा के नेताओं ने टीवी पर कहना शुरू किया कि अब अरविंद केजरीवाल जी को जेल भेजेंगे उसके तुरंत बाद ईडी ने उन्हें समन भेज दिया। ये जग-जाहिर है कि जो समन अरविंद केजरीवाल जी को आया है वो ईडी नहीं, भाजपा का समन है। ये भाजपा के डर का प्रतीक है।

लेकिन मैं भाजपा को शासित केंद्र सरकार को ये बताना चाहती हूँ कि, हम आपकी ईडी-सीबीआई की धमकियों से डरने वाले नहीं है। चाहे दिल्ली हो, पंजाब हो हम लोगों के लिए काम करते रहेंगे। और देशभर में आम आदमी पार्टी की लोकप्रियता बढ़ती रहेगी। अगर आप इस तरह से झूठे आरोप लगाकर नेताओं को जेल में डालोगे तो इसका जबाव आपको देश की जनता देगी।

प्रदेश कांग्रेस ने शुरू किया क्राउडफंडिंग डोनेट फॉर देश कार्यक्रम

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने गुरुवार को कांग्रेस द्वारा शुरू किए गए क्राउडफंडिंग डोनेट फॉर देश अभियान की जोरदार तरीके से शुरूआत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष अरविन्दर सिंह लवली ने की। इस मौके पर पार्टी के कोषाध्यक्ष पूर्व केन्द्रीय मंत्री अजय माकन ने 1,38,0000 रुपए डोनेट करके इस अभियान की शुरूआत दिल्ली में की। श्री लवली ने सभी नेताओं व कार्यकताओं की मौजूदगी में श्री माकन को प्रमाण पत्र भी सौंपा।

इस मौके पर अरविन्दर सिंह लवली ने भारी संख्या में मौजूद कांग्रेस के कार्यकताओं व नेताओं को संबोधित करते हुए कहा कि डोनेट फॉर देश कार्यक्रम एक ऐसा ऐतिहासिक कार्यक्रम है जिसका मकसद केवल धन संग्रह नहीं है, बल्कि इसका असली मकसद बूथ स्तर पर कांग्रेस से सहानूभूति रखने वाले व कांग्रेस कार्यकताओं से सीधे तौर पर जुड़ने का माध्यम है। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस पार्टी ने हमेशा आम जनता के सहयोग से ही पार्टी के लिए चंदा इकट्ठा किया है चाहे वो किसी भी रुप में हो। उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी इस कार्यक्रम को ऑनलाईन इसी नियत से चला रही है कि किसी पर दवाब न बने और इसमें सब कुछ पारदर्शी होगा।

श्री लवली व श्री माकन ने घोषणा की कि 28 दिसम्बर से पार्टी घर-घर जाकर इस कार्यक्रम की शुरूआत करेगी। क्योंकि 28 दिसम्बर कांग्रेस पार्टी का स्थापना दिवस है। श्री लवली ने कहा कि दिल्ली के सभी कांग्रेस कार्यकर्ता दिल्ली के सभी 13760 पोलिंग बूथों पर इस कार्यक्रम को घर-घर जाकर धरातल पर उतारेंगे, जिससे दिल्ली में संगठन को मजबूत करने में और मदद मिलेगी। उन्होंने स्वयं भी 1,38,000 रुपये का योगदान इस मौके पर दिया। प्रदेश कार्यालय में इस मौके पर भारी जमावडे.से गदगद अजय माकन ने इस मौके पर कहा कि दिल्ली हमेशा से ही न केवल पार्टी के हर कार्यक्रम अग्रणी रही है बल्कि दिल्ली ने हमेशा नये आयाम स्थापित किए है। उन्होंने याद दिलाया कि जब-जब दिल्ली में कांग्रेस का कार्यकर्ता खड़ा हुआ है उसने देश की राजनीतिक दिशा बदली है। श्री माकन ने कहा कि मुझे आशा है कि दिल्ली डोनेट फॉर देश कार्यक्रम में पहले 3 राज्यों में अपना स्थान बनाऐगी। उन्होंने यह भी कहा कि रुपये 138/- 1380/- व 13, 800/- की राशि केवल इसलिए निर्धारित की गई है ताकि सामान्य से सामान्य व्यक्ति इस महायज्ञ में अपनी आहूति दे सके। श्री माकन ने दिल्ली के सभी नेताओं व कार्यकताओं के शानदार स्वागत व सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री लवली के नेतृत्व में दिल्ली कांग्रेस बहुत बेहतर काम कर रही है। इस मौके पर कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य सर्वश्री मनीष चतरथ, देवेन्द्र यादव, अल्का लांबा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री कृष्णा तीरथ पूर्व सांसद रमेश कुमार, डा. उदित राज और परवेज हाश्मी, व पूर्व मंत्री सर्वश्री हारुन यूसूफ, मंगत राम सिंघल, रमाकांत गोस्वामी, राजकुमार चौहान वरिष्ठ नेता व पूर्व विधायक मुकेश शर्मा, भीष्म शर्मा, हसन अहमद, हरी शंकर गुप्ता, अनिल भारद्वाज, नीरज बसौया, विजय लोचव, वीर सिंह धींगान, कुंवर करण सिंह, शीश पाल, सुरेन्द्र कुमार, जसवंत राणा, निगम में सदन के पूर्व नेता जितेन्द्र कुमार कोचर, पूर्व युवा कांग्रेस अध्यक्ष अमित मलिक, पूर्व मेयर सतबीर सिंह, जय किशन शर्मा, निगम पार्षद नाजिया दानिश, हाजी जरीफ, समीर अहमद, जिला अध्यक्ष जावेद मिर्जा, विरेन्द्र कसाना, आदेश भारद्वाज, मदन खोरवाल, सतबीर शर्मा, धर्मपाल चंदेला, दिनेश कुमार, मनोज यादव, राजेश चौहान, चतर सिंह, ब्रहम यादव, अनुज आत्रेय, अब्दुल वहीद तरुण कुमार सहित बड़ी संख्या में ब्लाक अध्यक्ष व कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद थे।

कांग्रेस ने दिल्ली में वापसी के लिए कमर कस ली है : लक्ष्मण रावत

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली दिन-रात दिल्ली में कांग्रेस पार्टी को जमीनी स्तर पर मजबूत करने में लगे हुए हैं। श्री लवली के आने के बाद उन्होंने दिल्ली इकाइयों के पदों में बदलाव किया है, और ऐसे लोगों को जिम्मेदारी दी जा रही है जो आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव और दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी के लिए सक्रिय रूप से काम कर सकते है। दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष ने हाल ही में दिल्ली के 14 जिलों में पर्यवेक्षकों की घोषणा की है जो अपने-अपने जिलों में ब्लॉक अध्यक्षों, ज़िला कमेटी के साथ 2024 के चुनाव को लेकर चर्चा करेंगे और भविष्य की रणनीति तैयार करेंगे। बाबरपुर ज़िला में लक्ष्मण रावत को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है। इस संबंध में आज बाबरपुर जिला कांग्रेस कमेटी की एक अहम बैठक जाफराबाद में हुई, जिसकी अध्यक्षता बाबरपुर ज़िला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चौधरी जुबैर अहमद ने की। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के डेलीगेट सैयद नासिर जावेद ने स्टेज का संचालन किया। बैठक में पर्यवेक्षक लक्ष्मण रावत ने जिले के सभी ब्लॉक अध्यक्षों, निगम पार्षदों, पूर्व विधायकों, जिले के पदाधिकारियों और कार्यकताओं के साथ परिचयात्मक भेंट की और जिले में चल रही गतिविधियों की समीक्षा की। इस अवसर पर पूर्वी दिल्ली लोकसभा के पर्यवेक्षक जयकरण चौधरी, पूर्व विधायक भीष्म शर्मा, ब्लाक अध्यक्ष संजय गौड़, देव आनंद, मुकेश पांचाल, ब्रह्म ढेकिया, वरिष्ठ कांग्रेस नेता अशोक शर्मा, कालू राम कश्यप बिट्टू पंडित, सहित बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौजूद थे। इस अवसर पर लक्ष्मण रावत ने ब्लॉक अध्यक्षों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 4 ब्लॉक अध्यक्ष होते हैं और उनकी जिम्मेदारी है कि उन्हें कोई भी काम दिया जाए तो उसे पूरी जिम्मेदारी के साथ करें और अधिक से अधिक लोगों को कांग्रेस से जोड़ने का काम करें। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने दिल्ली में वापसी के लिए कमर कस ली है, अब आपका कर्तव्य है कि आप अपनी जिम्मेदारी पर खरा उतरें। पूर्व विधायक कांग्रेस के वरिष्ठ नेता चौधरी मतीन अहमद ने कहा कि दिल्ली की सत्ता संभाल रही सरकार ने जनता से झूठ बोलकर सत्ता हासिल की है और अब उनके चेहरे से नकाब उतर गया है। उन्होंने कहा कि बाबरपुर जिला में कांग्रेस का हर कार्यकर्ता पूरी तरह से सक्रिय है और इसका परिणाम एमसीडी चुनाव में देखने को मिला है। आने वाले 2024 के लोकसभा चुनाव में भी अच्छे परिणाम देखने को मिलेंगे। बाबरपुर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चौधरी जुबैर अहमद ने अपने संबोधन में कहा कि हमारा जिला कांग्रेस पार्टी का सबसे मजबूत जिला है, चाहे कार्यक्रम में भाग लेने की बात हो, या विरोध प्रदर्शन में शामिल होने का अवसर या कांग्रेस की सदस्यता की बात हो, ज़िला पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता हमेशा तैयार रहते हैं। उन्होंने कहा कि बाबरपुर जिला में कांग्रेस को जमीनी स्तर पर मजबूत किया जा रहा है और सक्रिय लोगों को पार्टी में शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है।

पूर्व राष्ट्रपति कोविंद ने जैन आचार्य लोकेश को जे पी अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड से किया सम्मानित

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने विश्व शान्ति केंद्र एवं अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक प्रख्यात जैनाचार्य लोकेश को जे.पी. अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। आचार्य लोकेश को यह पुरस्कार अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अहिंसा, शान्ति, सद्भावना एवं भारतीय संस्कृति अवधारणा आधारित वासुदेव कुटुंबकम के सन्देश को विश्वव्यापी फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया। उन्हें यह पुरूस्कार लोकनायक जयप्रकाश अंतर्राष्ट्रीय अध्यन्न विकास केंद्र के तहत जे पी स्मृति आयोजन द्वारा आज सायं अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित समारोह में प्रदान किया गया। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि जय प्रकाश नारायण उनके भी आदर्श रहे हैं। उन्होंने व्यक्तिगत हितों को दरकिनार कर समाज के सृजन में अहम भूमिका निभाई। उनकी सम्पूर्ण क्रांति के आह्वान में नौजवानों का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने आज के पुरूस्कार विजेता अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जैन आचार्य लोकेश के विश्वव्यापी मानवतावादी कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि इससे पुरूस्कार स्वयं सम्मानित होता है तथा औरों को श्रेष्ट कार्य करने कि प्रेरणा मिलती है।

विश्व शान्ति केंद्र एवं अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक जैनाचार्य लोकेश ने कहा कि विश्व शांति व सद्भावना के लिए आवश्यक है सभी धर्म, वर्ग और सम्प्रदाय के लिए एक साथ सौहार्द भाव से काम करें। उन्होंने कहा कि विकास व शांति का गहरा सम्बन्ध है। सभी धर्म और सम्प्रदाय विकास का रास्ता प्रशस्त करते हैं, मानवता की शिक्षा देते हैं। आज जे पी इंटरनेशनल अवार्ड से सम्मानित होना अपने आप में गर्व की बात है और अब लोकनायक जयप्रकाश के नाम का जुड़ाव उनकी जिम्मेदारियां को और भी बढ़ा देता है।

लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वि के सिंह ने कहा कि लोकनायक जयप्रकाश का व्यक्तित्व और सोच बेमिसाल थी और उनकी स्मृति में दिए गए इस अवार्ड से देश के लिए कुछ कर गुजरने का जोश कई गुना बढ़ गया है। समारोह के अध्यक्ष आर.के सिन्हा ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को सम्मानित करते हुए पुरूस्कार विजेताओं को शुभकामनायें दी। विशिष्ट अतिथि डॉ. किरीट प्रेमजी भाई सोलंकी, डॉ. राजा मानवेन्द्र सिंह, स्वामी चक्रपाणी महाराज, रोहित कुमार सिंह, जनार्दन सिंह सिग्रीवाल, डॉ. संदीप मारवाह एवं रश्मि वर्मा ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण के जीवन के प्रसंगों को सुनते हुए उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

पूर्व सांसद संतोष भारतीय ने विषय प्रवर्तन किया, अभय सिन्हा ने स्वागत भाषण दिया, कार्यक्रम के शुभारम्भ एवं समापन राष्ट्रीय गान से हुआ। सुप्रसिद्ध बांसुरीवादक मुजतबा हुसैन ने प्रस्तुति दी। कप्तान गोपाल सिंह गुंजन ने सभी अतिथियों का आभार ज्ञापन किया। कार्तिकेय शर्मा, डॉ. शूलपाणि सिंह, ज्ञानेंद्र रावत, डॉ. धर्मवीर वसिष्ठ, अजय कुमार, अशोक श्रीवास्तव, कमल बेरीवाला आदि कार्यकताओं ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

लोगो को गुमराह कर रही है केंद्र सरकार : डॉ.नरेंद्र नाथ

नई दिल्ली। दिल्ली में अनाधिकृत कॉलोनियों को तोड़फोड़ से बचाने के लिये बीजेपी की केंद्र सरकार ने 2026 तक राहत की अवधि बढ़ाई क्योंकि तोड़फोड़ से राहत देने की अवधि 31 दिसम्बर 2023 को समाप्त हो रही थी। यह कहना है दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री डॉ.नरेंद्र नाथ का। डॉ.नरेंद्र नाथ कहते हैं बीजेपी सरकार ने कोई नया काम नही किया इससे पहले केंद्र में बैठी कांग्रेस सरकार ने 2011 में इसी तरह का बिल दोनों सदनों से पास कराया था जिसकी वजह से इनको अब तक तोड़फोड़ से राहत मिलती रही। डॉ.नरेंद्र कहते हैं स्व. प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सबसे पहले दिल्ली में करीब 672 अनधिकृत कॉलोनियों को पास किया था और सारी सुविधाएं दी थी। शीला दीक्षित सरकार ने सदन में करीब 1300 अनधिकृत कॉलोनियों को पास करने का प्रस्ताव रखा कि इन अनाधिकृत कॉलोनियों को भी उसी तर्ज पर पास किया जाए जिस प्रकार इंदिरा गांधी ने की थी और यह प्रस्ताव केंद्र में बैठी तत्कालीन कांग्रेस सरकार को भेज दिया और उसके बाद जमीनी और एरियल सर्वे भी कराया उसमें करीब 1300 अनाधिकृत कॉलोनियों को नियमित करने के लिये शीला दीक्षित सरकार ने प्रोविजनल सर्टिफिकेट दिया और उसके बाद कॉलोनियों के नक्शे बनाने के लिये नगर निगम को भेजा। नगर निगम में बीजेपी सरकार थी उन्होंने नक्शे बनाकर नहीं दिए। आज तक ये कॉलोनियां अगर सीलिंग तोड़ फोड़ से बची है तो इसका सारा श्रेय केंद्र में बैठी तत्कालीन कांग्रेस सरकार और शीला दीक्षित सरकार को जाता है। शीला दीक्षित सरकार ने अपने समय में इन कॉलोनियों में विकास के कार्य किये जैसे सड़कें, बिजली पानी, सीवर नाले आदी। केंद्र में बैठी बीजेपी सरकार इन कॉलोनियों के निवासियों को गुमराह ना करें इनके बाकी बचे काम पूरे कराएं।

गोगी गैंग के नाम 50 लाख रुपये की रंगदारी मांगने वाला गिरफ्तार

नई दिल्ली । वजीराबाद इलाके के रहने वाले व्यवसायी गौरव त्यागी से 50 लाख रुपये रंगदारी मांगने के मामले में उत्तरी जिला के स्पेशल स्टाफ ने नरेंद्र यादव को गिरफ्तार कर लिया है। 30 नवंबर को दो बदमाशों ने गौरव त्यागी के आवास के बाहर डराने के लिए गोलियां चला दी थी। आरोपी ने गोगी गिरोह के नाम पर कारोबारी को वसूली के लिए धमकी भरे संदेश भेजा थे। उसने इस काम के लिए दो नाबालिगों को काम पर रखा था। जिसे पुलिस पहले ही हिरासत में ले चूकी है।

उत्तरी जिले के डीसीपी मनोज कुमार मीणा ने बताया कि 30 नवंबर को गौरव त्यागी ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी कि रात करीब 12 बजे बाइक सवार दो बदमाशों ने उनके आवास के बाहर गोलियां चलाकर 50 लाख की रंगदारी मांगने से संबंधित पर्चा छोड़ा था। इस मामले में वजीराबाद पुलिस थाने में एफआईआर दर्ज कर लिया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए एफआईआर दर्ज कर पड़ताल शुरू की गई। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर क्राइम ब्रांच ने दो नाबालिग आरोपियों को हिरासत में लिया। जिन्होंने गौरव त्यागी के घर पर फायरिंग की थी। दोनों की निशानदेही पर नरेंद्र यादव को गिरफ्तार कर लिया गया। जानकारी के अनुसार गौरव त्यागी को 8 दिसंबर को भी वाट्स एप नंबर से गोगी, दीपक बाक्सर, सनी काकरान व अनुज जाट के नाम से 50 लाख रंगदारी देने का मैसेज मिला था। इस मामले में पूछताछ के दौरान नरेंद्र ने बताया कि वह दुबई में भारतीय कामगारों को नौकरी दिलाने का काम करता है।

मेयर भाजपा पार्षदों के साथ कर रही है लगातार सौतेला व्यवहार : राजा इकबाल सिंह

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व महापौर राजा इकबाल सिंह ने कल रोहिणी क्षेत्र के पार्षदों की बैठक में भाजपा के पार्षदों को न बुलाए जाने की कड़ी आलोचना की। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि पूर्व में भी मेयर ने किसी भी क्षेत्रीय बैठक में भाजपा के पार्षदों को नहीं बुलाया है। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि मैं मेयर साहिबा से पूछना चाहता हूं कि क्या वो भाजपा पार्षदों के वार्ड की जनता को दिल्ली का नागरिक नहीं मानती हैं। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि मेयर का पद एक संवैधानिक पद है तथा इसकी एक गरिमा होती है किंतु अपने पक्षपात पूर्ण व्यवहार से मेयर इस पद की गरिमा को धूमिल कर रही हैं एवं आप पार्टी के कार्यकर्ता की तरह व्यवहार कर रही हैं।

राजा इकबाल सिंह ने बताया कि मेयर द्वारा रोहिणी क्षेत्र के विभिन्न कार्यों के संबंध में बैठक बुलायी गई थी जिसके अंदर भाजपा के पार्षदों को छोड़कर सभी लोग उपस्थित थे। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि मैं मेयर साहिबा से पूछना चाहता हूं कि किसके कहने पर वे भाजपा पार्षदों एवं उनके वार्ड की जनता के साथ सौतेला व्यवहार कर रही हैं। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि शायद मेयर साहिबा को लगता है कि भाजपा पार्षदों के वार्ड में कोई भी समस्या नहीं है। उन्होंने बताया कि यह देखने में आया है कि मेयर द्वारा बुलाए जाने वाली बैठकों में भाजपा पार्षदों को नहीं बुलाया जाता है जो कि संविधानिक रूप से गलत है। उन्होंने बताया कि मेयर भाजपा पार्षदों को बैठकों में न बुलाकर उनके संबंधित वार्डों के विकास कार्यों में अड़चन डाल रही है।

राजा इकबाल सिंह ने बताया कि दिल्ली नगर निगम का मेयर किसी पार्टी विशेष का मेयर नहीं होता है वो पूरी दिल्ली का मेयर होता है। उन्होंने बताया कि मेयर बैठकों में भाजपा पार्षदों को न बुलाकर पक्षपात कर रही हैं। श्री सिंह ने कहा कि पूर्व में भी बैठकों में भाजपा पार्षदों को न बुलाए जाने पर हमने मेयर को ज्ञापन दिया था किंतु बार बार निवेदन करने पर भी उनके कान पर जूं नहीं रेंग रही है। राजा इकबाल सिंह ने कहा कि अगर मेयर साहिबा ने बैठकों में भाजपा पार्षदों को नहीं आमंत्रित किया तो हम इसके विरुद्ध बड़ा प्रदर्शन करेंगे एवं इस पक्षपात के विरुद्ध दिल्ली की जनता तक अपनी बात पहुंचाएंगे।

सीवर शिकायतों के मद्देनजर जल मंत्री आतिशी ने चंद्रावल गाँव, मॉडल टाउन में किया निरीक्षण

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

- सीवर की बदहाल स्थिति देख जलमंत्री ने लगाई अधिकारियों को फटकार, लापरवाही बरतने वाले अधिकारी को जारी किया कारण बताओ नोटिस

सीवर शिकायतों के मद्देनजर निरीक्षण की श्रृंखला को जारी रखते हुए जल मंत्री आतिशी ने मॉडल टॉउन विधानसभा क्षेत्र में चंद्रावल गाँव के विभिन्न हिस्सों में जाकर निरीक्षण किया। सीवर की बदहाल हालत देख जलमंत्री ने अधिकारियों को फटकार लगाई और लापरवाही के लिए ज़िम्मेदार अधिकारी को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

बता दें कि, यहाँ लोगों से लगातार सीवर की शिकायतें मिल रही थी उसके बावजूद अधिकारियों द्वारा उसके समाधान को लेकर कोई कदम नहीं उठाया जा रहा था। ऐसे में जल मंत्री ने स्वयं ग्राउंड जीरो पर उतरकर समस्या का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान लोगों ने जल मंत्री से साझा करते हुए कहा कि सफाई न होने से सीवर ओवरफ़्लो रहता है और उसके कारण गलियों में पानी सीवर का पानी भर जाता है। ऐसे में लोगों की आवाजाही भी मुश्किल हो जाती है। साथ ही लोगों ने बताया कि अपनी समस्या जब वो अधिकारियों को बताते है तो अधिकारी उसे नजरअंदाज करते है। बार बात शिकायतों के बावजूद सीवर समस्या को दूर करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया जाता और अधिकारी समस्या सुनने के लिए तैयार नहीं है। जनता की शिकायतों पर तुरंत संज्ञान लेते हुए जलमंत्री ने अधिकारियों को फटकार लगाई। उन्होंने कहा कि केजरीवाल सरकार ने लापरवाही की कोई जगह नहीं है। अधिकारियों को हमेशा जनता के प्रति जबाबदेह होना चाहिए अगर कोई भी अधिकारी इसमें लापरवाही दिखाते है तो अपने खिलाफ कड़े एक्शन के लिये तैयार रहे। साथ ही इलाके में सीवर की बदहाल स्थिति के लिए ज़िम्मेदारी अधिकारी को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिकारियों को क्षेत्र में सीवर की सभी समस्याओं को जल्द से जल्द दूर करने के निर्देश दिये।

निरीक्षण के दौरान जल मंत्री ने पाया कि कई गलियों में सीवर का बह रहा है, इससे लोगों को काफी परेशानियों हो रही है और गालियाँ भी क्षतिग्रस्त हो रही है। गली में सीवर के बहते पानी को देखकर जल मंत्री ने अधिकारियों को फटकार लगाते हुए कहा कि केजरीवाल सरकार में ऐसी लापरवाही के लिए कोई जगह नहीं है।

इस बाबत उन्होंने अधिकारियों की कड़े शब्दों में निर्देश देते हुए कहा कि, सप्ताह भर के भीतर इलाके की सीवर लाइनों को साफ करवाया जाए और इसकी रिपोर्ट उन्हें सौंपी जाए। साथ ही सीवर समस्या के स्थायी समाधान के लिए प्लान तैयार किया जाए और जहां जरूरी हो वहाँ सीवर लाइनों को बदला जाए।

जल मंत्री ने कहा कि, जल बोर्ड का काम लोगों को साफ पानी और बेहतर सीवर व्यवस्था मुहैया करवाना है। और अगर अधिकारी जनता के प्रति अपनी ये ज़िम्मेदारी नहीं निभा पा रहे है तो नौकरी छोड़ दे। केजरीवाल सरकार में जनता के प्रति ये लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जल मंत्री आतिशी ने लोगों से वादा करते हुए कहा कि, चाहे कितनी भी बाधाएँ आ जाए लेकिन जबतक अरविंद केजरीवाल जी दिल्ली के मुख्यमंत्री है वो दिल्ली की जनता के काम रुकने नहीं देंगे।

केजरीवाल को ईडी नहीं, भाजपा भेज रही समन : राघव चड्ढा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी ने तथाकथित शराब घोटाले को फर्जी करार देते हुए ईडी के समन को लेकर भाजपा पर तीखा हमला बोला। आप के वरिष्ठ नेता राघव चड्ढा ने कहा कि सीएम अरविंद केजरीवाल को समन ईडी नहीं भेज रही है, बल्कि भाजपा भेज रही है। समन आने से पहले ही भाजपा मीडिया को बता देती है कि ईडी का समन आने वाला है और समन आने पर प्रेस कांफ्रेंस करती है। भाजपा ही समन बनाती है और ईडी से भिजवाती है। सच्चाई ये है कि ये पूरा मामला ही फर्जी है। न तो शराब नीति में कोई गड़बड़ी है और ना ही ईडी के पास कोई सबूत है। आम आदमी पार्टी को खत्म करने के लिए यह साजिश रची गई है। उन्होंने कहा कि जानबूझ कर ऐसे समय में समन भेजा गया है, क्योंकि सबको पता है कि सीएम अरविंद केजरीवाल 10 दिनों के लिए विपश्यना में जाने वाले हैं। दरअसल इनकी नियत जांच करने की नहीं है, बल्कि आम आदमी पार्टी को फंसाने की है।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पंजाब से राज्यसभा सदस्य राघव चड्ढा ने मीडिया को बयान जारी कर कहा कि यह पूरा केस ही फर्जी है. कोई भी सबूत न एजेंसियों के पास है और न ही इस मामले में कोई गड़बड़ी है। यह पूरा षडयंत्र आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल को फंसाने के लिए रचा गया है।

संसद राघव चड्ढा ने कहा कि सीएम अरविंद केजरीवाल ने पिछले समन में ईडी से सवाल पूछे थे कि आप मुझे क्यों बुला रहे हो, बतौर गवाह बुला रहे हैं या फिर आरोपी की तरह बुला रहे हैं। इसके साथ ही यह भी बताएं कि मुझे किस मामले में बुलाया जा रहा है, लेकिन उन सवालों का कोई जवाब नहीं आता है, बल्कि उल्टा एक और समन भेज दिया जाता है।

सांसद राघव चड्ढा ने कहा कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पिछले 25 साल से लगातार हर वर्ष विपश्यना के लिए जाते हैं। ऐसे में जब सबको पता था कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने एक हफ्ते पहले ही 10 दिनों के लिए विपश्यना के लिए जाने का कर्यक्रम बना लिया है। इसलिए इसका एक ही मतलब है कि एजेंसियों द्वारा जान-बुझकर ऐसे समय में समन भेजा गया। क्योंकि इनकी नियत जांच करने की नहीं है, बल्कि सीएम अरविंद केजरीवाल को फंसाने की है और आम आदमी पार्टी को खत्म करने का है।

सांसद राघव चड्ढा ने इसके पीछे की वजह बताते हुए कहा कि भाजपा अगर किसी से डरती है तो वो आम आदमी पार्टी से डरती है। क्योंकि इतनी छोटी सी आम आदमी पार्टी 10 साल के अंदर ही इतनी बड़ी हो गई? पार्टी के 11 सांसद हैं, दो राज्यों में सरकारें चल रही हैं, गुजरात में बीजेपी के गढ़ में भी सेंध लगा दी है। पूरे देश में आम आदमी पार्टी बढ़ती ही जा रही है। इसलिए बीजेपी डरती है। इसीलिए आम आदमी पार्टी को फंसाने के लिए ये समन भेजे जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि बीजेपी के नेता समन भेजे जाने से पहले ही मीडिया में इसकी घोषणा कर देते हैं और समन वाली तारीख पर ये लोग प्रेस कांफ्रेंस कर कहते हैं कि आज अरविंद केजरीवाल नह

संक्षिप्त खबरें

दो आरोपी को पुलिस ने न्यायिक हिरासत में भेजा

मधुबनी अलग-अलग गांवों से दो आरोपी को खजौली पुलिस ने बुधवार की रात पकड़ लिया। पकराये दोनों आरोपी को गुरूवार के दिन न्यायिक हिरासत में भेज दिया. जिसमें थानाक्षेत्र के दतुआर गांव निवासी रमण ठाकुर उर्फ रमण शर्मा तथा इनरवा गांव निवासी नितिश कुमार सहनी उर्फ सरोज सहनी शामिल है. थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने बताया कि इन दोनों पर पूर्व के गिरफ्तारी का वारंट निर्गत था. दोनों पुलिस गिरफ्त से फरार चल रहा था. उन्होने कहा कि दतुआर के आरोपी रमण ठाकुर को प्रशिक्षु दरोगा जीतेश कुमार मिश्र एवं इनरवा के आरोपी नीतीश कुमार सहनी को एसआई कविता माटे सहित अन्य पुलिस बल ने गिरफ्तार कर किया है

आंगनबाड़ी केंद्र पर हुआ सामाजिक अंकेक्षण

बोचहा।आंगनबाड़ी केन्द्रों बुधवार को सामाजिक अंकेक्षण कराया गया। इस दौरान पटियासा पंचायत के केंद्र संख्या 62 पर सीडीपीओ अनिता जायसवाल ने सामाजिक अंकेक्षण में आंगनबाड़ी में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों से केन्द्र से उन्हें लाभ मिल रहा है या नहीं। इसकी जानकारी ली और आंगनबाड़ी सेविका ने अंकेक्षण में उपस्थित लोगों को लोगों को केन्द्र पर मिलने वाली योजनाओं की जानकारी दी। सोशल आडिट में आंगनबाड़ी केन्द्र का संचालन, बच्चों की उपस्थिति, लाभार्थियों का पूरक पोषाहार, टीएचआर की आपूर्ति, बच्चों का टीकाकरण एवं पोषण की स्थिति, कुपोषित एवं अति कुपोषित बच्चे, स्कूल पूर्व शिक्षा की क्रियाशिलता, आधारभूत सुविधाएं खाना बनाने का बर्तन की उपलब्धता आदि की समीक्षा की गई। केंद्र के माध्यम से चलने वाली योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री मातृ योजना, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना, टेक होम राशन, अन्नप्राशन का लाभ लाभुकों को उनके घर पर जाकर देना है। इसमें गोद भराई की रस्म भी शामिल है। सीडीपीओ ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता में महिला व बच्चे शामिल हैं। अगर मां स्वस्थ नहीं होगी तो उससे उत्पन्न संतान पर भी असर पड़ेगा। इसके अलावा बच्चों का मानसिक व शारीरिक विकास भी प्रमुख है। मामूली अनदेखी से बच्चे का भविष्य दांव पर लग सकता है। इसके लिए जरुरी है कि जच्चा-बच्चा की योजनाओं को बेहतर तरीके से क्रियान्वित किया जाये।

बिहार को विशेष राज्य की दर्जा, आदि मांगों को ले भाकपा का प्रदर्शन

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा । बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने, विगत दिन लोकसभा एवं राज्यसभा में विपक्षी सांसदों को किए गए निलंबन वापस लेने एवं देश में ईवीएम के बदले वैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग को लेकर भाकपा कार्यकताओं ने अनुमंडल कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन किया। मौके पर भाकपा कार्यकताओं ने केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे भाकपा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य प्रमोद प्रभाकर ने कहा कि बिहार से झारखंड अलग होने के बाद बिहार लगभग उद्योग विहीन हो चुका है, बाढ़ और सुखार से पूरे बिहार तवाह और परेशान है। उन्होंने कहा कि हाल में बिहार सरकार द्वारा कराए गए जातीय एवं आर्थिक गणना से अत्यंत ही भयावह स्थिति सामने आई है। बिहार में 34.13 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे हैं, 94 लाख परिवार को प्रतिदिन मात्र 2 सौ रुपये की आय में जीवन बसर करना पड़ता है, जबकि 39 लाख परिवार को आजादी के 76 बर्ष बाद भी झोपड़ी में ही रहना पड़ रहा है।भाकपा नेता प्रभाकर ने कहा कि इन भयावह स्थितियों से निजात दिलाने के लिए बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दे केंद्र सरकार, नहीं तो गंभीर परिणाम होगा। उन्होंने विगत दिन लोकसभा और राज्यसभा में बड़ी संख्या में विपक्षी सांसदों को निलंबन करने की कार्रवाई को संसदीय मयार्दा एवं मापदंड के विरुद्ध बताया। भाकपा नेता ने देश के अंदर लोकतंत्र को बचाने के लिए ईवीएम के बदले वैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग की। भाकपा के जिला मंत्री विद्याधर मुखिया ने कहा कि केंद्र सरकार बिहार के साथ सौतेलेपन की व्यवहार कर रही है। बिहार को विशेष राज्य के दर्जा के मामले में वे अपने वायदे से मुकर रही है। उन्होंने कहा कि विशेष राज्य के लिए बिहार सभी मापदंड पूरा कर रहा है। विद्याधर मुखिया ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार विपक्षी सांसदों को निलंबित कर लोकतंत्र पर प्रहार किया है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। पार्टी के सहायक जिला मंत्री मुकुंद प्रसाद यादव, वरिया नेता अनिल भारती, शंभू क्रांति, कुंदन यादव, दिलीप पटेल, कृष्णा मुखर्जी ने कहा कि बिहार के साथ नाइंसाफी बर्दाश्त नहीं करेंगे। प्रदर्शन में उमाशंकर मुन्ना, सौरभ कुमार, नागेश्वर यादव, अमरेंद्र कुमार, प्रिंस कुमार, आशीर्वाद कुमार, भूपेंद्र शर्मा, उमाकांत पासवान, हरीबल्लभ सादा आदि शामिल थे। उक्त मांगों के संबंध एक मांग पत्र भाकपा के द्वारा राष्ट्रपति को प्रेषित किया गया है।

हथियार के साथ 3 अभियुक्त पकड़े गए

प्रात: किरण, संवाददाता

मुजफ्फरपुर । साहेबगंज पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान हुस्सेपुर स्थित गंडक बाँध पर किसी बड़ी अपराधिक घटना को अंजाम देने से पूर्व ही त्वरित कार्रवाई करते हुए 2 मोटसाइकिल सवार अपराधकर्मी को गिरफ्तार कर लिया1. इनके पास से एक देशी कट्टा एवं 3जिंदा कारतूस ,एक मास्टर चाभी एवं चोरी की दो मोटरसाइकिल बरामद किया गया है। गिरफ्तार अभियुक्तों के नाम निरंजन कुमार पिता - दिलीप सहनी ग्राम माधोपुर धरफरी थाना - देवरिया, सुभाष कुमार - पिता बुन्नीलाल राम, एवं अमन कुमार पिता शत्रुधन राम दोनों ग्राम कमलपुरा मठिया थाना-पारू के निवासी बताया जा रहा है। इस संदर्भ में साहेबगंज थाना कांड सं0-559 / 23 दर्ज अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।पुलिस का कहना है कि इन गिरफ्तार अपराधकर्मियों द्वारा बीते 17दिसम्बर को बैद्यनाथपुर करनौल स्थित गोदाम पर फायरिंग की घटना एवं दिनांक 15 नवंबर को जैतपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत फाइनेंस कर्मी से हथियार का भय दिखाकर करीब 11हजार- रुपए और मोबाईल की लूट की गई थी। इनकी गिरफ्तारी से पूर्व में हुए दो कांडो का सफल उद्भेदन हुआ है।

खेल प्रतियोगिता के दौरान छात्रों के बीच हुई मारपीट

कई छात्र-छात्राएं हुए घायल, छात्रा के साथ छेड़खानी को लेकर हुआ विवाद

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा । बीपी मंडल इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर में देर रात छात्रों के बीच दो गुटों में जमकर मारपीट हुई। इस दौरान कई छात्र-छात्राएं गंभीर रूप से घायल हो गए। मामले को लेकर सिंहेश्वर थाना में मामला दर्ज किया गया है। मामले की अनुसंधान में पुलिस जुट गई है। दरअसल मधेपुरा के बी पी मंडल इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर में प्रमंडलीय स्तर पर चल रहे अभ्युदय 2023 खेल प्रतियोगिता के दौरान छात्रों के बीच दो गुटों में जमकर मारपीट हुई इस दौरान कई छात्र-छात्राऐं गंभीर रूप से घायल हो गए हैं, बताया जा रहा है कि खेल के दौरान मधेपुरा टीम के कुछ छात्रों ने सहरसा टीम की छात्राओं पर फब्तियाँ कसनी शुरू कर दी, अपनी टीम की छात्राओं के साथ दुर्व्यवहार होता देखकर सहरसा के छात्रों ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो मधेपुरा के छात्रों ने उन पर हमला बोल दिया जहां मौजूद छात्र-छात्राओं को दौरा दौरा कर बुरी तरह पीटने लगे। मारपीट की इस घटना में सहरसा इंजीनियरिंग कॉलेज के ईसीई सातवें सेमेस्टर के छात्र राजू कुमार और आशीष कुमार बुरी तरह जख्मी हो गए, छात्र नंदिनी, हर्षिता, संजना आदि ने बताया कि आज शिक्षकों के बीच बैडमिंटन प्रतियोगिता चल रही थी जिसमें मधेपुरा की टीम हार गई, मैच खत्म होते ही मधेपुरा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र उनके साथ छेड़खानी एवं दुर्व्यवहार करने लगे, जिसकी विरोध करने पर उन लोगों ने मारपीट पर उतारू हो गए। वहीं सहरसा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्राओं का आरोप है कि मारपीट की घटना के दौरान वहां मधेपुरा इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रधानाचार्य एवं शिक्षक गण भी मौजूद थे। लेकिन किन्हीं ने भी उन्हें बचाने की कोशिश नहीं की सहरसा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र-छात्राओं द्वारा इस घटना को लेकर सिंघेश्वर थाना में मधेपुरा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र सौरभ सिंह और विनीत सहित अन्य के खिलाफ मामला दर्ज करवाया गया है। वहीं इस मामले को लेकर सिंघेश्वर थाना अध्यक्ष अरुण कुमार ने बताया कि इस घटना को लेकर सहरसा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र-छात्राओं द्वारा आवेदन प्राप्त हुआ है, जांच कर विधि सम्मत कार्यवाही की जाएगी।

अंकित हत्याकांड का हुआ खुलासा 5 युवकों ने मिलकर की थी हत्या, तीन गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। बीते 4 दिसम्बर को साहेबगंज थाना अंतर्गत जिराती टोला के पास स्थित चौर में संदिग्ध स्थिति में एक अज्ञात युवक का शव होने की सूचना प्राप्त हुई थी ।सूचना प्राप्त होते साहेबगंज थाना की टीम द्वारा तत्काल मौके पर पहुँच कर शव को कब्जे में लेकरजरूरी प्रक्रिया कर अन्त्य परीक्षण हेतु एसकेएमसीएच भेजा गया था।स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से मृतक की पहचान अंकित कुमार पिता लालबाबू दास ग्राम प्रतापट्टी, जिराती टोला थाना-साहेबगंज जिला-मुजफ्फरपुर के रूप में किया गया।इस संबंध में मृतक की माँ द्वारा समर्पित आवेदन के आधार पर साहेबगंज थाना कांड सं0 524 / 23 दर्ज किया गया जिसमे 5 युवकों के आरोपी बनाया गया था।कांड के सफल उद्भेदन हेतु वरीय पुलिस अधीक्षक मुजफ्फरपुर के निर्देशन में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सरैया के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा तकनीकी एवं मानवीय आसूचना संकलन के आधार पर त्वरित कार्रवाई करते हुए हत्या कांड में संलिप्त अप्राथमिकी अभियुक्त नीरज कुमार पिता मदन दास ,अमोद कुमार पिता सिकंदर राय एवं सचिन कुमार पिता तुलसी दास, तीनों ग्राम जिराती टोला थाना-साहेबगंज को गिरफ्तार किया गया। इनके पास से हत्या में प्रयुक्त चाकू एवं मृतक का मोबाईल और गमछा बरामद हुआ है।घटना में संलिप्त अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु छापामारी की जा रही है।

रिफ्रेशर ट्रेनिंग में शामिल हुए बीएनएमयू के तीन नोडल पदाधिकारी

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा । बिहार राज्य एड्स नियंत्रण समिति, पटना एवं पीपुल्स फाउंडेशन आफ इंडिया के तत्वाधान में राज्य के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में संचालित सेहत केंद्र के नोडल पदाधिकारियों का दो दिवसीय रिफ्रेशर ट्रेनिंग एवं समीक्षा बैठक गुरुवार को संपन्न हुआ। इसमें भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा की ओर से तीन नोडल पदाधिकारियों ने भाग लिया। इनमें टी. पी. कॉलेज, मधेपुरा के डॉ. सुधांशु शेखर, आर. एम. कॉलेज, सहरसा के अमितेष कुमार और बी. एस. एस. कॉलेज, सुपौल के डॉ. आनंद ने भाग लिया। प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत कार्यक्रम के दौरान नोडल पदाधिकारियों ने अपने-अपने सेहत केंद्र का प्रगति- प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तदनुसार यह बताया गया कि भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा अंतर्गत ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय में सबसे पहले एक जुलाई, 2021 से सेहत केंद्र का शुभारंभ किया गया है। तदपरांत आर. एम. कॉलेज, सहरसा के अमितेष कुमार और बी. एस. एस. कॉलेज, सुपौल में भी केंद्र की शुरूआत कि गई। कार्यक्रम में बिहार राज्य एड्स नियंत्रण समिति के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी ने निर्धारित कैलेंडर के अनुरूप कार्यक्रम आयोजित करने और उसका ससमय उपयोगिता प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने पर जोर दिया। कार्यक्रम के दौरान सभी अतिथियों को पौधा एवं आर्ट-क्राफ्ट भेंट किया गया। उत्कृष्ट कार्य करने वाले पांच नोडल पदाधिकारियों को सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर समिति के सहायक निदेशक (युवा) सह सेहत केंद्र के राज्य नोडल पदाधिकारी आलोक कुमार, पीपुल्स फाऊँडेशन ऑफ इंडिया के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी नीलांशु, जीडी वीमेंस कॉलेज, पटना आदि उपस्थित थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में कलाकारों ने बांधा समा, कलाकारों की प्रस्तुति पर पूरी रात झुमते रहे दर्शक

प्रात: किरण, संवाददाता

घैलाढ़ (मधेपुरा) प्रखंड के झिटकिया पंचायत अंतर्गत लक्ष्मीनिया गांव में तीन दिवसीय विवाह पंचमी मेले के अंतिम दिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कलाकारों की प्रस्तुति ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन घैलाढ़ प्रखंड के जिला पार्षद प्रतिनिधि डॉ. विनीत कुमार आर्यन और श्री कृष्ण टीवीएस शोरूम के मालिक व मर्चेंट नेवी के इंजीनियर नरेंद्र चंद्र नवीन ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस दौरान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉक्टर विनीत कुमार आर्यन ने कार्यक्रम देखने आए दर्शको को संबोधित किया और उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम मनोरंजन का साधन है। लक्ष्मीनिया मेला सभी जाति धर्म के लोगों का समागम स्थल है। जहां घैलाढ़ प्रखंड ही नहीं जिले से भारी संख्या में मेला देखने लोग पहुंचते हैं। यह मेला इस क्षेत्र के लोगों के लिए धरोहर मानी जाती है।उन्होंने दर्शकों से सौहार्द पूर्ण माहौल में कार्यक्रम का लुप्त उठाने की बात कही। वही मेला के मुख्य निर्देशक नरेंद्र चंद्र नवीन ने मेला और सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने आए लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने शांतिपूर्ण माहौल में कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि मेला आपसी भाईचारे व आपसी एकता का संगम स्थल है। वही सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रदीप यादव न्यू स्टार नाइट शो के कलाकारों की मनमोहक प्रस्तुति ने दर्शकों को पूरी रात बांधे रखा। भोजपुरी के सुपरस्टार लोक गायिका अदिति राज, गायक मनोज राजा, राहुल दीवाना और हिंदी सिंगर मनीष मलंकार ने अपने मधुर स्वर में दर्जनों हिन्दी व भोजपुरी गाने प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भोजपुरी के सुपरस्टार लोक गायिका अदिति राज ने अपनी प्रस्तुति से दर्शकों में जोस भर दिया। भक्ति व फिल्मी गीतों के बोछार से लोगों को झुमने पर मजबूर कर दिया। एक से बढ़कर एक गानों की प्रस्तुति ने पूरी रात समा बांधे रखा। बीच बीच में नृत्यांगनाओं के द्वारा भोजपुरी व हिन्दी गानों के प्रस्तुति पर रिकॉडिंग डांस पर दर्शकों काफी उत्साहित दिखे। कार्यक्रम देखने के लिए महिला व पुरुष का जनसैलाब उमड़ पड़ी थी। वही कॉमेडियन चिंटू चैलेंज ने अपने चुलबुले अंदाज से दर्शको का खुब मनोरंजन किया। वही माही म्यूजिकल ग्रुप कोलकाता की सभी नृत्यांगना ने एक से बढ़कर एक भोजपुरी व हिन्दी गानो पर जबरदस्त नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों का पूरी रात मनोरंजन किया। इस मौके पर मेला के व्यवस्थापक सिकंदर यादव फौजी, पूर्व वार्ड सदस्य राजेश कुमार, नारायण यादव, रविंद्र कुमार, पवन कुमार, मनोज शाह, विनोद कुमार, प्रखंड के सरपंच संघ के अध्यक्ष हीरा कामति, अंगद यादव, देव मोहन नेहरू, वार्ड सदस्य अजीत यादव एवं बड़ी संख्या में दर्शक मौजूद थे।

असहाय लोगों के बीच किया कम्बल एवं वस्त्र का वितरण

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी एसकेएमसीएच में कार्यरत ब्रदर अखलाकुर रहमान उर्फ निशु ने ठंड से कंपकपाते लोगों के बीच कंबल वितरित किया। गरीब और असहाय लोगों के बीच कंबल वितरण को लेकर वे विभिन्न चौक-चौराहे और रेलवे स्टेशन पर गए और 200 कंबल व गर्म कपड़े बांटे। उन्होंने बताया कि उनका मकसद सर्वप्रथम असहाय लोगों को ठंड से बचाने का है। इसके बाद लोगों को जागरूक करना है। प्रत्येक वर्ष अपने कई सहयोगियों के साथ असहाय एवं गरीबों के बीच ठंड के मौसम में कंबल एवं गर्म कपड़े का वितरण करते हैं। इसी कड़ी में विगत तीन दिनों से ठंड बढ़ने के साथ रात्रि में कंबल एवं गर्म कपड़े का वितरण शुरू किया। निशु के इस कार्य को लोगों ने काफी सराहा है। एसकेएमसीएच के कई नर्सिंग स्टाफ के साथ अन्नु प्रिया ने कहा कि भाग दौड़ की जिंदगी लोगों को औरों के लिए फुर्सत नहीं, वहीं निशु नौकरी करने के साथ-साथ हमेशा बड़े बुजुर्गों, गरीबों, असहायों, लाचारों और गरीब बच्चों की मदद करने के लिए आगे रहते हैं।वास्तव में यह कार्य प्रशंसनीय तो है ही, साथ ही हम सबके लिए प्रेरणादायी भी है। हम सब जहां भी हैं, जिस भी स्थिति में हैं, गरीब मानवता की सेवा के लिए थोड़ा वक्त जरूर निकालना चाहिए। गरीबों की मदद के लिए आगे आना चाहिए ।

जिला स्थापना दिवस पर क्विज प्रतियोगिता 30 को

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । जिला स्थापना दिवस पर ओपन फार आल क्विज का आयोजन 30 दिसंबर को नगर भवन में होगा। स्थापना दिवस 1ली जनवरी को मनाया जाएगा। क्विज प्रतियोगिता मेंस्कूल कालेज व किसी अन्य संस्था के प्रतिभागी भाग ले सकते हैं। यह जानकारी एक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई है। तीनराउंड की प्रतियोगिता में विजेता को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार दिया जाएगा। प्रथम पुरस्कार 10 रुपये का है। जिला जनसंपर्क कार्यालय में प्रतिभागी निबंधन करा सकते है। हालांकि आन स्पाट भी निबंधन कराया जा सकता है। डीपीआरओ दिनेश कुमार ने बताया कि पहला राउंड पीटी का होगा। इसमें टाप 12 प्रतिभागियों के बीच सेमीफाइनल कराया जाएगा। इसमें जीतनेवाली छह टीमें फाइनल में प्रवेश करेंगी। कार्यक्रम के आयोजन के लिए तीन अधिकारियों की टीम बनी है। इसमें जिला उपनिर्वाचन पदाधिकारी सत्यप्रिय कुमार, अवर निबंधन पदाधिकारी मनीष कुमार व डीपीआरओ दिनेश कुमार शामिल है।

देश में सशक्त शासन व्यवस्था सिस्टम पर अंगुली उठाने वाले को बख्शा नही जाएगा : भाजपा

प्रात: किरण, संवाददाता

मधुबनी में कल्याण बनर्जी का पुतला फूका गया राहुल गांधी भी रहे निशाने पर । आपको बतादे की विपक्षी नेता त्रिमूल कांग्रेस नेता के सांसद कल्याण बनर्जी के द्वारा देश के उपराष्ट्रपति की मिमिक्री किए जाने और राहुल गांधी के द्वारा वीडियो बनाए जाने को लेकर बी जे पी सहित एन डी ए गठबंधन के नेताओं में जबरदस्त गुस्सा और उबाल है । इसको लेकर थाना चौक पर आज इखढ के सैकड़ो कार्यकर्ता और नेताऑन ने कल्याण बनर्जी का पुतला फूका और राहुल गांधी को भी आरे हाथों लेते हुए जमकर आलोचना की वहीं सासाराम के विधायक सह बिहार प्रदेश भाजपा के महामंत्री शिवेश राम ने कहा कि इस देश में भारतीय जनता पार्टी एनडीए की सरकार है सरकार मजबूती से चल रही है इस देश की शासन को सशक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी । हमारे सिस्टम पर कोई भी उंगली उठाएगा तो वैसे व्यक्ति को बर्दाश्त नहीं करेंगे वैसे व्यक्ति से शक्ति से निपटेंगे । हमारा देश का शासन ,प्रशासन सही से चल सके । देश के गरीब , गुरवा ,शोषित ,वंचित के लिए प्रधानमंत्री आगे रहते हैं और हमेशा आगे रहेंगे। पुतला दहन कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष शंकर झा ,हरी नारायण यादव ,जिला आईटी सेल के अध्यक्ष राजीव झा ,कुंदन सिंह ,उपाध्यक्ष संजय पांडे,प्रमोद सिंह ,किरण कुमारी झा ,देवेंद्र यादव ,राधा देवी ,कन्हैया कुमार साह ,संतोष कुमार ,सचिन कुमार ,शंकर प्रसाद ,अमित कुमार ठाकुर राम चंद्र यादव इतादी समय सैकड़ो नेता कार्यकर्ता मौजूद थें ।

पुर्व सैनिक सेवा परिषद को मिली सफलता अब पूर्व सैनिक को मिलेगा मूलभूत सुविधा

प्रात: किरण, संवाददाता

कोसी-सीमांचल का तीनों जिला सुपौल सहरसा एवं मधेपुरा सहित अन्य जिला के पूर्व सैनिक सेवानिवृत्ति पश्चात मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं से आजादी से अब तक वंचित रहे हैं। पुर्व सैनिक सेवा परिषद के बैनर तले कोसी सीमांचल के पूर्व सैनिक एकत्रित होकर लगातार कई वरिष्ठ पदाधिकारीगणों (केंद्र/राज्य) से अनेक बार मिलकर अपनी बातों को रखा । इस निरंतर प्रयास के फलस्वरूप पहली बार एक छोटी सी सफलता मिली। आजादी के बाद पहली बार स्टेशन हेड क्वार्टर पूर्व सैनिक विभाग, कटिहार से आज चार लोगों का दल कोसी प्रमंडल के सभी जिला के पूर्व सैनिकों, वीर नारीयों, शहीद की वीरांगनाएं एवं उनके परिवार से मिलने के लिऐ सहरसा की धरती पर पधारे । मीटिंग स्थल, राधा देवी विवाह भवन मत्स्यगंधा, सहरसा में आज उन्होंने सबों की समस्याओं को सुना एवम आश्वस्त किया कि वे लोग यहां के पुर्व सैनिकों की समस्याओं को ऊपर के अधिकारियों तक पहुंचाएंगे। उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण सुविधाओं से सम्बंधित बातें बताई जैसे कि पुनः रोजगार, मेडिकल एवं अन्य सभी मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी दी, इसके अलावे कन्या विवाह मदद विकलांग बच्चे एवं अविवाहिता/ विधवा पुत्री को मिलने वाली सुविधाएं, बच्चों को ट्यूशन फीस, स्कॉलरशिप, अंतिम संस्कार अनुदान, आर्मी ग्रुप इंश्यारेंस, कैंटीन, पॉलीक्लिनिक एवं जिला सैनिक कल्याण कार्यालय सहित सभी मुद्दे पर जानकारी दी। जिससे बहुत ही पुर्व सैनिकों को बहुत ही लाभ होगा। ज्ञात हो कि यह सुविधा जिला ही नहीं प्रमंडल स्तर पर भी कोसी सीमांचल में नागण्य है ! इसका प्रमुख कारण इस क्षेत्र का बंगाल क्षेत्र के अंदर प्रशासनिक तौर पर जुड़ा रहना है। आज भी हम सेंट्रल कमांड बिहार में रहकर भी बंगाल क्षेत्र से जुड़े हुए हैं जो सेना के पूर्वी कमान के अंदर आता है ! इसी को सारी समस्याओं का जड़ माना जाता है कोसी सीमांचल के पूर्व सैनिकों की मांग है की कोसी सीमांचल के क्षेत्र को बिहार के साथ जोड़कर इसे मध्य कमान के अंदर लाया जाए।

इस अवसर पर मेजर अमित प्रियदर्शी ने एउल्र एवम बैंक से सम्बंधित पूर्व सैनिकों की जिज्ञासाओं को संबोधित किया। वहीं प्रवीण झा, अध्यक्ष, पुर्व सैनिक सेवा परिषद, सहरसा ने बताया कि आज हम सब जो इस मुकाम पर पहुंचे हैं वह हम सबों के एकता का ही परिणाम है, अतः सबों को हर समय एकजुट होकर रहना ही पड़ेगा। आज के कार्यक्रम में ढ3 ग्रुप के दो डायरेक्टर महोदय भी पटना से पधारे , यह ग्रुप के अभियन्ताओं के द्वारा संचालित किया जाता है, जो अध्यापन, स्वास्थ्य और अकार्बनिक खेती पर आधारित है। इनके एक डायरेक्टर श्री प्रतीक ने जहां पुर्व सैनिकों के 10 बच्चों को मुफ्त शिक्षा का ऐलान किया वहीं दूसरे डायरेक्टर ने पुर्व सैनिकों के बीपी और शुगर का मुफ्त जांच कर उन्हें एहतियात के सम्बन्ध में बताया।

सशस्त्र सीमा बल के अधिकारी ने 60वीं स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

प्रात: किरण, संवाददाता

मधुबनी सशस्त्र सीमा बल48वीं वाहिनी जयनगर के प्रांगण में चन्द्र शेखर द्वितीय कमान अधिकारी कार्यवाहक कमांडेंट 48वीं वाहिनी के निर्देशन में वाहिनी मुख्यालय तथा अधीनस्थ सीमा चौकियों में सशस्त्र सीमा बल के 60वीं स्थापना दिवस को धूमधाम से मनाया गया तथा इस दौरान सलामी गारद द्वारा ड्रील की गई एवं एस एस बी जवानों के साथ बडे खाने का आयोजन किया।सायकाल मे कार्मिकों व ए पी एफ नेपाल के साथ बॉलीबॉल, किर्केट मैचो का आयोजन किया गया है।48वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर के कार्यवाहक कमांडेंट चन्द्र शेखर के पर्यवेक्षण में सशस्त्र सीमा बल के 60वीं वर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर एस एस बी के इतिहास को बताया गया कि 1962 भारत- चीन युद्द के बाद 20 दिसंबर 1963 में विशेष सेवा ब्यूरो की नाम से रइ की स्थापना की गई । बल का प्राथमिक कार्य सीमावर्ती आबादी का भरोसा जीतकर उनमे राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाकर राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल करना। 2001 में एस एस बी को भारत-नेपाल सीमा सुरक्षा के लिए नामित किया गया है और भारत नेपाल की कुल 1751 किमी की सीमा की सुरक्षा का काम सौंपा गया है । बाद में 2004 में एस एस बी के जवानों को अतिरिक्त 699 किलोमीटर भारत - भूटान सीमा की सुरक्षा का जिम्मा भी दिया गया । 2003 में सशस्त्र सीमा बल के रूप मे एक नए पहचान हुई और सीमा रक्षक के रूप में भूमिका निभाई । इस बल के आदर्श वाक्य सेवा सुरक्षा और भाईचारा को मध्य नजर रखते हुए सशस्त्र सीमा बल विभिन्न हिस्सों में अंतरिक सुरक्षा कर्तव्यों के साथ साथ चुनाव कर्तव्यो कानून और व्यवस्था कर्तव्यों का पालन भी कर रहा है।

इस उपलक्ष में संतोष कुमार निमोरिया उप कमांडेंट ने बताया कि सशस्त्र सीमा बल का मुख्य उद्देश्य सीमावर्ती क्षेत्र में रहने वाले लोगों के मध्य सुरक्षा की भावना,सीमा पार से होने वाले अपराधों को रोकना,तस्करी व अन्य गैर-कानूनी गतिविधियों को रोकना है सीमा सुरक्षा के साथ-साथ हम सीमा क्षेत्र के गावों में समय-समय पर सिविक एक्शन प्रोग्राम का आयोजन भी करते है जिसका मुख्य उद्देश्य सीमा क्षेत्र में रहने वाले युवाओं के जीवन में विकास एवं राष्ट्र के प्रति जागरूक करना है इस वक्तव्य के समापन में चन्द्र शेखर द्वितीय कमान अधिकारी संतोष कुमार निमोरिया उप कमांडेंट महोद मनीष देवा नन्द सहायक कमांडेंट अधीनस्थ अधिकारीगण एवं बल के अन्य जवानो ने हिस्सा लिया है ।

सम्पादकीय

जनता के बीच जाइए

विपक्ष के पास एक ही रास्ता है कि वह राजनीति का तरीका बदले। सर्वसत्तावादी सरकारों पर लगाम सिर्फ जनता के बीच रहते हुए और उसे संगठित करते हुए ही लगाई जा सकती है। मगर विपक्ष इसके लिए तैयार नहीं दिखता।अब यह लगभग दस साल का अनुभव है कि वर्तमान भाजपा सरकार संसदीय जवाबदेही को नहीं मानती। ना ही संसद की प्रक्रियाओं का आदर करती है। जिस थोक भाव में सांसदों का निलंबन अब हुआ है, उससे यह बात पुष्ट हुई है कि गुजरते वक्त के साथ सत्ता पक्ष का यह रुख और कठोर होता जा रहा है। सोमवार तक कुल 92 सांसदों को निलंबित किया जा चुका था। राज्यसभा के निलंबित हुए 46 सदस्यों में से 35 को पूरे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित किया गया है। बाकी 11 सांसदों को उनके व्यवहार पर विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आने तक निलंबित किया गया है। उधर लोकसभा में निलंबित 46 सांसदों में से तीन सांसदों को विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आने तक निलंबित किया गया है। बाकी पूरे सत्र के लिए सस्पेंड किए गए हैं। आखिर इन सांसदों का दोष क्या था? वे 13 दिसंबर को संसद की सुरक्षा में हुई चूक के मसले पर गृह मंत्री से बयान की मांग कर रहे थे। क्या यह मांग इतनी बड़ी थी, जिसको लेकर इतना बड़ा विवाद खड़ा होता? मगर ऐसा हुआ है, तो उसके निष्कर्ष स्पष्ट हैं।सरकार ने बता दिया है कि वह विपक्ष और विरोध को स्वीकार नहीं करती। तो अब प्रश्न विपक्ष के सामने है कि वह क्या करेगा? लोकतंत्र की हत्या हुई, जैसे जैसे बयान अब कोई प्रभाव पैदा नहीं करते। गौरतलब है कि सांसदों के निलंबन के बाद कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने कहा कि एक बार फिर मोदी सरकार ने संसद और लोकतंत्र पर हमला किया है। उन्होंने ये अंदेशा भी जताया कि विपक्ष की गैर-हाजिरी में सरकार कुछ महत्त्वपूर्ण बिल पास करा लेगी। ये बात भी बहुत दमदार नहीं है, क्योंकि सरकार विपक्ष की मौजूदगी में भी मनमाफिक ढंग से विधेयक पास कराती रही है। ऐसे में विपक्ष के पास एक ही रास्ता है कि वह राजनीति का तरीका बदले। सर्वसत्तावादी सरकारों पर लगाम सिर्फ जनता के बीच रहते हुए और उसे संगठित करते हुए ही लगाई जा सकती है। मगर विपक्ष इसके लिए तैयार नहीं दिखता। इसलिए वह अपनी जगह खोता चला गया है।

क्या सियासत के लिए मिमिक्री भी मुद्दा है?

राकेश अचल

देश के उप राष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति की मिमक्री को लेकर आधी संसद रो रही है, किसान रो रहे हैं, खांप रो रही है बल्कि उन्हें जबरन रुलाया जा रहा है, क्योंकि ये मिमिक्री भी अब एक सियासी औजार बन गयी है। गनीमत ये है कि विपक्ष विहीन आधी सांसद ने इसे अभी भारतीय दंड संहिता के किसी अनुच्छेद में स्पष्ट रूप से अपराध घोषित नहीं किया है। भारतीय अपराध संहिता के लिए भी मन देखे जा रहे है। कौन इटली वाला है और कौन नागपुर वाला?

ताजा मिमक्री विवाद पर मुझे अब हंसने के बजाय रोने का मन हो रहा है। मेरा मन न इटली का है न पाकिस्तान का, वो शुद्ध हिन्दुस्तान का है, जहां हास्य, व्यंग्य, विनोद के लिए हर जगह स्थान है। लेकिन अदावती की सियासत के युग में अब इस आवश्यक विधा पर भी हमला किया जा रहा है, वो भी रो-रोकर, सांसद में खड़े हो-होकर। जबकि इस देश ने संसद में अपने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा की गयी हर मिमिक्री को पूरी उदारता से न सिर्फ देखा बल्कि उसका आनंद लिया। उस पर कभी टसुए नहीं बहाये, उसे कभी जातीय या पेशेगत अपमान से नहीं जोड़ा। हम लोग बचपन से देखते-सुनते आ रहे हैं कि जब भी लोग फुरसत में होते हैं तो अंताक्षरी खेलते है। कहा जाता है - शुरू करो अंताक्षरी लेकर हरि का नाम, समय बिताने के लिए करना है कुछ काम। संसद के दोनों सदनों से निलंबित किये गए सदस्य संसद के बाहर समय बिताने के लिए अंताक्षरी के बजाय मिमक्री कर रहे थे। मिमक्री अपराध नहीं बल्कि एक कला है। मिमक्री के माध्यम से सन्नाटे में, नीरसता में विनोद पैदा किया जाता है और मिमक्री के लिए उस पात्र को चुना जाता है जो अपने समय में अपने हाव-भाव और अदाओं की वजह से सबसे ज्यादा लोकप्रिय हो। मिमक्री किसी अनाम आदमी की नहीं की जाती। निलबित सांसदों की जमात ने इस बार मिमिक्री के लिए माननीय उपराष्ट्रपति को चुना। लेकिन वे इस चुनाव से खुश होने के बजाय आहत हो गये। उन्होंने धन्यवाद देने के बजाय विपक्षी सांसदों पर अपमान करने का आरोप मढ़ दिया और मजा ये कि उनके टसुए पौंछने के लिए राष्ट्रपति, र्प्धानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, से लेकर सत्तारूढ़ दल की पूरी फौज रूमाल लेकर कतारबद्ध नजर आने लगी।

मिमक्री काण्ड को लेकर समूचा दृश्य हास्यास्पद बन गया है। जो सभापति सदन के भीतर सदस्यों को संरक्षण देने के बजाय सत्तारूढ़ दल की कठपुतली की तरह काम करता हो उसे अचानक अपने पद, जाति और पेशे के अपमान का बोध हो जाये तो आप क्या कहेंगे? निलंबित सदस्य सदन के बाहर हैं और सदन के बाहर की गयी कोई कार्रवाई सभापति के दायरे में नहीं आती। उनके दायरे में जो आता है वो उन्होंने अब तक किया नही। वे एक बेरहम संरक्षक के रूप में सामने आये है। सभापति के रूप में उन्होंने विपक्ष को कभी संरक्षण दिया हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा समाज होगा जिसमें हास्य-व्यंग्य और विनोद के लिए स्थान न हो, शायद ही ऐसा कोई समाज होगा जो इस विधा को अपराध मानता हो। हम तो उस समाज से आते हैं जहाँ हास्य-व्यंग्य सनातन संस्कृति का हिस्सा है। यहां हरि को भी व्यंग्य वचनों का इस्तेमाल करने की आजादी दी गयी है। आम आदमी का तो ये सबसे महत्वपूर्ण और लोकतांत्रिक औजार है। आज के सत्तारूढ़ दल ने देश के संसदीय इतिहास को न पढ़ा है न देखा है। भाजपा का तो जन्म ही 1980 में हुआ है और आज की भाजपा तो 2014 में जन्मी है। उसे संसदीय हास्य परम्पराओं का बोध कैसे हो सकता है?

आज की स्थिति में गनीमत है कि निलंबित संसद केवल गांधीवादी तरीके से संसद के बाहर धरना दे रहे हैं, कल वे सड़कों पर भी उत्तर रहे हैं, मै तो कहता हूँ कि उन्हें निलंबन के इस नए इतिहास के लेखकों से त्यागपत्र देने के लिए आंदोलन चलना चाहिए, क्योंकि सभी ने मिलकर संसदीय परम्पराओं का गला घोंटा है। अपने दल के परम्विनोदी नेता और देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की आत्मा को आहत किया है। संसद लठैती से नहीं चलती कायदे कानूनों से चलते है। सभापति के पास निलंबन का अधिकार है तो बहाली का भी अधिकार है। सभापति सदन के हर सदस्य के संरक्षक हैं न कि केवल सत्तारूढ़ दल के। और जो सभापति कठपुतली बनते हैं, वे न सिर्फ अपने पद की गरिमा को कलंकित करते हैं बल्कि हमेशा के लिए इतिहास में एक खलनायक की तरह दर्ज किये जाते हैं। दुर्भाग्य से आज के नायक अचानक खलनायक बन गए हैं।

आपको जानकार हैरानी होगी कि मिमक्री को लेकर असंवेदनशीलता पिछले एक दशक में ही बढ़ी है।अब ये केवल नेताओं का विशेषाधिकार हो गया है। खासतौर पर सत्तारूढ़ दल के नेताओं का विशेषाधिकार। और कोई मिमक्री करता है तो उसे अपराध माना जाता है। हमारे सूबे में आज की तारीख में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से सबसे कुशल मिमक्री कलाकार हैं। एक जमाने में लालू प्रसाद यादव के पास ये तमगा हुआ करता था। कभी सदन में पीलू मोदी होते थे इसी भूमिका में।। वे सोती और रोती संसद को भी अपने हास्यबोध से जागृत कर देते थे लेकिन उनके समय में कभी कोई सभापति आहत नहीं हुआ। आज के सभापति तो छुईमुई के पौधे हो गए हैं। यानि एक मिमक्री से उनकी जाति, वर्ग और पद का अपमान हो जाता है। ऐसे छुईमुई के पौधे जब संवैधानिक पद पर बैठकर किसी महिला मुख्यमंत्री का अपमान करते हैं तब अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं और इसी के आधार पर सियासत में पदोन्ति भी पाते है। लेकिन ये एक अलग मसला है। आज का मसला ये है कि क्या इस देश में कोई किसी की मिमक्री नहीं करेगा। और अगर करेगा तो उसे जेल में डाल दिया जायेगा। मुझे याद है कि मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर में श्याम रंगीला नाम के एक मिमक्री कलाकर के साथ यही सब हुआ। उसे मोदी और शाह की मिमिक्री करने पर जेल जाना पड़ा और उसपर धाराएं लगीं दंगा करने और अश्लीलता फैलाने की। श्याम रंगीला अकेला नहीं है। फिल्म और टेलीविजन जगत के अनेक हास्य कलाकार इस तरह की असहिष्णुता के शिकार हो चुके है। दुर्भाग्य ये है कि देश के इस हास्य बोध को माननीय अदालतों का भी संरक्षण नहीं मिलता। आज मिमिक्री को लेकर उग्र लोग इटली के नहीं उस नागपुर के हैं जो हरिशंकर परसाई के व्यंग्य को नहीं पचा पाते थे और उनकी रीढ़ की हड्डी तोड़ने का दुस्साहस कर चुके हैं। लेकिन ऐसे लोग और ऐसी सत्ताएं ये भूल जाती है

स्वार्थी सांसदों ने संसद को मजाक बनाकर रख दिया

अब समय आ गया है कि हमारे सभी सांसद इस बात पर ध्यान दें कि संसदीय लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है। अन्यथा जनता ही उसका उपहास करने लगेगी। हमारे सांसदों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि वे किस तरह की विरासत छोड़ कर जा रहे हैं। क्या वे संसद को इसके पतन के भार के नीचे दबने देंगे? आज जो हो रहा है, वो हम देख ही रहे हैं। उम्मीद है कि देश के सांसदों को, सांसद चलाने वालों को इस बात का भान जल्द हो कि देश का नागरिक उन्हें कितनी उम्मीद के साथ देखता है। साथ ही उन्हें कई मौकों पर उदाहरण की तरह रखता है... पिछले कुछ दिनों से संसद में जो कुछ हो रहा है, उससे देश निराश है। संसद चलाकर ही सरकार विपक्ष के सवालों के जवाब सही ढंग से दे सकती है। हंगामे के माहौल में सांसदों को अपनी बात रखने का मौका ही नहीं मिलता। कोई बच्चा भी समझ सकता है वेल में जाकर नारेबाजी और हंगामा कर सदन की कार्यवाही रोकने से कैसे विरोध जताया जा सकता है। अच्छी बात तो तब कही जाएगी, जब आप अपने सवाल साफ-साफ रखें और सरकार साफ-साफ जवाब दे पाए।

प्रियंका सौरभ
लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

संसद में शोर-शराबा, वेल में जाकर नारेबाजी करना, एक-दूसरे पर निजी कटाक्ष करना यहां तक कि कई बार हाथापाई पर उतारू हो जाना आज संसद की आम तस्वीर है। आखिर सियासी पार्टियों और सांसदों का बर्ताव इतना अराजक क्यों हो गया है? क्या आज पार्टियों के निहित स्वार्थों ने संसद को मजाक बनाकर रख दिया है। अब समय आ गया है कि हमारे सभी सांसद इस बात पर ध्यान दें कि संसदीय लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है। अन्यथा जनता ही उसका उपहास करने लगेगी। हमारे सांसदों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि वे किस तरह की विरासत छोड़ कर जा रहे हैं। क्या वे संसद को इसके पतन के भार के नीचे दबने देंगे? आज जो हो रहा है, वो हम देख ही रहे हैं। उम्मीद है कि देश के सांसदों को, सांसद चलाने वालों को इस बात का भान जल्द हो कि देश का नागरिक उन्हें कितनी उम्मीद के साथ देखता है। साथ ही उन्हें कई मौकों पर उदाहरण की तरह रखता है...

पिछले कुछ दिनों से संसद में जो कुछ हो रहा है, उससे देश निराश है। संसद चलाकर ही सरकार विपक्ष के सवालों के जवाब सही ढंग से दे सकती है। हंगामे के माहौल में सांसदों को अपनी बात रखने का मौका ही नहीं मिलता। कोई बच्चा भी समझ सकता है वेल में जाकर नारेबाजी और हंगामा कर सदन की कार्यवाही रोकने से कैसे विरोध जताया जा सकता है। अच्छी बात तो तब कही जाएगी, जब आप अपने सवाल साफ-साफ रखें और सरकार साफ-साफ जवाब दे पाए। लेकिन इससे भी अधिक चिंता का विषय यह है कि संसद की कार्रवाई में बाधा अपवाद की बजाय नियम बन गया है और हमारे राजनेताओं को इस पर कोई पछतावा नहीं होता है। पिछले वर्षों में यह गिरावट बड़ी तेजी से आई है। सांसद एक-दूसरे पर चिल्लाते हैं, विधायी कागजों को छीनकर फाड़ देते हैं, छोटे से मुद्दे पर सदन के बीचों-बीच आ जाते हैं। पिछले वर्षों में ज्यादातर विधेयकों को बिना चर्चा के ही पारित किया गया है। यह संसदीय प्रणाली का दुरुपयोग है। अब विपक्षी पार्टियों और कुछ सांसदों ने संसद की दुर्गति कर रखी है। दोनों सदनों में निजी एजेंडों को लेकर अनुत्पादक हंगामा कर कार्यवाही ठप करा देना आम बात है। संसद में शोर-शराबा, वेल में जाकर नारेबाजी करना, एक-दूसरे पर निजी कटाक्ष करना यहां तक कि कई बार हाथापाई पर उतारू हो जाना आज संसद की आम तस्वीर है। आखिर सियासी पार्टियों और सांसदों का बर्ताव इतना अराजक क्यों हो गया है? क्या आज पार्टियों के निहित स्वार्थों ने संसद को मजाक बनाकर रख दिया है। सांसदों के रवैये को देखते हुए लगता नहीं है कि उसकी मंशा देश के विकास की योजनाएं बनने देने की है। ऐसा लग रहा है कि सांसदों ने पूरे संसदीय लोकतंत्र को बंधक बना लिया है। क्योंकि लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही आजकल टीवी पर लाइव दिखाई जाती है, लिहाजा देश का आम आदमी भी वह सब कुछ देखता है, जो संसद में रोज हो रहा है। आखिर सांसद लोगों के सामने अपनी क्या छवि पेश कर रहे हैं? जरा सोचिए कि देश के लोगों के मन में आपकी क्या छवि बनती जा रही है? यह सच है कि इस गिरावट का कारण यह है कि राजनीति आज संख्या का खेल बन गई है जिसके चलते क्षेत्रीय क्षत्रप अपनी मनमर्जी कराने के लिए दबाव डालते हैं। वे न केवल दादागिरी की राजनीति में विश्वास करते हैं अपितु सफल संसद सत्र के पैमाने को ह्यजिसकी लाठी, उसकी भैंसह्ल भी बनाते हैं। आज विषय-वस्तु की बजाय आकार महत्वपूर्ण बन गया है जिसके चलते संसद में गली-मोहल्लों के झगड़ों जैसे दृश्य देखने को मिलते हैं। इसलिए इस गिरती राजनीतिक संस्कृति और नैतिक मूल्यों में संसदीय कार्रवाई में राजनीति को प्रभावित करने वाली विषय सामग्री नहीं मिलती है। कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि संसद अब महज एक स्कोरिंग क्लब बन कर रह गई है। बहुतों को पता होगा कि संसद की एक मिनट की कार्यवाही पर ढाई लाख रुपए खर्च हो जाते हैं। इस तरह एक दिन की सामान्य कार्यवाही पर औसतन छह करोड़ रुपए का खर्च आता है। जिस दिन कार्यवाही लंबी चलती है, उस दिन खर्च और बढ़ जाता है। जरा सोचिए कि यह पैसा आता कहां से है। जाहिर है कि देश के आम लोगों की जेब से ही आता है। लोकतंत्र में इससे बड़ा और क्या मजाक होगा कि संसद की कार्यवाही लगातार ठप रहे या फिर दिन भर रह-रह कर हंगामा होता रहे, फिर भी एक दिन में छह करोड़ रुपए खर्च हो जाएं। जरा सोचिए कि छह करोड़ रुपए से क्या-क्या हो सकता है? हजारों गांवों की कि स्मत संसद की एक दिन की कार्यवाही पर होने वाले खर्च से बदल सकती है। लाखों गरीब लड़कियों की शादी हो सकती है। लघु और कुटीर उद्योगों से हजारों नौजवानों की कि स्मत संवर सकती है। लेकिन सांसद यह सब नहीं सोचते। विकास की योजनाएं भले न बनें, व्यक्तिगत हित जरूर सुधरने चाहिए। क्या सांसद देश से ऊपर हो गए हैं?

एक बात और सारे सांसद हंगामेबाज हों, ऐसी बात नहीं हैं। जो कामकाज को लेकर गंभीर हैं, वे कुछ नहीं कर पाते। सवाल है कि सांसद हर बार माहौल क्यों नहीं बनाते? क्या सांसद केवल हंगामा करने के लिए ही पहुंचते हैं? सांसदों ने लोकसभा को पंगु बना कर रख दिया है। हक़ीकत यह है कि लोकतंत्र का लोक यानी देश की जनता लोकसभा का चुनाव सीधे तौर पर करती है। ऐसे में अप्रत्यक्ष रूप से चुने गए सदन को लोक के सदन यानी लोकसभा की गरिमा का सम्मान करना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि लोकसभा में हुए हर काम में अड़ंगा डाल दिया जाए। लोकसभा में तय दिनों में सभी सांसदों को तीन-तीन मिनट ही सही, अपने चुनाव क्षेत्र के बारे में बोलने दिया जाए। बार-बार हंगामा करने वाले सांसदों को चिन्हित किया जाए और उनकी सूची प्रचारित कराई जाए। ऐसे नियम बनाए जाएं कि वेल में आने या पर्चा लहराने या दूसरा किसी भी कि स्म का हंगामा करने वाले सांसद के खिलाफ खुद-ब-खुद कोई तय कार्यवाही हो जाए। कुछ सांसद वॉकआउट करने के बाद दोबारा सदन में क्यों आ जाते हैं? केवल दिखावा करने के लिए ऐसा करते हैं, उन्हें देश के विकास से कोई लेना-देना नहीं है।

वे संसद में कुछ कर नहीं पा रहे हैं और उधर उनके लोकसभा क्षेत्र की जनता त्रस्त, क्योंकि वे उनकी समस्याएं सुलझा ही नहीं पा रहे हैं, क्योंकि संसद में केवल हंगामा हो रहा है। इसलिए संसद को अखाड़ा बनने से रोकें। नेतृत्व को भी अपनी बात समझाएं, उनके हर गलत-सही आदेश का आंख मूंदकर पालन न करें। लोकतंत्र के पवित्र मंदिर की गरिमा बचाए रखना सांसदों का प्रथम काम है। संसद को महत्वहीन बनाने के खतरनाक आयामों को शायद ये लोग नहीं समझते हैं। हमारी संसद हमारे राष्ट्र की आधारशिला है जो जनता का प्रतिनिधित्व करती है और जिससे अपेक्षा की जाती है कि वह हमारे राष्ट्रीय हितों पर संप्रभु निगरानी रखे। सरकार संसद के प्रति उत्तरदायी है और सरकार का अस्तित्व उस पर लोकसभा के विश्वास पर निर्भर करता है। अतः समय आ गया है कि हमारे सभी सांसद इस बात पर ध्यान दें कि संसदीय लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है।

प्रतिबंधित हो मानव बलि लेने वाली अंधविश्वास पूर्ण तंत्र-मंत्र विद्या

इंसान यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि धर्म–आस्था व अंधविश्वास के इस घालमेल ने मनुष्य को कितना क्रूर, अमानवीय व हिंसक बना दिया है? रोज कहीं न कहीं गांव–मुहल्ले के बलशाली लोग किसी न किसी गरीब परिवार के किसी व्यक्ति को खासकर महिला को चुड़ैल, भूतनी या डायन बता कर उसपर मनमाना अत्याचार करते हैं। किसी की पीट पीटकर हत्या कर दी जाती है तो किसी को रस्सियों या लोहे की जंजीरों से जकड़कर किसी पेड़ से बाँध दिया जाता है। उसे भूखा प्यासा रखकर प्रताड़ित किया जाता है। ऐसी अनेक पीड़िताओं के साथ दुष्कर्म भी किये जाते हैं। ऐसे मामलों में नाममात्र कार्रवाई भी होती है। परन्तु इस देश में जितना न्याय किसी गरीब को मिलता है यहां भी उतना ही न्याय किसी पीड़ित व प्रताड़ित व्यक्ति को भी मिलता है अर्थात नाममात्र या बिल्कुल नहीं। इसी अंधविश्वास की श्रेणी में आती है तांत्रिक विद्या। इस विद्या पर भी धर्म व अन्धविश्वास का जामा चढ़ाकर हमारे देश में जमकर हैवानियत का खेल खेला जा रहा है। इसी की आड़ में बलात्कार, हत्या, धन ऐंठना, ब्लैक मेलिंग आदि न जाने क्या क्या हो रहा है। शत प्रतिशत झूठ व पाखंड पर आधारित तांत्रिक विद्या का इतना बड़ा प्रभाव क्षेत्र है कि प्राय: पढ़े लिखे लोग यहाँ तक कि मंत्री व अधिकारी भी किसी न किसी लालचवश इस जाल में फँस जाते हैं। देश में तमाम ऐसे तांत्रिक हुए हैं जिनकी पहुँच सत्ता के सर्वोच्च शिखर तक भी रही है।

निर्मल रानी
लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं

भारतवर्ष एक ऐसा अद्भुत देश है जहां 80 करोड़ लोगों को निःशुल्क अनाज देकर उसी देश के लोगों को यह भी समझा दिया जाता है कि यदि तीसरी पारी में सत्ता हासिल हुई तो देश को विश्व की तीसरी महाशक्ति बना देंगे। शायद इन्हीं ह्यराशन लाभार्थियों ह्य के बल पर? जहाँ चंद्रयान छोड़े जा रहे हों विकास की नित नई गाथायें लिखने के दावे किये जा रहे हों। उसी देश में आज के आधुनिक व वैज्ञानिक दौर में अंधविश्वास व पाखंड से भरी ऐसे अनेक खबरें आये दिन सुनाई देती हैं जिन्हें देख पढ़ कर रूह काँप जाती है। इंसान यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि धर्म-आस्था व अंधविश्वास के इस घालमेल ने मनुष्य को कितना क्रूर, अमानवीय व हिंसक बना दिया है? रोज कहीं न कहीं गांव-मुहल्ले के बलशाली लोग किसी न किसी गरीब परिवार के किसी व्यक्ति को खासकर महिला को चुड़ैल, भूतनी या डायन बता कर उसपर मनमाना अत्याचार करते हैं। किसी की पीट पीटकर हत्या कर दी जाती है तो किसी को रस्सियों या लोहे की जंजीरों से जकड़कर किसी पेड़ से बाँध दिया जाता है। उसे भूखा प्यासा रखकर प्रताड़ित किया जाता है। ऐसी अनेक पीड़िताओं के साथ दुष्कर्म भी किये जाते हैं। ऐसे मामलों में नाममात्र कार्रवाई भी होती है। परन्तु इस देश में जितना न्याय किसी गरीब को मिलता है यहां भी उतना ही न्याय किसी पीड़ित व प्रताड़ित व्यक्ति को भी मिलता है अर्थात नाममात्र या बिल्कुल नहीं।

इसी अंधविश्वास की श्रेणी में आती है तांत्रिक विद्या। इस विद्या पर भी धर्म व अन्धविश्वास का जामा चढ़ाकर हमारे देश में जमकर हैवानियत का खेल खेला जा रहा है। इसी की आड़ में बलात्कार, हत्या, धन ऐंठना, ब्लैक मेलिंग आदि न जाने क्या क्या हो रहा है। शत प्रतिशत झूठ व पाखंड पर आधारित तांत्रिक विद्या का इतना बड़ा प्रभाव क्षेत्र है कि प्रायः पढ़े लिखे लोग यहाँ तक कि मंत्री व अधिकारी भी किसी न किसी लालचवश इस जाल में फँस जाते हैं। देश में तमाम ऐसे तांत्रिक हुए हैं जिनकी पहुँच सत्ता के सर्वोच्च शिखर तक भी रही है। परन्तु चूँकि इस तरह की अंधविश्वास, झूठ व पाखंड पूर्ण विद्याओं को विज्ञान कोई महत्व नहीं देता, इसमें किसी तरह की नाममात्र तार्किकता व तर्कशीलता नहीं होती इसलिये झूठ आधारित इस स्वयंभू विद्या को जड़मूल से समाप्त करने में ही हमारे समाज का भला है। परन्तु बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि चुड़ैल, भूतनी या डायन तथा तांत्रिक विद्या के चक्करों में सदियों से उलझे हमारे देश की सरकारें भी इस ह्यनासूर ह्य रुपी अन्धविश्वास व पाखण्ड से देश को निजात नहीं दिला सकीं। इसका कारण भी बड़ा रोचक है। दरअसल सरकारें व इसमें शामिल तमाम शातिर नेता चाहते भी यही हैं कि देश की भोली भाली जनता इन्हीं बे सिर पैर की बातों में उलझी रहे। अंधविश्वास में डूबी रहे। विज्ञान, तर्क और शिक्षा की बात ही न करे। तंत्र मन्त्र और छू मन्तर के बल पर अपनी समस्याओं का समाधान तलाशे। ऐसा करने से अन्धविश्वास को बढ़ाने व संरक्षण देने वाले तमाम निठल्ले लोगों को रोजगार मिल जाता है। ऐसे लोगों पर धर्म की अफीम का गहरा रंग चढ़ता है। बाद में यही लोग 80 करोड़ लाभार्थियों की श्रेणी में आकर उस सत्ता के एहसानमंद होते हैं जिसने उन्हें मुफ़्त में राशन देने का वादा किया है।

परन्तु सत्ता के इस स्वार्थ और लोगों को अशिक्षित रखने के चलते इस देश में कुछ ऐसी घटनायें भी हो जाती हैं जिससे हमारे देश की न केवल बदनामी होती है बल्कि दुनिया यह भी सोचने के लिये मजबूर हो जाती है कि चंद्रयान छोड़ने वाले देश में आखिर हो क्या रहा है? मिसाल के तौर पर गत दिनों कानपुर देहात के घाटम पुर इलाके के भदरस गांव की एक क्रूरतम घटना को लेकर एक अदालती फैसला आया जिसने तीन वर्ष पूर्व यानी 14 नवंबर 2020 की भयावह घटना की याद फिर ताजा कर दी। दरअसल कानपुर देहात के घाटम पुर इलाके के भदरस गांव में 14 नवंबर 2020 को छः वर्ष की एक मासूम बच्ची का अपहरण कर पहले उसके साथ रेप किया गया फिर उसकी हत्या कर दी गई थी। इतना ही नहीं बल्कि आरोपियों ने वहशीपन की सारी हदें पार करते हुए उसका कलेजा निकालकर रोटी के साथ खाया था। इस वहशीपन का कारण यह था कि किसी तांत्रिक ने एक दम्पति को बेटा पैदा करने के लिये यह उपाय बताया था। इसी मामले में स्थानीय अदालत ने चार दोषियों को सजा सुनाई है। तीन साल तक चली सुनवाई के बाद पिछले दिनों कानपुर देहात के अपर जिला जज शमीम रिजवी की अदालत ने आरोपी दंपती परशुराम व सुनैना को आजीवन कारावास और 20-20 हजार अर्थदंड की सजा सुनाई है। वहीं दंपत्ति के भतीजे अंकुल और उसके साथी वीरेन को पूरे जीवन काल का कारावास और 45-45 हजार अर्थदंड का लगाया है। यह इस देश की पहली घटना नहीं है। ऐसे तांत्रिकों के चक्कर में लाखों लोगों की जानें जा चुकी हैं, सामूहिक आत्म हत्याएं तक देश की राजधानी दिल्ली में हो चुकी हैं। परन्तु इन सबके बावजूद तांत्रिकों का व्यवसाय फल फूल रहा है। तांत्रिक विद्या व व्यवसाय का प्रचार करने वाले तमाम पोस्टर हैंडबिल पम्फलेट सार्वजनिक स्थानों, बसों ट्रेन्स पार्कों में यहाँ वहां चिपके देखे जा सकते हैं। इनमें उनके संपर्क नंबर और पता भी होता है। परन्तु सरकार व प्रशासन आँखें मूँद कर झूठ व मक्कारी आधारित इस व्यवसाय को फलते फूलते देखती रहती है। और देखे भी क्यों न? जब स्वयं सरकार के मंत्री नींबू और हरी मिर्च लटकाकर टोटके करते फिरें, पूजा पाठ दुआ ताबीज का सहारा लेकर अवैज्ञानिकता को बढ़ावा देते दिखाई दें तो इसका मकसद साफ है कि ऐसे सभी अंधविश्वासी व पाखंडपूर्ण गतिविधियों को सरकार का संरक्षण हासिल है। और सरकार स्वयं चाहती है कि लोग आज के आधुनिक व वैज्ञानिक दौर में भी अंधविश्वास व पाखंड में उलझे रहें। अन्यथा एक कुशल, प्रगतिशील व वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने वाली सरकार को तो देशवासियों को अंधविश्वास व पाखण्ड से मुक्ति दिलाने व गरीबों की जान माल सुरक्षित करने हेतु पूरे देश में तंत्र मन्त्र विद्या और दूसरे सभी ढोंग, झाड़ा, तावीज, कण्डा आदि तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित कर देना चाहिए और लोगों को अंधविश्वास से दूर रखना तथा उनमें वैज्ञानिक सोच का संचार करना चाहिये।

अज्ञात बीमारी का शिकार हो रहे पहाड़ी इलाकों के मवेशी

बाबर नफीस

एक ओर जहां इंसान कोरोना जैसी जानलेवा बीमारी से लड़ रहा है तो वहीं दूसरी ओर केंद्रशासित प्रदेश जम्मू के डोडा स्थित पहाड़ी इलाकों में मवेशियों के बीच एक अज्ञात बीमारी ने कोहराम मचा रखा है. जिसने अब तक कई पालतू मवेशियों की जाने ले ली हैं. ये मवेशी गरीबों की आय का प्रमुख स्रोत हैं. ऐसे में इन जानवरों की मौत उन्हें आर्थिक रूप से नुकसान पहुंचा रहा है. क्षेत्र का पशु चिकित्सा विभाग भी अभी तक इस बीमारी के कारणों और इसके समुचित इलाज का पता लगाने में असफल रहा है. ज्ञात हो कि डोडा जिले के ठाठरी उपमंडल में तीन तहसीलें हैं. इन तीनों तहसीलों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र और गांव दूर दराज पहाड़ी इलाकों पर आबाद हैं. इनमें से ज्यादातर पंचायतें सर्दियों के चार महीने बर्फ से ढकी रहती हैं और अन्य क्षेत्रों से पूरी तरह से कट जाती हैं. इस दौरान जहां स्थानीय लोगों को कई प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है वहीं यहां का विकास कार्य भी ठप हो जाता है. जिससे प्रशासनिक स्तर पर ग्रामीणों को कोई मदद नहीं मिल पाती है. वर्तमान में, इन क्षेत्रों के लोगों की आज सबसे बड़ी समस्या मवेशियों में फैल रही यह अज्ञात बीमारी है. इस संबंध में स्थानीय लोगों का कहना है कि एक सप्ताह पहले उनके मवेशियों को बुखार आता है. जिससे धीरे धीरे वह खाना पीना बंद कर देते हैं और फिर कुछ ही दिनों में उनकी मौत हो जाती है. गौरतलब है कि इन दूर दराज ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए मवेशी पालन सबसे बड़ी आजीविका का माध्यम है. यह उनके आर्थिक सशक्तिकरण का भी एक अहम जरिया है. इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस इलाके के कई घर ऐसे हैं जहां सैकड़ों की संख्या में मवेशी पाले जाते हैं. इस संबंध में स्थानीय लोगों ने कई बार प्रशासन से गुहार लगाई कि इस ओर गंभीरता से ध्यान दिया जाए और मवेशियों की जान बचाने के इंतजाम किया जाएं. लेकिन अब तक इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं की गई है और न ही प्रशासन द्वारा गांव में कोई पशु चिकित्सक भेजा गया है. जिससे लोगों को काफी परेशानी हो रही है. इस संबंध में एक सामाजिक कार्यकर्ता मुहम्मद इकबाल कहते हैं कि सर्दी के मौसम में इन पहाड़ी इलाकों के निवासियों को कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. यह क्षेत्र तीन महीने तक बर्फ के कारण बंद रहता है. यदि उनकी इन सभी समस्याओं का समाधान सर्दियों से पहले कर लिया जाए तो इस क्षेत्र के लोगों का सामान्य जनजीवन प्रभावित नहीं हो सकता है. वहीं, एक अन्य सामाजिक कार्यकर्ता आदिल हुसैन कहते हैं कि मवेशियों के बीच यह अज्ञात महामारी हर साल इस इलाके में फैलती है, जिसमें सैकड़ों मवेशियों की जान चली जाती है. जबकि यह मवेशी इन पहाड़ी इलाकों के लोगों के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत है. उन्होंने कहा कि हर घर में कम से कम दो भैंस और एक गाय पाली जाती हैं. जिसका न केवल दूध बेचकर बल्कि उसका गोबर भी बेच कर यह ग्रामीण अपनी आय में वृद्धि करते हैं. ऐसे में इस नामालूम बीमारी ने उनकी मुश्किलें बढ़ा दी हैं. ये समस्या इसलिए भी गंभीर हो गई है, क्योंकि इन मवेशियों के लिए दवा मिलना भी बहुत मुश्किल हो गया है. ग्रामीण बताते हैं कि जानवरों की मौत से फसलों को भी बहुत नुकसान हो रहा है, क्योंकि स्थानीय किसान खेतों में देसी खाद डालने के लिए इन मवेशियों का गोबर खरीदते हैं और खेतों में रासायनिक खाद की जगह उपयोग करते हैं. एक अन्य स्थानीय महिला सायमा बानो ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहती हैं कि बीमारी से मवेशियों की मौत से होने वाले नुकसान का कोई मुआवजा भी नहीं मिलता है. जबकि प्रशासन को इस ओर ध्यान देना चाहिए ताकि गरीबों के नुकसान की पूर्ति हो सके. उन्होंने बताया कि इस संबंध में हमने डोडा के जिला विकास आयुक्त विश्वपाल महाजन को पहले

संक्षिप्त खबरें

चुनाव आयोग की वेबसाइट पर फर्जी आवेदन कर वोट कटवाने का आरोप

राष्ट्रीय लोकदल के पदाधिकारियों ने गुरुवार को डीएम को ज्ञापन सौंपा। जिसमें उन्होंने चुनाव आयोग की वेबसाइट पर फर्जी आवेदन कर वोट कटवाने का आरोप लगाया है। डीएम ने उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया है। रालोद के जिलाध्यक्ष अमित त्यागी सरना के नेतृत्व में पदाधिकारी जिला मुख्यालय पहुंचे। जहां पर पदाधिकारियों ने डीएम राकेश कुमार सिंह को ज्ञापन दिया। इसमें बताया कि प्रत्येक विधानसभा में हजारों की संख्या में वोटरों की अनुपस्थिति दर्ज कर वोट काटे गए हैं। डीएम ने इस मामले में उच्च स्तरीय जांच करने और संबंधित समूह या व्यक्ति के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का आश्वासन दिया। चेयरमैन अमरजीत सिंह बिड्डी ने कहा कि गन्ने का बकाया भुगतान जल्द से जल्द ब्याज सहित कराया जाए। इस अवसर पर चौधरी तेजपाल सिंह, महानगर अध्यक्ष रेखा चौधरी, मनवीर सिंह, रविंद्र चौहान, सत्येंद्र तोमर, ऑडी त्यागी, रामभरोसे लाल मोरिया, प्रदीप मुखिया, उम्मेद भांबरीक, ऋषिपाल सिंह और उद्देश चौधरी आदि मौजूद रहे।

बीएसए ने छात्रों के साथ मध्याह्न भोजन का स्वाद चखा

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए) ओम प्रकाश यादव ने गुरुवार को खुर्रमपुर प्राथमिक विद्यालय का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान बीएसए ने कक्षाओं में जाकर छात्रों से प्रश्न पूछे और विद्यालय कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान बीएसए ने छात्रों के साथ बैठकर मिड-डे-मील में बने दाल-रोटी का स्वाद भी लिया। प्रधानाचार्या लक्ष्मी त्यागी ने बताया कि निरीक्षण के दौरान विद्यालय में कुल 82 में से 65 छात्र उपस्थित मिले। विद्यालय की साफ-सफाई व भौतिक परिवेश, कक्षों में शिक्षण अधिगम सामग्री, मिड-डे-मील की गुणवत्ता, ऑपरेशन कायाकल्प के तहत किए गए कार्य एवं समस्त व्यवस्थाओं पर बीएसए ने संतुष्टि जताई।

युवक पर धारदार हथियार से हमला

बखरवा गांव में आपसी विवाद के चलते दो लोगों ने घर में घुसकर युवक पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। शिकायत पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली। पुलिस मामले की जांच कर रही। बखरवा गांव निवासी मुकुल चौधरी ने बताया कि उनका गांव के कुछ लोगों से विवाद चल रहा है। बुधवार रात कुछ लोग घर के बाहर गाली-गलौज करने लगे। विरोध करने पर आरोपियों ने घर में घुसकर उन पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। इससे उसके हाथ और सिर में चोट आई है। शोर मचाने पर आरोपी फरार हो गए। तहरीर पर पुलिस ने आरोपी युवक आशु चौधरी और उसके पिता देशपाल चौधरी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली। एससीपी मोदीनगर ज्ञानप्रकाश राय का कहना है कि आरोपियों को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

साझे के भूखंड पर कब्जा करने का आरोप

आगरा निवासी प्रमोद शर्मा का कहना है कि उसके पिता मुन्नालाल ने 1912 में लोनी की पूजा कॉलोनी में 83 वर्गमीटर का भूखंड परिचित रामप्रताप के साझे में खरीदा था। सारे पैसे उसके पिता ने दिए थे। आरोप है कि पिता की मौत के बाद रामप्रताप ने भूखंड पर कब्जा कर लिया। भाई ने भूखंड खाली करने को कहा तो धमकी देकर भगा दिया। डीसीपी के निर्देश पर पुलिस ने ट्रॉनिका सिटी थाने में रामप्रताप उसकी पत्नी और बेटे के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

व्यापारी को अगवा करने वाला तीसरा आरोपी धरा

संतपुरा कॉलोनी में व्यापारी को अगवा करने के मामले में वांछित तीसरे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। दो अन्य आरोपियों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। बुधवार रात चेकिंग के दौरान आरोपी पकड़ में आया है। एसीपी ज्ञाप प्रकाश राय ने बताया कि 13 दिसम्बर को संतपुरा कॉलोनी निवासी व्यापारी को कार सवार कुछ लोगों ने अगवा कर लिया था। व्यापारी ने कार से कूदकर जान बचाई थी। पीड़ित व्यापारी ने रिपोर्ट दर्ज कार्रवाई थी। पुलिस ने अगले ही दिन मामले में दो आरोपी बिजेंद्र और अशोक निवासी बिसोखर को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया था। दोनों के पास वारदात में इस्तेमाल कार और हथियार बरामद किए गए थे। आरोपियों का तीसरा साथी फरार हो गया था। इसके बाद से पुलिस आरोपी की तलाश में लगी हुई थी। बीते बुधवार रात चेकिंग के दौरान पुलिस तीसरे साथी गजेंद्र निवासी बिसोखर को भी गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत कार्रवाई की गई है।

बखिरा के पीतल बर्तन उद्योग को विश्वकर्मा योजना से जोड़ा जाएगा : योगी

संतकबीरनगर, एजेंसी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को कहा कि संतकबीरनगर के बखिरा कस्बे के पीतल बर्तन उद्योग को विश्वकर्मा योजना से जोड़ा जाएगा। जिले के बघौली ब्लाक के ग्राम करौंदा में विकसित भारत संकल्प यात्रा में बतौर मुख्य अतिथि योगी ने एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा पीएम मोदी की भारत को 2047 तक भारत को दुनिया की बड़ी ताकत के रूप में स्थापित करने का अभियान है। विकसित भारत संकल्प यात्रा हम सबको जोड़ने की मुहिम है। उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े नौ वर्षों में हम एक नव भारत का दर्शन कर रहे हैं और भारत को एक वैश्विक भारत का सम्मान प्राप्त हो रहा है। जनता को जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। योगी ने कहा कि बखिरा के पीतल बर्तन उद्योग को विश्वकर्मा योजना से जोड़ा जाएगा। डबल इंजन की सरकार ने समाज में संत कबीर के मूल्यों व आदर्शों, समता, सद्भावना एवं समरसता की स्थापना और शोध को बढ़ावा देने के लिए ह्यसंत कबीर अकादमीह्न का निर्माण कराया है। वर्तमान बजट में हमने प्रावधान किया है कि ह्यप्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाह्न के लाभार्थियों को होली के अवसर पर फ्री में भी सिलेंडर देंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज के भारत के पास राष्ट्रीय सुरक्षा की गारंटी होने के साथ ही वर्ल्ड क्लास इन्फ्रास्ट्रक्चर है। साथ ही पूरी इमानदारी और पारदर्शिता के साथ गरीब कल्याण की योजनाएं लोगों तक पहुंच रही हैं। उन्होंने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा 15 नवंबर से पूरे देश में एक साथ प्रारम्भ हुई थी। वहीं उत्तर प्रदेश में इस यात्रा की शुरूआत लखीमपुर खीरी और सोनभद्र जिले से हुई थी। उन्होंने कहा कि यात्रा के अंतर्गत 536 मोदी गारंटी वीडियो वैन चल रही हैं, जो उत्तर प्रदेश में अब तक 1072 कार्यक्रम कर चुकी हैं। भारत की आजादी के अग्रदूत और जनजातीय समुदाय से संबंध रखने वाले बिरसा मुंडा जी की जयंती से शुरू हुई यह यात्रा 26 जनवरी 2024 तक पूरे देश के अंदर चलेगी। योगी ने कहा कि यह यात्रा पूरे देश के अंदर सभी ग्राम पंचायतों और नगर निकायों में निकल रही है। यात्रा के अंतर्गत केंद्र और राज्य सरकारों की योजनाओं के लाभार्थी अपनी सफलता की कहानी स्वंय बता रहे हैं। साथ ही विभिन्न योजनाओं में पात्रता श्रेणी में आने वाले लोगों का यात्रा के अंतर्गत ही फार्म भी भरा जा रहा है और समयबद्ध तरीके से उन तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले साढ़े छ वर्ष में उत्तर प्रदेश में 55 लाख से अधिक गरीबों को आवास दिया गया है। तीन करोड़ से अधिक गरीबों को शौचालय मिला है। एक करोड़ 75 लाख से अधिक माताओं और बहनों को उज्ज्वला योजना के तहत फ्री में रसोई गैस सिलेंडर दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दीपावली के अवसर पर जिन लोगों का गैस कनेक्शन उनके आधार से लिंक था उनको राज्य सरकार ने अपनी तरफ से एक-एक सिलेंडर फ्री में दिया है। साथ ही होली में भी हमारी सरकार ऐसे लोगों को एक-एक सिलेंडर फ्री में देगी। उन्होंने कहा कि पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत देश के अंदर 80 करोड़ लोगों तो उत्तर प्रदेश में 15 करोड लोगों को फ्री राशन दिया जा रहा है। आयुष्मान योजना के तहत गरीबों को पांच लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा लाभ दिया जा रहा है। सीएम योगी ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत डबल इंजन की सरकार उन सभी पात्र लोगों को सरकार की योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराएगी, जो किन्हीं वजहों से अभी तक वंचित रह गए थे। कार्यक्रम में योगी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। साथ ही उन्होंने छः माह से ऊपर आयु वर्ग के कुछ बच्चों का अन्नप्राशन संस्कार भी कराया। साथ ही सीएम योगी ने कार्यक्रम में शामिल सरकार की विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों से संवाद भी किया। इस दौरान लाभार्थियों ने मुख्यमंत्री से अपने अनुभव साझा किए। इसके अलावा उन्होने मनरेगा के अंतर्गत 21 अन्नपूर्णा भवनों का भूमि पूजन किया और संत कबीर नगर सेफ सिटी परियोजना का शुभारम्भ किया। उन्होंने विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र देकर उन्हें लाभान्वित भी किया। कार्यक्रम में जिले की प्रभारी मंत्री विजय लक्ष्मी गौतम, सांसद प्रवीण कुमार निषाद, विधायक अनिल कुमार त्रिपाठी, अंकुर तिवारी, गणेश चंद्र चौहान, विधान परिषद सदस्य सुभाष यदुवंश, ध्रुव कुमार त्रिपाठी, देवेन्द्र प्रताप सिंह, भारतीय जनता पार्टी के पूर्व सांसद एवं विधायक और पार्टी की जिला इकाई के पदाधिकारी समेत भारी संख्या में कार्यकर्ता और लोग शामिल थे।

विकसित भारत संकल्प यात्रा मे दी जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता, मनोज शर्मा

हसनपुर ।विधान सभा क्षेत्र के ग्राम पौरारा में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री द्वारा चलाई जारी योजनाओं के संदर्भ में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में पहुंचकर सभी ग्रामवासीयो को समस्त योजनाओ के बारे में जानकारी देते मुख्य अतिथि विधायक महेंद्र सिंह खडगवंशी साथ ही योजनाओं द्वारा लाभाविन्त हुए लाभार्थियों को मौके पर ही उजाला गैस के चूल्हा व सिलेंडर, आवास योजना के अंतर्गत आवास प्रमाण पत्र आयुष्मान कार्ड सोपें प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आयुष्मान कार्ड योजना, गरीब कल्याण योजना, पेंशन योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि एवम सभी समस्त योजनाओं का लाभ प्रत्येक लाभार्थी ग्रामवासियों को मिले ऐसे सख्त निर्देश समस्त योजनाओं से संबंधित अधिकारियों को दिए।इस मौके पर ग्राम प्रधान इशरत अली, डॉ हैम सिंह बूथ अध्यक्ष, आशीष कुमार डीलर, जयपाल पूर्व प्रधान, वीरेंद्र कुमार, बृजेश कुमार राणा, क्षेत्र पंचायत सदस्य मुजम्मिल अली, वेद प्रकाश अग्रवाल पूर्ति निरीक्षक गंगेश्वरी प्रमोद कुमार एडीओ समाज कल्याण विभाग, दीपक कुमार ग्राम विकास अधिकारी सतीश कुमार लेखपाल गौरव जल निगम कैलाश कुमार सैनी कृषि विभाग चरण सिंह रोजगार सेवक सरोज कुमारी आंगनबाड़ी केंद्र एवं समष्टि योजनाओं से संबंधित अधिकारी एवं समस्त ग्रामवासीय उपस्थित रहे।

श्री वेंक्टेश्वरा में रोजगार महाकुम्भ "रोजगार मेला-2023" का आयोजन आज

● केन्द्र एवं राज्य सरकार की रोजगारोन्मुखी योजनाओ में युवाओं के सपनो को लगे पंखः डॉ. सुधीर गिरि

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय/संस्थान में 22 दिसम्बर 2023 को उत्तर प्रदेश सरकार श्रम व सेवायोजन मन्त्रालय के संयुक्त तत्वॉधान में आयोजित होने वाले मेगा रोजगार मेला-2023 को लेकर एक प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया। जिसमें वेंक्टेश्वरा समूह के चेयरमैन डॉ. सुधीर गिरी के आधिकारिक प्रतिनिधि एवं विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति डॉ.राजीव त्यागी एवं जिला सेवायोजन अधिकारी डॉ.सुशील कुमार ने संयुक्त रूप से बताया कि इस मेगा रोजगार मेले में प्रदेशभर से 5000 से अधिक युवा/छात्र विभिन्न कम्पनियों में सीधे साक्षात्कार के लिए शिरकत करेंगे, तथा देश की चार दर्जन से अधिक नामचीन कम्पनियाँ उनका साक्षात्कार लेकर उन्हें नौकरी के लिए चयनित करेंगी।श्री वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय/संस्थान के डॉ. अब्दुल कलाम कॉन्फ्रेंस हॉल में 22 दिसम्बर 2023 को आयोजित होने वाले मेगा रोजगार मेला-2023 को लेकर आज आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस का शुभारम्भ प्रतिकुलाधिपति डॉ राजीव त्यागी, सेवायोजन अधिकारी उत्तर प्रदेश सरकार डॉ.सुशील कुमार, कुलपति डॉ. राकेश कुमार यादव, रोजगार मेले के संयोजक डॉ. लक्ष्मण सिंह रावत आदि ने सरस्वती माँ की प्रतिमा के सन्मुख दीप प्रज्वलित करके किया।इस अवसर पर प्रतिकुलाधिपति डॉ. राजीव त्यागी एवं सेवायोजन अधिकारी डॉ. सुशील कुमार ने बताया कि वेंक्टेश्वरा संस्थान में होने वाले इस मेगा रोजगार मेला-2023 में देशभर से 50 से अधिक विभिन्न कम्पनियाँ प्रदेश भर से आये 5000 से अधिक युवाओं का साक्षात्कार करेंगी एवं उनको रोजगार के अवसर प्रदान करेंगी।इस अवसर पर प्रधान सलाहकार प्रोफेसर वी.पी.एस. अरोड़ा, सी.ई.ओ. श्री अजय श्रीवास्तव, ग्रुप सलाहकार श्री आर. एस. शर्मा, कुलसचिव डॉ, पीयूष पाण्डे, डॉ, तेजपाल सिंह, डॉ. अनिल जयसवाल, डॉ, दिव्या गिरधर, डॉ, आशुतोष सिंह, डॉ.ओम प्रकाश गोसाई, डॉ. राहुल कुमार, अश्विन कुमार सक्सेना, डॉ. राजवर्धन, डॉ. सर्वनन्द साहू, डॉ. ऐना एरिक ब्राउन, अरूण कुमार गोस्वामी, मारूफ चौधरी, अभिषेक जैन, मेरठ परिसर से निदेशक डॉ. प्रताप सिंह मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

वार्डों में बेहतर होगी जलापूर्ति, नगर निगम ने काम शुरू कराया

प्रात : किरण संवाददाता

नगर निगम ने वार्डों में बेहतर जलापूर्ति के लिए तेजी से काम शुरू करा दिया है। नगरायुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने जलकल विभाग के अधिकारियों को स्थलीय निरीक्षण करने के आदेश जारी किए हैं। साथ ही निर्देश दिया है कि यदि गारंटी पीरियड से पहले रिबोर हो रहा है तो संबंधित फर्म के खिलाफ कार्रवाई अमल में लाएं। नगरायुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक के नेतृत्व में जलकल विभाग के कार्यों में गति दिखाई दे रही है। लगातार शहर में पाइपलाइनों मरम्मत का कार्य भी तेजी से कराया जा रहा है। प्रत्येक जोन में रिबोरे के कार्यों ने भी अब रफ्तार पकड़ ली है। नगरायुक्त के निर्देश पर संबंधित विभाग अधिकारी स्थल निरीक्षण भी कर रहे हैं। नगर निगम जलकल विभाग द्वारा अंबेडकर नगर वार्ड संख्या 25, वार्ड संख्या 58 शिवपुरी, वार्ड संख्या 26 माधवपुर, वार्ड संख्या 20 भोपुरा, वार्ड संख्या 59 चंद्रपुरी, वार्ड संख्या 33 सराय नजर अली, वार्ड संख्या 88 गांधीनगर, वार्ड संख्या 65 विवेकानंद नगर व अन्य क्षेत्रों में इन दिनों बहुत ही तेजी के साथ कार्य चल रहा है। महा प्रबंधक जल, सहायक अभियंता जल व अन्य अधिकारियों द्वारा मानिटरिंग का कार्य चल रहा है।नगरायुक्त ने निर्देश दिया है कि गारंटी पीरियड से पहले रिबोर होता है तो उसकी जिम्मेदारी संबंधित फर्म ठेकेदार की है। इसके लिए नगरायुक्त द्वारा महाप्रबंधक जल व जलकल विभाग के अधिकारियों को कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

डेढ़ सौ विपक्षी सांसदों का निलंबन जनता के विश्वास पर आघातः मायावती

लखनऊ, एजेंसी

राज्यसभा सभापति की मिमक्री को अशोभनीय बताते हुये बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सुप्रीमो मायावती ने कहा कि संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान 150 विपक्षी सांसदों का निलंबन लोगों के विश्वास को आघात पहुंचाने वाली घटना है। सुश्री मायावती ने गुरुवार को कहा कि संसद के वर्तमान शीतकालीन सत्र के दौरान दोनों सदनों के रिकार्ड संख्या में लगभग 150 विपक्षी सांसदों का निलम्बन होना सरकार व विपक्ष के लिए भी कोई गुडवर्क व अच्छा कीर्तिमान नहीं है। इसके लिए कसूरवार चाहे कोई भी हो, लेकिन संसदीय इतिहास के लिए यह घटना अति-दुःखद, दुर्भाग्यपूर्ण व लोगों के विश्वास को आघात पहुँचाने वाला है। उन्होने कहा कि इस दौरान, राज्यसभा सभापति का संसद परिसर में निलम्बित सांसदों द्वारा मजाक (मिमिक्री) उड़ाने का वीडियो वायरल होना भी अनुचित व अशोभनीय है। साथ ही विपक्ष-विहीन संसद में देश व आमजन के हित से जुड़े अति-महत्वपूर्ण विधेयकों का पारित होना भी यह अच्छी परम्परा नहीं है। बसपा अध्यक्ष ने कहा कि संसद की सुरक्षा में अभी हाल में जो सेंध लगाई गई है। यह ठीक नहीं है। बल्कि यह अति-गम्भीर एवं चिन्तनीय घटना है। इस मामले में सभी को मिलकर संसद की सुरक्षा की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये, एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाना ठीक नहीं है। विपक्ष के गठबन्धन में बसपा समेत अन्य जो पार्टियाँ शामिल नहीं हैं उनके बारे में किसी को भी बेफिजूल कोई भी टीका-टिप्पणी करना उचित नहीं है, क्योंकि भविष्य में देश व जनहित में कब किसको, किसी की भी जरूरत पड़ जाये, यह कुछ भी कहा नहीं जा सकता है और तब उन्हें शर्मिन्दगी न उठानी पड़े। इस मामले में खासकर समाजवादी पार्टी इस बात का जीता-जागता उदाहरण भी है। उन्होने कहा कि बसपा पूर्ण रूप से धर्मनिरपेक्ष पार्टी है और यहाँ अपने देश में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों के अपने आस्था के अनेकों स्थल बने हैं, जिन सभी का हमारी पार्टी हमेशा सम्मान करती रही है और आगे भी करती रहेगी। इसी क्रम मे अयोध्या में नव-निर्मित राम मन्दिर का जो अगले महीने उद्घाटन होने के लिए जा रहा है तो उसका हमारी पार्टी को कोई भी एतराज नहीं है। और यहाँ अयोध्या में कोर्ट के आदेश पर सरकार द्वारा निर्धारित की गई जमीन पर जब भी मस्जिद का निर्माण होता है तब उसके उद्घाटन का भी हमारी पार्टी कोई एतराज नहीं करेगी।

बसपा धर्मनिरपेक्ष पार्टी, सभी धर्मों का करती है सम्मान : मायावती

लखनऊ, एजेंसी

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने गुरुवार को एक प्रेसवार्ता की। इस दौरान उन्होंने कहा कि बसपा धर्मनिरपेक्ष पार्टी है। हमारे देश में विभिन्न धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं, जिसका बसपा हमेशा सम्मान करती रही है। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में नवनिर्मित राममंदिर का जो उद्घाटन होने जा रहा है, उसका हमारी पार्टी को कोई भी ऐतराज नहीं है। पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने अपने बयान में कहा कि अयोध्या में कोर्ट के आदेश पर सरकार द्वारा जब भी मस्जिद का निर्माण होता है तो तब भी उसके उद्घाटन का हमारी पार्टी को ऐतराज नहीं करेगी। हमारी पार्टी सभी धर्म स्थलों का पूरा सम्मान करती है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से घिनौनी राजनीति की जा रही है, ये दुखद और चिंतनीय है। जो नहीं होना चाहिए। इससे अपना देश कमजोर ही होगा, मजबूत नहीं। उन्होंने ने कहा कि बसपा का मानना है कि संसद के वर्तमान सत्र के दौरान दोनों सदनों से रिकार्ड संख्या में लगभग 150 सांसदों का निलम्बन होना, सरकार व विपक्ष के लिए भी कोई गुडवर्क या महान कीर्तिमान नहीं है। कसूरवार कोई भी हो किंतु संसदीय इतिहास के लिए यह घटना लोगों को आघात पहुंचाने वाला है। और इसी दौरान राज्यसभा सभापति का निलम्बित सांसदों द्वारा मजाक उड़ाना अशोभनीय है। इसी प्रकार सरकार और विपक्ष के जबरदस्त टकराव वाली घटना से देश के लोकतंत्र और ससंदीय परम्पराओं को शर्मसार होने से बचाना जरुरी है। विपक्ष विहिन संसद में आमहित से जुड़े अतिमहत्वपूर्ण विधेयक पारित होना भी अच्छी परम्परा नहीं है। मायावती ने कहा कि संसद की सुरक्षा में जो सेंध लगायी गयी है, ये ठीक नहीं है। यह अतिगम्भीर व चिंतनीय है। सभी को संसद की सुरक्षा पर गम्भीरता से लेना चाहिए। खुफिया विभाग को सतर्क रहने की आवश्कता है, जिससे इस प्रकार की घटना पुनः ना होने पाये। उन्होंने आगे कहा कि विपक्ष के गठबंधन में बसपा सहित अन्य जो भी विपक्ष की पार्टियां शामिल नहीं है। उनके बारे में बेफिजुल टीका-टिप्पणी करना सही नहीं है। भविष्य में जनहित में किसे किसको किसी की जरुरत पड़ जाये, ये भी कहा नहीं जा सकता है। फिर ऐसे में किसी पार्टी को शर्मिंदगी उठानी पड़े, ये ठीक नहीं है। इस मामले में समाजवादी पार्टी इसका जीता जागता उदाहरण भी है

आवाज उठाने वाले सांसदों को निलंबित और जनता को भेजा जा रहा जेल, देश में लोकतंत्र नहीं रहाः राकेश टिकैत

बहराइच, एजेंसी

भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) नेता राकेश टिकैत ने गुरुवार को यहां कहा कि जिन लोगों ने संसद में आवाज उठाई उन्हें निलंबित कर दिया गया है और जिन्होंने सड़कों पर आवाज उठाई उन्हें जेल भेजा जा रहा है। किसान नेता दौरे के लिए जनपद श्रावस्ती जा रहे थे। इस दौरान जनपद में जिलाधिकारी आवास के बाहर किसान नेताओं ने राकेश टिकैत का स्वागत किया। इस दौरान संसद की सुरक्षा के चूक के मामले में पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि जिन्होंने यह कृत्य किया है उनके पास किसने बनवाएं। कोई तो हैं जो उन्हें अंदर लेकर गया। हमारी एजेंसियां इतनी कमजोर नहीं है, हो सकता है यह जान बुझ भी किया गया हो। यह सरकार की जिम्मेदारी है और सच्चाई देश के सामने आनी चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि जो सांसद संसद में आवाज उठाएगा तो उन्हें सस्पेंड किया जाएगा। अगर आम आदमी आवाज उठाता है तो उन्हें जेल भेजा जाएगा।देश में लोकतंत्र नहीं रहा है। यह देश गुलामी की तरफ जा रहा है। किसान नेता बोले कि यहां सरकार आम लोगों की नहीं बल्कि व्यापारियों की सरकार है। जो आवाज उठाएगी वह जेल में जाएगा या मारा जाएगा। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनी और वहां का हर्षा जंगल अदानी ग्रुप को दिया जा रहा है। जंगल काटे जा रहे हैं। जो लोग आदिवासी हैं जल, जंगल, और जमीन की बात करते हैं उन्हें नक्सलवादी बताकर जेल में डाला जा रहा है। कल भी वहां पर लाठीचार्ज हुई और लोगों को जेलो में डाला गया। ईवीएम के सवाल पर उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में भाजपा का हारा हुआ कैंडिडेट जीत का सर्टिफिकेट लेकर गया। डेढ़ सौ से अधिक फर्जी सर्टिफिकेट दिया गया है। उसके बावजूद भी ना कोई कोट गया ना कोई इलेक्शन कमीशन गया। हारा हुआ कैंडिडेट भी भाजपा मुख्यालय गया। ईवीएम के बिना चुनाव होना चाहिए। बकाया गन्ना भुगतान को लेकर किसान नेता ने कहा कि किसानों का डिजिटल भुगतान होना चाहिए। जब देश डिजिटल की ओर जा रहा है तो फिर किसानों का भी भुगतान डिजिटल रूप से होना चाहिए। लेकिन देश पर व्यापारी हावी है। यहां के लोगों से बात करेंगे। जमीनी मुद्दों को जानेंगे और संगठन को कैसे मजबूत किया जाए और उसे विस्तार दिया जाए। इसकी समीक्षा भी करेंगे। स्वागत के दौरान प्रदेश सचिव ओम प्रकाश वर्मा, जिलाध्यक्ष रामकुमार वर्मा, सरदार सुखविंदर सिंह, निवास वर्मा, गुरुवंत सिंह, गुरु प्रताप सिंह, मनकीरत सिंह, हरपाल सिंह, मुंशीराफ अहमद मौजूद रहे।

महज 100 रुपये के लिए कर दी दोस्त की पीट-पीटकर हत्या, आरोपी दोस्त गिरफ्तार

गाजियाबाद, एजेंसी

महज 100 रुपये के लिए एक युवक की ईंट से पीट-पीटकर हत्या कर दी गई. कातिल कोई और नहीं बल्कि उसका दोस्त ही निकला. पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए आरोपी सरफराज को गिरफ्तार किया है. मामला बेहद चौंकाने वाला है. पुलिस आगे की जांच-पड़ताल कर रही है. मामला गाजियाबाद के मधुबन बापूधाम इलाके का है. 19 तारीख को शाहरुख नाम के युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई थी और लाश को फेंक दिया गया था. पुलिस ने लाश को बरामद किया और मामले की जांच-पड़ताल शुरू की. पुलिस ने मैन्युअल सर्विलांस और सीसीटीवी की मदद से मामले का खुलासा किया है. पुलिस ने मृतक शाहरुख के दोस्त सरफराज को गिरफ्तार किया है. आरोपी सरफराज ने पुलिस को कई चौंकाने वाली बातें बताई हैं. शाहरुख और सरफराज के बीच 100 रुपए के लेनदेन का मामला था. 19 दिसंबर को दोनों ने शराब पी, इसके बाद सरफराज ने शाहरुख से अपने रुपये मांगे. लेकिन शाहरुख ने आनाकानी की जिसके बाद दोनों के बीच विवाद हो गया. आरोप है कि शाहरुख ने गाली दी तो सरफराज भड़क गया और उसने पास में पड़ी हुई ईंट शाहरुख के सिर पर दे मारा, जिससे उसकी मौत हो गई. लाश को मधुबन बापूधाम इलाके में ही फेंक कर आरोपी फरार हो गया. पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि वारदात में सरफराज के साथ और कौन व्यक्ति शामिल था. एनसीआर में मामूली सी बात पर एक दूसरे का खून बहाने की घटनाएं परेशान करने वाली है.

ज्ञानवापी सर्वे रिपोर्ट पक्षकारों को उपलब्ध कराने पर तीन जनवरी को सुनवाई

लखनऊ, एजेंसी

वाराणसी की जिला अदालत ने ज्ञानवापी परिसर के सर्वेक्षण की सील बंद रिपोर्ट का लिफाफा खोलने और पक्षकारों को सर्वेक्षण रिपोर्ट उपलब्ध कराने पर सुनवाई करने के लिये आगामी तीन जनवरी की तारीख तय की है। हिंदू पक्ष के अधिवक्ता मदन मोहन यादव ने यह जानकारी दी। यादव ने बताया कि शुक्रवार 22 दिसंबर को बार काउंसिल के चुनाव को देखते हुए अधिवक्ताओं ने आज कार्य से विरत रहने का फैसला लिया था। इसको देखते हुए जिला न्यायाधीश ए.के. विश्वेश ने सुनवाई के लिए तीन जनवरी की तारीख तय की है। मुस्लिम पक्ष के वकील अखलाक अहमद ने कहा कि वकील शुक्रवार को होने वाले बार काउंसिल चुनाव में व्यस्त हैं और अदालती कामकाज में भाग नहीं ले रहे हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने गत 18 दिसंबर को जिला अदालत में ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के सर्वे की रिपोर्ट एक सीलबंद लिफाफे में पेश की थी। यह सर्वे 17वीं शताब्दी में काशी विश्वनाथ मंदिर के बगल में स्थित ज्ञानवापी मस्जिद का निर्माण वहां पहले से ही मौजूद मंदिर को तोड़कर किये जाने के याचिकाकताओं के दावे के बाद अदालत के आदेश पर कराया गया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि मस्जिद का निर्माण हिंदू मंदिर की पहले से मौजूद संरचना पर किया गया था या नहीं। अदालत ने सीलबंद रिपोर्ट खोलने और उसकी प्रतियां दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं को सौंपने के लिए 21 दिसंबर की तारीख तय की थी। मुस्लिम पक्ष ने उस दिन कोर्ट से सर्वे रिपोर्ट को सार्वजनिक न करने की अपील की थी। ज्ञानवापी मस्जिद का सर्वेक्षण जिला अदालत के गत 21 जुलाई के आदेश पर किया गया था जिसमें मस्जिद के गुंबदों, तहखानों और पश्चिमी दीवार के नीचे सर्वेक्षण की आवश्यकता का उल्लेख किया गया था। इसमें कहा गया था कि एएसआई को इमारत की उम्र और प्रकृति का निर्धारण करने के लिए कुर्सी और खंभों की भी जांच करनी चाहिए। अदालत ने एएसआई से यह सुनिश्चित करने को कहा था कि विवादित जमीन पर खड़े ढांचे को कोई नुकसान न हो।

संक्षिप्त खबरें

बेलगाम ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार शिक्षक की दर्दनाक मौत

आरा। जिले के कोइलवर थाना क्षेत्र के कोइलवर- चांदी मार्ग पर फरहंगपुर गांव के समीप तेज रफ्तार से आ रही बालू लदा ट्रक ने बाइक सवार शिक्षक को कुचल दिया।जिसके बाद स्थानीय लोगों ने घायल शिक्षक को कोईलवर स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के लिए भर्ती कराया जहां से बेहतर इलाज के लिए डॉक्टर ने उन्हें बिहटा स्थित ईएसआईसी अस्पताल में रेफर कर किया गया।जहां इलाज के दौरान शिक्षक की मौत हो गई। मृतक शिक्षक की पहचान बिहटा थाना क्षेत्र के जिनपुरा गांव निवासी स्व. श्रीमन नारायण शर्मा का 48 वर्षीय पुत्र जितेंद्र नारायण शर्मा के रूप में किया गया। मृतक जितेंद्र कुमार भोजपुर जिले के संदेश प्रखंड के अहपुरा गांव स्थित झुगी झोपड़ी में नियोजित शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। रोज की तरह गुरुवार को भी अपने बाइक से सही समय पर स्कूल जा रहे थे।

सरकारी जमीन पर कब्जा को लेकर दो पक्षों में हुई झड़प

करगहर (रोहतास) बुधवार की देर शाम पड़वलिया गांव में सरकारी भूमि पर कब्जा को लेकर दो पक्षों में हुई हिंसक झड़प में दो महिलाओं समेत पांच लोग बुरी तरह जख्मी हो गये। जिसका सदर अस्पताल सासाराम में ईलाज जारी है।बताया जाता है कि सरकारी जमीन पर कब्जा करने के लिए पड़वलिया निवासी अखिलेश कुमार सिंह उर्फ जोखन यादव तथा गांव निवासी संतोष यादव और वशिष्ठ यादव के बीच काफी दिनों से विवाद चल रहा था।इस बीच में संतोष यादव की फूस की झोपड़ी में किसी ने आग लगा दी।जिस झोपड़ी के जलाने की बात को लेकर दोनों पक्षों में बकझक होने लगी।इसी बीच एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप और गाली गलौज के बाद लाठियां चलने लगी। इस मारपीट की घटना में अखिलेश सिंह उर्फ जोखन यादव ,संतोष यादव, वशिष्ठ यादव ,मानती देवी, सरोज देवी आदि बुरी तरह जख्मी हो गए।

अज्ञात वाहन ने ई-रिक्शा में मारी टक्कर, चार जख्मी

करगहर (रोहतास) गुरुवार को वैश्यपूरा गांव के बधार में एक अज्ञात वाहन ने ई-रिक्शा में टक्कर मार दी। जिसमें झारखंड की 3 महिला सहित चार मजदूर बुरी तरह जख्मी हो गए।जिन्हें कैमूर जिला के कुदरा स्थित निजी अस्पताल में भर्ती किया गया है।बताया जाता है कि धान की कटनी करने आए झारखंड के गढ़वा जिला के भूईयां बीघा गांव के मजदूर धान की कटनी करने के लिए आए थे।जो खाली समय में एक ई रिक्शा में सवार होकर से बाजार जा रहे थे। इस बीच वैश्यपूरा गांव के बधार में तेज गति से आ रहे एक अनियंत्रित वाहन ने ई-रिक्शा में टक्कर मार दी। जिसके बाद ई-रिक्शा गहरे खाई में जा गिरी। जिसमें सवार मजदूर ललिता भुईयां, शनिचरी देवी, कलापो देवी और पूजा देवी बुरी तरह जख्मी हो गए।

सरकारी जमीन पर अवैध अतिक्रमण हटाने का सीओ ने दिया निर्देश

राजपुर (रोहतास) प्रखंड क्षेत्र के स्थानीय बाजार के चौक स्थित जानकी मार्केट की अवैध तरीके से किये गए घेराबंदी को हटाने के लिए अंचलाधिकारी ने निर्देश दिया है।जानकारी देते हुए अंचलाधिकारी ने बताया कि घेराबंदी किए पक्ष को समझाते हुए कहा गया है कि रजिस्टर टू में भूमि जिसके नाम दर्ज है।नयायालय का कोई फैसला रैयत के विरुद्ध नहीं आने तक सरकार उक्त भूमि पर रैयत का स्वामित्व मानती है।कागजातों की जांच कर घेराबंदी किए पक्ष के लोगों को समझाते हुए कहा कि न्यायालय के जिस पत्र को आप दिखा रहे को अंतिम आदेश नहीं माना गया है।वही न्यायालय ने स्वीकार किया है कि आपलोग नबालिक थे।न्यायालय में आपके पक्ष को रखने वाला कोई लीगल तरीके से नही मौजूद था।अतः उक्त वाद को पुनर्जीवित किया जाता है।जो विगत 16 दिसंबर को न्यायलय ने बाद पुनर्जीवित करने का फैसला दिया है न की हिस्सेदारी का।

लोगों ने समस्या से जुड़ी 299 आवेदन दिया

काराकाट (रोहतास) रोहतास जिला पदाधिकारी नवीन कुमार के निर्देश पर काराकाट प्रखंड के अमरथा पंचायत के सामुदायिक भवन कंचनपुर में जनकल्याण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं से जुड़े कुल 299 आवेदन दिये।जिसमें सबसे अधिक 150 आवेदन आवास योजना को लेकर है। इसके अलावा राशनकार्ड के लिए 125, स्वास्थ विभाग से 12, समाजिक सुरक्षा से 01, पंचायती राज्य विभाग से 02, विद्युत विभाग से 3 राजस्व से 6 आवेदन प्राप्त हुए हैं। शिविर में प्रखंड विकास पदाधिकारी काराकाट राहुल कुमार सिंह, प्रभारी अंचलाधिकारी चंदन कुमार, पंचायत राज पदाधिकारी काराकाट रेणुका कुमारी, पशू चिकित्सा से श्यामदेव कुमार, संजीव लाल, आवास सहायक मनीष कुमार सहित ग्रामीण लोग उपस्थित थे।

पटना से पहुंची कायाकल्प की टीम ने सीएचसी की की जांच

प्रात : किरण संवाददाता

कैमुर भगवानपुर। बेहतर अस्पताल व उसके बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के चयन को लेकर गुरुवार को पटना से पहुंची कायाकल्प की दो सदस्यीय टीम ने बाबू शिव गोविंद प्रसाद अग्रवाल मेमोरियल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पहुंचकर उसकी जांच की।

सर्वप्रथम विकास पांडेय व विकास सिंह की संयुक्त नेतृत्व वाली टीम ने सीएचसी परिसर में स्थित हर्बल प्लांट्स व केंद्रीकृत जैव चिकित्सा अपशिष्ट संग्रहण कक्ष का जांच किया। फिर सीएचसी में प्रवेश कर फामेर्सी, डस्टबिन, ओपीडी, डेंटल ओपीडी, एनसीडी क्लिनिक/पीएमडब्ल्यू, लैब रुम, ड्रेसिंग रूम, जेनरल वार्ड, शुद्ध पेय जल के लिए लगाई आरओ मशीन, महिला व पुरुष प्रसाधन कक्ष, फैमिली प्लानिंग रुम, स्टरलाईजेशन कक्ष, प्रसव कक्ष तथा प्रसव कक्ष के साथ-साथ कई अन्य कमरों की साफ-सफाई एवं उनसे संबंधित अन्य व्यवस्थाओं की जांच की। जांच के क्रम में जेनरल वार्ड के मटमैले फर्श को देख टीम ने एनजीओ की ओर से बहाल किए गए सफाईकर्मियों को बुलाकर उनके द्वारा किए जाने वाले साफ-सफाई के प्रक्रिया के बारे में बारिकी से पूछताछ की तथा उचित साफ-सफाई के तरीके को बताते हुए उक्त सफाईकर्मियों को भविष्य में अस्पताल की अच्छी तरह से साफ-सफाई करने का निर्देश दिया। वहीं साफ-सफाई में बाजार में मिलने वाले फिनाइल के जगह स्वास्थ्य विभाग के फिनाइल को उपयोग में लाने की बात कही। इसी क्रम में लैब कक्ष में पहुंची टीम ने एलएफटी, केएफटी, सुगर इत्यादि टेस्ट के प्रक्रिया के बारे में टेक्निशियन से पूछ-ताछ की तथा लैब के तमाम जांचों से संबंधित कई आवश्यक निर्देश भी ड्यूटी में तैनात टेक्निशियन को दिए।

अगले क्रम में स्टरलाईजेशन कक्ष में पहुंची टीम ने मौके पर उपस्थित महिला स्वास्थ्य कर्मियों से ऑपरेशन में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों को मशीन से वाश करने के तरीके की प्रक्रिया के बारे में जानकारी ली, दरअसल टीम द्वारा पूछा गया कि संबंधित उपकरणों की धुलाई कितने तापमान पर व कितने समय तक किया जाना चाहिए ? इस दौरान टीम ने ओपीडी सेवा तथा इमर्जेसी रजिस्टर तथा सर्विस बुक समेत अस्पताल के कई अन्य बिंदुओं की जांच-पड़ताल की । पूछने पर टीम ने बताया कि जांच में फिलहाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था काफी हद-तक संतोष जनक पायी गई है, विशेष रूप से एक कमी यह है कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का चौतरफा बाउंड्री वॉल नहीं है, कहीं-ना-कहीं सीएचसी के हिस्से में बहने वाली नाली के निकासी की समस्या बाउंड्री वॉल निर्माण में बाधा बन रही है। इसलिए बाउंड्री वॉल निर्माण से पहले नाली को कवर कर उसके पानी को उचित ठिकाने पर पहुंचाने की प्राथमिकता है। बाउंड्री वॉल निर्माण के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रखंड विकास पदाधिकारी को आवेदन दिया जाएगा। जांच के दौरान सीएचसी के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ संजीव कुमार, बीएचएम तारकेश्वर उपाध्याय तथा बीसीएम शिवानंद पांडेय के साथ कई अन्य स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थें।

नगर पंचायत में आयुष्मान भारत कार्ड शिविर का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के कोइलवर नगर पंचायत में आज शुक्रवार को आयुष्मान भारत कार्ड शिविर लगाया जायेगा। नगर पंचायत स्थित आयुष्मान भारत कार्ड शिविर में हिस्सा लेकर पात्र लोग अपना आयुष्मान कार्ड बनवा सकते हैं।

नगर पंचायत कोइलवर के कार्यपालक पदाधिकारी रामविलास दास ने बताया कि आयुष्मान कार्ड लोगों की बीमारियों में वरदान साबित हो रहा है। इस लाभ को जन-जन तक पहुंचाने का उद्देश्य को लेकर आज शुक्रवार को नगर पंचायत कार्यालय में एक शिविर का आयोजन किया गया है। शुक्रवार को 12 बजे से आप सभी लोग नगर पंचायत कार्यालय में आकर आयुष्मान कार्ड बनवाकर इसका लाभ ले सकते हैं। आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए आपको राशन कार्ड और आधार कार्ड लेकर कार्यालय आना होगा।

जीविका एवं मत्स्यपालन की संयुक्त योजनाओं की समीक्षा बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। उक्त समीक्षा बैठक में मुख्य रूप से मनरेगा के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, कार्यपालक अभियंता, सहायक अभियंता, जीविका के डी पी एम तथा मत्स्य विकास पदाधिकारी के साथ तीनों विभाग से कई वरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे। समीक्षा में तीनों विभागो के द्वारा संचालित पूर्व से क्रियाशील योजनाएं की समीक्षा की गई । उसके उपरांत संबंधित पदाधिकारियों /कर्मियों को विभागीय कार्यो को शीघ्र निष्पादित करने का निर्देश दिया गया। जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा ,को मनरेगा कार्यो में नए वेंडर के चयन के पश्चात पुराने भेंडर को यथा शीघ्र फ्रिज करना, जिले से प्राप्त सूची के अनुसार बायोगैस प्लांट लगाना। डी पी एम जीविका को 490 जीविका दीदियों से नए उद्योग लगाने हेतु प्राप्त आवेदनों में से योग्य लाभुको का चयन करना ,साथ ही साथ जीविका दीदियों को नया उद्योग लगाने हेतु प्रशिक्षण के द्वारा इंवेस्टमेंट प्लान तैयार कर प्रस्तुत करना। जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा से समन्वय स्थापित करके उदवंत नगर प्रखंड में मनरेगा से नया ग्रामीण हाट बनवाना तथा ग्राम संगठन भवन निर्माण हेतु आरा, बड़हरा ,बिहिया, चरपोखरी , गणहनी एवं शाहपुर प्रखंड के अंचलाधिकारी से समन्वय स्थापित करके एनओसी प्राप्त करने का निर्देश दिया गया । मत्स्य विभाग को निर्देश दिया गया कि जीविका दीदियों का चयन कर फिश प्रोसेसिंग,पर्ल फार्मिंग, क्रेब ,प्रोन्स, उत्पादन हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना इत्यादि ।

सुदामा का चरित्र और कृष्ण का मित्र प्रेम अद्वितीय : अजय कृष्ण शास्त्री

आरा। राधा कृष्ण परिवार के तत्वाधान में आयोजित भागवत कथा के छठे दिवस पर आयोजित कथा में व्यासपीठ से आचार्य अजय कृष्ण शास्त्री जी ने आज बड़े ही सुंदर तरीके से कृष्ण सुदामा के मित्रता का वर्णन किया उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण और सुदामा बचपन के मित्र और गुरुकुल में सहपाठी थे और उन्होंने गुरु सांदीपनि के मार्गदर्शन में अध्ययन किया था उनकी शिक्षा पूरी होने पर वह अलग हो गए लेकिन कृष्ण और सुदामा अलग नहीं हुए एवं अपनी दिव्य मित्रता को नही भुल पाए आज के जमाने मे भी कृष्ण और सुदामा की दोस्ती एक मिशाल है जब भगवान कृष्ण बालपन में ऋषि संदीपन औए यहाँ शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तो उनकी मित्रता सुदामा से हुई जहां एक तरफ कृष्ण जी का जन्म एक राजपरिवार में हुआ था वही सुदामा ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए परंतु आज भी दोनों की दोस्ती का गुणगान पूरी दुनिया करती है शिक्षा दीक्षा समाप्त होने के बाद भगवान श्री कृष्ण राजा बन गए वहीं दूसरी तरफ सुदामा के बुरे दिन शुरू हो गए अपनी स्थिति खराब होने के बाद सुदामा की पत्नी ने उन्हें राजा कृष्ण से मिलने जाने ले लिए कहा वही पत्नी का जिद मानकर सुदामा अपने बाल सखा कृष्ण से मिलने उनकी नगरी द्वारका गए जब राजा कृष्ण अपने मित्र सुदामा के आने का संदेश पाकर वह खुद नंगे पैर उन्हें लेने के लिए दौड़ पड़ते हैं।

भाजपा ओबीसी मोर्चा का बैठक संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर भारतीय जनता पार्टी अतिपिछड़ा मोर्चा का बैठक आज वृहस्पतवार (21/12 /2023) को रॉयल हेरीटेज रिजॉर्ट चंदवा में जिला पदाधिकारी एवं मंडल पदाधिकारियों के साथ एक बैठक किया गया। जिसमें मिशन 2024 चार सौ पार को लेकर एक बार पुनः प्रधानमंत्री को जितने को लेकर कई विभिन्न मुद्दों पर चर्चा किया। वही इस बैठक की अध्यक्षता भारतीय जनता पार्टी के अतिपिछड़ा मोर्चा के जिलाध्यक्ष ऋतुराज जी के अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री आनंद गोपाल पंडित ने किया। जिसमे जिला महामंत्री हरेंद्र सिंह चन्द्रवंशी,जिला उपाध्यक्ष शेखर गुप्ता, रवि गुप्ता, मीडिया प्रभारी सतीश गुप्ता,बच्चन प्रसाद, चंदन कुमार, नरेश प्रसाद,श्रवण कुमार ,आशीष कुमार, जंगबहादुर यादव,भोला चौधरी,विजेंद्र ठाकुर, पिंटु सहनी,मनोज ठाकुर आदि दर्जनो अतिपिछड़ा कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

उप राष्ट्रपति के साथ अपमानजनक और अमर्यादित टिप्पणी करने के विरोध मे किया पुतला दहन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भारतीय जनता पार्टी भोजपुर किसान मोर्चा ने स्थानीय त्रिभुआनी मोड़ स्टेशन रोड आरा मे पिछले दिन तृणमूल कांग्रेस सहित इंडी नेताओं द्वारा देश के माननीय उपराष्ट्रपति सह राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ के प्रति अपमानजनक और अमर्यादित टिप्पणी एवं मिमिक्री बनाने के विरोध मे पुतला दहन किया गया।

पुतला दहन कार्यक्रम की शुरूआत सरकारी बस स्टैंड से तृणमूल कांग्रेस मुदार्बाद, इंडी गठबंधन मुदार्बाद,कल्याण बनर्जी मुदार्बाद, राहुल गांधी हाय-हाय,संवैधानिक पद और संवैधानिक संस्थान का अपमान नही सहेगा हिन्दुस्तान, इंडी गठबंधन के नेता शर्म करो आदि नारे के साथ काफिला आगे बढा और त्रिभुआनी मोड़ पर कल्याण बनर्जी का पुतला दहन किया गया। उक्त अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गा राज ने कहा कि इंडी गठबंधन घमंडिया गठबंधन है।उस गठबंधन के नेताओं को भारत की संस्कृति, संविधान और संवैधानिक संस्थान तथा संवैधानिक पदो का अपमान करने मे मजा आता है। जिस प्रकार तृणमूल पार्टी के सांसद कल्याण बनर्जी ने संवैधानिक पद पर आसीन माननीय उपराष्ट्रपति सह राज्यसभा सांसद जगदीप धनखड़ का मिमिक्री और काँग्रेस के बड़ा नेता राहुल गांधी द्वारा विडियो बनाया गया और उसमे शामिल सभी इंडी नेताओं द्वारा खिल्ली उड़ाया गया,इससे साफ साबित होता है कि इंडी नेताओं को न संविधान की चिन्ता है और न ही संवैधानिक पद की चिन्ता है। उन्होने जाट समुदाय से आने वाला एक पिछड़ा वर्ग का अपमान किया है।उक्त अपमानित कृत्तव को पूरा देश ने देखा। उनके द्वारा किए गए कुरीतियों पर महामहिम राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री द्वारा भी खेद ब्यक्त किया गया है। इंडी गठबंधन द्वारा देश को शर्मसार करने का काम किया गया है।आज पूरे देश मे भारतीय जनता पार्टी द्वारा इसका विरोध किया जा रहा है। भाजपा सड़क से संसद तक विरोध कर रही है। कार्यक्रम मे किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष विद्यासागर पांडेय,ई.धीरेन्द्र सिंह,कौशल यादव,नरेन्द्र तिवारी, राकेश सिंह,अशोक शर्मा, प्रहलाद राय,संजय कुमार सिंह,संतोष चंद्रवंशी,चन्द्रभान सिंह,ममता सिंह,हरेन्द्र चंद्रवंशी, वरूण सिंह,राहुल सिंह,निशांत सिंह सेंगर,आलोक अंजन,आशीष कुमार, अविनाश कुशवाहा, अभिमन्यु सिंह,परमजीत सिंह,मनीष कुमार, गुड्डू सिंह,अजय सिंह,विनोद सिंह,श्रीराम महतो,आरती सिंह,सुगंधा सिंह,अखिलेश पांडेय सहित भाजपा, किसान मोर्चा के सैकडो. कार्यकर्ता और समर्थक थे।

सहार प्रखण्ड के कोरनडिहरी पंचायत में जनसंवाद का कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा । भोजपुर पंचायत कोरनडिहरी में जनसंवाद का कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम का उद्घाटन भोजपुर उप विकास आयुक्त सदर अनुमंडल पदाधिकारी एवं पंचायत के मुखिया रामसुभक सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया गया।

जिला प्रशासन के द्वारा जन संवाद कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को समस्या सुनी गई जिले से आए हुए पदाधिकारी ने उनकी समस्या सुनी और निवारण करने के लिए कर्मचारियों को आदेश दिया गया वहीं पंचायत के मुखिया रामसुभक सिंह ने आए हुए पदाधिकारी को अंग वस्त्र एवं बुके देकर सम्मानित किया वहीं पंचायत के मुखिया रामसुभक सिंह ने उप विकास आयुक्त भोजपुर को अंग वस्त्रबुके से सम्मानित किया वहीं मुखिया ने अपने पंचायत की समस्याओं को वरीय पदाधिकारी के सामने रखा और उप विकास आयुक्त ने सरकार के योजनाओं को बारे में विस्तार से बताया और कहा कि आपकी पंचायत की समस्या को हमने सुना है और कोशिश रहेगी हमारी की जल्द से जल्द इस समस्या को हल करने का प्रयास करेंगे इस कार्यक्रम में भोजपुर के सभी पदाधिकारी प्रखंड विकास अधिकारी जनप्रतिनिधि राम सुभाष सिंह मुखिया के अलावा अन्य कर्मचारी एवं पंचायत के ग्रामीण बढ़ चढ़कर हिस्सा लिए मंच संचालक विजय सिंह ने किया की धन्यवाद ज्ञापन भोला जी ने किया।

मोदी गारंटी योजनाओं से लाभान्वित हो रहें लोग

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) भाजपा कार्यकताओं के बीच मोदी की गारंटी का एलईडी वैन गुरुवार को प्रखंड क्षेत्र के मानपुर पंचायत ग्रामीण जनता के बीच पहुंची। जहां विकसित भारत संकल्प यात्रा को लेकर विशेष आयोजन किया गया। जिस आयोजन में एलइडी वैन माध्यम से पंचायत की जनता को जन कल्याणकारी योजनाओ को स्क्रीन पर दिखा उन्हें जागरूक किया गया। वही जिला उपसचिव पारुल सिंह ने पंचायत कार्यक्रम को संबोधित करते हुए लोगों को बताया कि प्रधानमंत्री मोदी गारंटी वैन पंचायत सहित शहरों में भ्रमण करते कल्याणकारी योजना से सभी लोगों जागरूक कर रहीं है। ताकि कोई भी व्यक्ति योजना लाभ से वंचित नहीं रह सकें। जबकि कार्यक्रम का संचालन कर रहे लोक सेवक नवीन चंद्र शाह ने सरकार के विभिन्न योजनाओं को जनता के समक्ष रखते हुए उपस्थित ग्रामीणों के बीच फोल्डर व कैलेंडर का वितरण भी किया गया। वही भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने हेतु संकल्प को दोहराया गया। इस मौके पर सरकारी कर्मियों ने बातों को रखते हुए कृषि उपकरण ड्रोन का भी प्रयोग किया। इस कार्यक्रम अवसर पर नोडल पदाधिकारी रामप्रवेश,राकेश कुमार पांडे, पंचायत समिति सदस्य धर्मेंद्र सिंह, पीएनबी बैंक कर्मी पंकज कुमार, दीपक कुमार, पंकज सिंह, एनम पूजा कुमारी, सिएचओ निरंजन कुमार, रणजीत सिंह, प्रिंस कुमार सहित ग्रामीण जनता अरविंद राम, सुरेंद्र चौधरी,गोपाल पांडे,अभिकर्मक शर्मा, सतीश कुशवाहा, सुनील सिंह, देवेंद्र पांडे, संजय तिवारी सहित जीविका कर्मी उपस्थित थें।

राग जोग में श्रृंगार प्रधान बंदिशों ने दर्शकों का मन मोहा

प्रात : किरण संवाददाता

आरा :लीजेंड बक्शी कुलदीप नारायण सिन्हा मेमोरियल कल्चरल सोसायटी की ओर से आयोजित साप्ताहिक कार्यक्रम गुरुवासरे संगीत सभा का उद्घाटन संरक्षक सुशील कुमार देहाती ने दीप प्रज्जवलित कर किया। स्थानीय महाजन टोली स्थित ठाकुरबाड़ी प्रांगण में इस सांगीतिक सभा को संबोधित करते हुये सुशील कुमार देहाती ने कहा ने कहा कि भारतीय शास्त्रीय संगीत एक मात्र ऐसी प्राचीन शैली जो जिसमें नवीनीकरण के कई आयाम जुड़ते गये। आज पूरे विश्व में इस संगीत की लोकप्रियता बढ़ रहीं है। राग संगीत एक ओर हमारा ध्यान केंद्रित करता है तो दूसरी ओर मन मस्तिष्क को नई ऊर्जा से भर देता है। इस अवसर पर प्रमुख कलाकार युवा गायक रौशन किशोर ने राग जोग में झपताल की बंदिश "पिया मोरा मानो बतिया" व तीनताल की बंदिश "प्रीत की डोर में हमतुम साजन " खमाज में ठुमरी " सैयां रूठ गये मै मनाती रहीं" दादरा "रंगी साड़ी गुलाबी चुनरिया रे मोहे मारे नजरिया सांवरिया रे व भजन "पायो जी मैने राम रत्न धन पायो " प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। विभिन्न तालों में लयबद्ध बंदिशों ने दर्शक का मन मोह लिया। वहीं नृत्यांगना रितम दुबे ने कथक नृत्य में गणेश वंदना, तीनताल में उपज, ठाट, आमद, तोड़े ,टुकड़े व तिहाई समेत ठुमरी "काहे रोकत डगर प्यारे नंदलाल मोरे" प्रस्तुत कर तालियां बटोरी। हारमोनियम पर श्रेया पाण्डेय व तबले पर गुरु बक्शी विकास ने संगत किया।

अखिल भारतीयवर्षीय चंद्रवंशी के महासचिव अतिपिछड़ा समाज से मिलें

सासाराम (रोहतास) बिहार अखिल भारतवर्षीय चंद्रवंशी क्षत्रीय महासभा के जिला महासचिव प्रेम प्रकाश चंद्रवंशी तिलौथू प्रखंड के दुबौली गांव का भ्रमण किया। जहां चंद्रवंशी समाज के लोगों के साथ बैठक करते उनकी समस्याओं को सुना। साथ ही साथ प्रखंड के क्षेत्रीय स्थिति का जायजा लिया। जहां मिट्टी के घरों में निवास कर गरीब लोगों मिलकर उनकी दुख दर्द की आपबीती सुना। जहां उन्होंने सरकार और गरीब समाज के स्थापित संबंध में उजागर करते हुए बताया कि अति पिछड़ा समाज आज देश में सबसे निचले स्तर पर जा चुकी है। जिन्हें राज्य और केंद्र सरकार से किसी भी योजना का लाभ नही मिल रहा है। जिन्हें चुनाव में विभिन्न दलों की पार्टियां केवल वोट के लिए इस्तेमाल कर रही है।

बाइक के टक्कर दो लोग जख्मी, एक स्थित गंभीर

कोचस (रोहतास) नगर पंचायत कोचस के पोस्ट ऑफिस के निकट दो बाइक आपस में भिड़ गई जिसमें दोनों बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बारे में बताया जाता है की दोनों बाइक सवार युवक कोचस के रास्ते कहीं जा रहे थे कि कोचस नगर पंचायत के पोस्ट ऑफिस के समीप तेज रफ्तार की वजह से दोनों बाइक आपस मे टकरा गई जिसमें दोनो बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गये। घटना स्थल पर मौजूद लोगों ने दोनो घायल व्यक्ति को कोचस के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए जहां मौके पर तैनात डॉ० तुषार कुमार ने इलाज के बाद करगहर निवासी अरविंद कुमार का स्थिति खतरे से बाहर बता घर भेजे दिया।

भाजपा ने गड़हनी में विधानसभा स्तरीय कोर कमेटी का किया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

गड़हनी। आगामी लोकसभा चुनाव व संगठन मजबूती को ले भाजपा ने गड़हनी में विधानसभा स्तरीय एक बैठक किया। बैठक एम एल सी जीवन कुमार के नेतृत्व में की गई। बैठक में अगियांव विधानसभा के सभी मंडल अध्यक्ष भी मौजूद थे। बैठक में 25 जनवरी को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन पर सुशासन दिवस धूमधाम से बनाने को ले निर्णय लिया गया। एमएलसी जीवन कुमार ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी एक भाजपा के कदावर नेता और देश के सबसे लोकप्रिय प्रधानमंत्री में से एक थे। उनके नेतृत्व में देश एक अच्छे मुकाम पर पहुँचा था। इसलिय 25 जनवरी को उनका जन्मदिन सभी पार्टी के नेता व कार्यकर्ता धूमधाम से बनाये। साथ ही कहा कि पार्टी को सभी मंडल में बूथ स्तर तक अपना कार्यकर्ताओ को मजबूत करें। इस मौके पर अगियांव मंडल अध्यक्ष रमाकांत चंद्रवंशी ,चरपोखरी मंडल अध्यक्ष विक्की सिंह, दयाशंकर सिंह, कुमार अरविंद सिंह, बिरबहादुर सिंह, अभिषेक सिंह बिशेन, रामसागर सिंह, बिनय सिंह, चंदन सोनी, बिजय पासवान सहित कई नेता व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

गड़हनी प्रखण्ड दलालों के कब्जे में,कई पदाधिकारी व कर्मचारी रोजाना पहुँचते हैं लेट

प्रात : किरण /मुरली मनोहर जोशी

गड़हनी(भोजपुर) ।जिले के गड़हनी प्रखण्ड में पदाधिकारी से लेकर कर्मचारियों तक बेलगाम हो गए हैं।रोजाना ग्यारह बजे के बाद कार्यालय पहुंचना इनका आदत बन गया हैं।प्रखंड कार्यालय के कई पदाधिकारी हो या अंचल कार्यालय कर्मी सभी का वही हाल हैं।एक दो पदाधिकारी व दो-चार कर्मचारियों को छोड़ अन्य कर्मचारी अधिकारी का हवाला दे मुख्यालय से अक्सर गायब मिलेंगे।कई ऐसे प्रखंडस्तरीय पदाधिकारी जो आज तक मुख्यालय का मुंह तक नही देखे हैं।आपूर्ति पदाधिकारी समेत कई ऐसे अधिकारी हैं कि खोजने के बाद भी नही मिलते। बतादें की गड़हनी प्रखंड में हो रही दलाली व पदाधिकारियों की अनदेखी से प्रखंड क्षेत्र की जनता त्रस्त है।इस प्रखंड में आकर अपना काम करवाने वालो को दलालो, बिचौलियों व नजारानो के दौर से गुजरना होता है।बिना इसके आपका कोई भी काम नही हो सकता। गड़हनी ब्लॉक दलालो के चंगुल में जा चुका है।प्रखंड मुख्यालय पर कोई भी महिला या पुरूष को देख दलाल उसके इर्द गिर्द मंडराने लगता हैं और जल्द काम कराने का नसीहत देने लगते है।जिससे लाभुक उनके झांसा में आकर फंस जाता है। प्रधानमंत्री आवास योजना,बृद्धा पेंशन,जमीन का दाखिल खारिज,शौचालय इत्यादि कोई भी काम कराने को ले पदाधिकारियों द्वारा दलाल लगाए गए हैं। क्योंकि बिना दलालो व बिचौलियों को दिए कोई काम नही होगा।सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना के लिये आवास सहायक,विकास मित्र जैसे कई लोगो को बहाल किया।लेकिन जितना तंत्र लगा उतना ही पैसा चढ़ावा के रूप में चढ़ाना पड़ता हैं।स्थिति यह है कि पैसा वसूली के लिये सहायक के साथ न जाने कितना दलाल गांव गांव घूम कर पैसा वसूली कर रहे है।लाभुक जिस बैंक में पैसा निकासी करने जाता है दलाल वहाँ पहले से उपस्थित रहता है पैसा निकलते ही काम मैं करवाया हुँ का झांसा देकर उससे 10 से 20 हजार रुपये ले लेता है।इस संबंध में स्थानीय पदाधिकारियों से लगातार शिकायते होती रहती है पर ढाक के तीन पात वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए ये नजराना वसूली वाले लोग और उनको नजराना वसूली के लिए लगाए हुए लोगो के कान में चूँ तक नही रेंगता।बिना डर बेखौफ बेधड़क होकर सभी योजनाओं पर अपनी पैनी नजर लगाए ये दलाल इसी फिराक में पूरे दिन प्रखण्ड परिसर में बने रहते है कि बिना नजराना लिए गलती से भी किसी का काम ना हो जाए।वही पदाधिकारियों के क्या कहने,ये लोग तो साहब है और साहब से मिल कर शिकायत कोई कर भी दे तो क्या फर्क पड़ता।क्योंकि बिना साहब के इशारे के मजाल है कि प्रखंड में एक फाइल इधर से उधर हो जाए।वैसे प्रखंड के साहब लोग जल्दी मिलते ही नही किसी से यदि मिल भी लिए तो दिखवा लेता हूं,अगले सप्ताह आईये,बड़ा बाबू से मिल लीजिए,सब प्रोसेस से होता है,आपका फॉर्म गलत था जैसे अनगिनत बहाने रहते है लाभार्थी के पास। लाभार्थी भी क्या करे थक हार कर साहब के केबिन से निकलने के बाद उसके पास वही दलाल वाला रास्ता बचता है।अंत मे वही दलाल मिनटों में उस काम को कर देता है।

बलिगांव व हरपुर निर्विरोध निर्वाचित

गड़हनी।स्थानीय प्रखण्ड के बलिगांव व हरपुर पंचायत में हुए पंच पद के लिए उपचुनाव में तीन प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित किए गए।वही बलिगांव पंचायत में दो वार्ड 4 व 7 में एक-एक प्रत्याशी व हरपुर के वार्ड 1 के लिए भी एक ही प्रत्याशी ग्राम कचहरी पंच सदस्य के लिए नामांकन किया था जिसमे बीते 20 दिसम्बर को स्कूटनी बीडीओ सह सहायक निवार्ची पदाधिकारी गड़हनी के द्वारा की गई।जिसमें तीनो वार्ड में एक-एक प्रत्याशी ही नामांकन किये थे।जिसे तीनो को निर्विरोध ग्राम कचहरी पंच के लिए घोषित किया गया।बतादें की पंचायत उपचुनाव को ले गड़हनी में भी

बैकग्राउंड चाहे कुछ भी हो, इंडस्ट्री में कड़ी मेहनत और संघर्ष हर किसी को करना पड़ता है

बॉलीवुड सुपरस्टार अजय देवगन ने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में अपनी असफलताओं को लेकर बात की है। वह, निर्देशक रोहित शेट्टी के साथ स्ट्रीमिंग चैट शो कॉफी विद करण के अपकमिंग एपिसोड में नजर आएंगे। एक्टर ने कहा कि कड़ी मेहनत और संघर्ष एक ऐसी चीज है जिसकी इंडस्ट्री सभी से समान रूप से मांग करता है, भले ही उनका बैकग्राउंड कुछ भी हो। करण जौहर के एक सवाल का जवाब देते हुए अजय ने कहा, हमने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में असफलताओं को देखा है, हमने लोगों को बर्बाद होते देखा है और मैंने लोगों को यहां आकर संघर्ष करते देखा है और उनमें से कुछ को मैं जानता हूं, कहते हैं कि हम खुद को एक साल देते हैं, अगर कुछ होता है तो हम कुछ करेंगे, वरना पता नहीं... यह छोटी सी उम्मीद है। अभिनेता ने आगे कहा, हर छह महीने में, आप ऑफिस जाते हैं, आपको काम चाहिए और वे कहते हैं हम बताते हैं आपको, तो उसमें एक साल और निकल जाता है, ऐसे करते-करते 30-40 साल निकल जाते हैं, चाहे वो आप फिल्म इंडस्ट्री के हो या ना हो, स्ट्रगल सबके लिए बराबर है और कड़ी मेहनत तो उतनी ही करनी पड़ती है हर किसी को.. वो तो करना ही है यार। रोहित ने कहा, यह बस चलता रहता है। यह कभी खत्म नहीं होता।

रणबीर कपूर से पहले प्रभास की फिल्म को पूरा करेंगे संदीप रेड्डी वांगा

पहले कबीर सिंह और अब एनिमल की कामयाबी के बाद, डायरेक्टर संदीप रेड्डी वांगा बहुत तगड़ी डिमांड में हैं। संदीप उन गिने चुके डायरेक्टर्स में शामिल हो चुके हैं जिनकी बैक टू बैक दो फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर 300 करोड़ रुपये से ज्यादा कलेक्शन किया है। एनिमल के एंड में फिल्म का सीक्वल भी अनाउंस किया जा चुका है। रणबीर इस बार जिस तरह के अवतार में नजर आ रहे हैं उसे देखने के बाद जनता पहली फिल्म से भी ज्यादा एक्साइटेड ज्यादा है। अगर आप भी रणबीर की फिल्म के सीक्वल एनिमल पार्क का इंतजार कर रहे हैं, तो आपको थोड़ा और लंबा इंतजार करना पड़ेगा।

संदीप रेड्डी वांगा, रणबीर कपूर की एनिमल पार्क से पहले अपनी पिछली अनाउंस की हुई फिल्म पर काम करेंगे। एनिमल के मेकर्स ने अपने बैनर तले संदीप की आने वाले प्रोजेक्ट्स की अनाउंसमेंट की है। टी सीरीज के ऑफिशियल सोशल मीडिया हैंडल से संदीप की फिल्मों का लाइनअप शेयर किया गया है। एनिमल के सीक्वल से पहले संदीप, पैन इंडिया स्टार प्रभास की फिल्म स्पिरिट पर काम करेंगे। ये फिल्म काफी पहले अनाउंस कर दी गई थी. रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि प्रभास इस फिल्म में एक कॉप का किरदार निभाने जा रहे हैं।

संदीप की डिमांड कितनी तगड़ी है, इसका सबूत वो सुपरस्टार्स हैं जिनके साथ उनकी फिल्में आ रही हैं। टी सीरीज ने जो लाइन अप अनाउंस किया है, उसके हिसाब से प्रभास की स्पिरिट के बाद संदीप वापस रणबीर के साथ लौटेंगे। ये ब्लॉकबस्टर जोड़ी एनिमल पार्क लेकर आएगी जिसमें रणबीर पहली फिल्म से भी ज्यादा भयानक किरदार करने वाले हैं।

विपुल अमृतलाल शाह ने की 2024 में आने वाली अपनी फिल्मों के लाइनअप की घोषणा

विपुल अमृतलाल शाह और सनशाइन पिक्चर्स ने इस साल अपनी द केरल स्टोरी के साथ एंटरटेनमेंट जगत में धमाका किया है। इस रियल लाइफ बेस्ड फिल्म को ऑडियंस ने अपना प्यार और सपोर्ट दिया और फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ कमाई की। इसके अलावा, सनशाइन पिक्चर्स ने इस साल अपने सबसे बड़े ब्लॉकबस्टर डिजिटल ओरिजिनल शो कमांडो के साथ बड़ी संख्या में दर्शकों को आकर्षित किया है। ऐसे में साल 2023 में शानदार यात्रा के बाद, सनशाइन पिक्चर्स और विपुल अमृतलाल शाह साल 2024 में भी एक जबरदस्त सिनेमाई सफर के लिए तैयारी कर चुके है। जी हां, मेकर्स ने अपने प्रोडक्शन हाउस के साथ साल 2024 के लिए दिलचस्प स्लेट की घोषणा की है। ये प्रोजेक्ट अनाउंसमेंट्स से ही दिलचस्प लग रहे हैं और उन्हें सॉलिड बैकग्राउंड म्यूजिक के साथ अनाउंस किया गया है। अब जैसा कि हम साल 2024 की ओर बढ़ रहे हैं, आइए साल 2024 के लिए अग्रणी प्रोडक्शन हाउस द्वारा की गई विशाल लाइन-अप घोषणा पर एक नज़र डालें।

बस्तर-द नक्सल स्टोरी

द केरल स्टोरी की ब्लॉकबस्टर टीम, निर्माता विपुल अमृतलाल शाह, निर्देशक सुदीप्तो सेन और अभिनेत्री अदा शर्मा 2024 में एक और रोंगटे खड़े कर देने वाली कहानी के साथ वापसी करने के लिए तैयार हैं। और इसका नाम बस्तर - द नक्सल स्टोरी है। यह फिल्म निर्माताओं द्वारा घोषित 2024 की स्लेट की पहली फिल्म है और 5 अप्रैल, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

हिसाब

फिल्म निर्माता विपुल अमृतलाल शाह, जिन्होंने हमें निर्देशक के रूप में आंखें और वक्त- द रेस अगेंस्ट टाइम सहित कुछ सुपरहिट फिल्में दी हैं, फिल्म हिसाब के साथ निर्देशक की कुर्सी पर वापसी करने के लिए तैयार हैं। हालांकि फिल्म से जुड़ी जानकारी को सीक्रेट ही रखा गया है लेकिन फिल्म का निर्माण फिल्म मेकर की सनशाइन पिक्चर्स के तहत किया जाएगा।

सैमुक

विपुल अमृतलाल शाह ने फिल्म सैमुक के लिए फिल्म मेकर कनिष्क वर्मा के साथ सहयोग किया है। यह फिल्म 2024 की स्लेट में घोषित होने वाली तीसरी फिल्म है और घोषणा से ही यह परियोजना रोमांचक लग रही है। इसके साथ निर्माता और निर्देशक अपनी सुपरहिट फिल्म सनक के बाद फिर से एक साथ आए हैं।

गवर्नर

सनशाइन पिक्चर्स ने फिल्म निर्माता अपूर्व सिंह कार्की के साथ हाथ मिलाया है, जिन्होंने इस साल समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म बंदा दी थी। फिल्म की शैली का खुलासा नहीं किया गया है, लेकिन घोषित फिल्म एक ऐसी शैली बताई जा रही है जिसे भारतीय सिनेमा में पहले कभी नहीं देखा या पेश किया गया है। अपूर्व ने मेगा हिट फिल्म सिर्फ एक बंदा काफी है दी है।

बता दें, सनशाइन पिक्चर्स भारत के टॉप फिल्म प्रोडक्शन हाउस में से एक है। सोशल मीडिया पर घोषणा साझा करते हुए, प्रोडक्शन हाउस ने लिखा, भावनाओं के बवंडर के लिए खुद को तैयार रखें! चार आकर्षक कहानियां, चार यात्राएं सामने आने का इंतजार कर रही हैं। सनशाइन पिक्चर्स की लेटेस्ट मास्टरपीस की दुनिया में गोता लगाएं और प्यार में बह जाने के लिए तैयार रहें। हंसी, आँसू, और इनके बीच सब कुछ। जल्द आ रहा है!

पैपराजी पर भड़के सलमान खान

सलमान खान के भाई सोहेल खान ने कल यानी 19 दिसंबर को अपना 53वां जन्मदिन मनाया। इस मौके पर परिवार के अन्य सदस्य उनकी बर्थडे पार्टी में शामिल हुए। पार्टी की रौनक उस वक्त बढ़ गई जब भाई के बर्थडे में सलमान शामिल हुए। लेकिन पैपराजी की किसी हरकत पर सलमान को गुस्सा आ गया। दरअसल पार्टी से बाहर निकलते हुए पैपराजी ने सलमान को देखा। सलमान मां को सुरक्षित कार में बैठाने जा रहे थे। उन्हें कैमरे में कैप्चर करने के लिए पैप्स उनकी कार के पास आ गए। अपनी मां की सुरक्षा और कंफर्ट को देखते हुए सलमान ने पैपराजी पर गुस्सा किया। उन्होंने हाथ से इशारा करते हुए पैपराजी को पीछे हटने के लिए कहा। आपको बता दें कि सलमान के गुस्से से ना केवल बॉलीवुड बल्कि बाहर भी लोग खौफ खाते हैं। हालांकि, ऐसा नहीं है की उन्होंने बाहर किसी पर बेमतलब का गुस्सा किया है, लेकिन उनकी पर्सनालिटी ही कुछ ऐसी है की लोग उनसे डरते हैं।

सोशल मीडिया यूजर्स ने का रिएक्शन कुछ सोशल मीडिया यूजर ने कहा- वो सेलिब्रिटी हैं लेकिन उनकी भी एक पर्सनल लाइफ है। बार बार उन्हें हर जगह जाकर परेशान क्यों करना। वहीं दूसरे ने लिखा- एक बार भाई जान ने मना कर दिया उसके बाद वो खुद की भी नहीं सुनते।

सनी देओल की अगली फिल्म सफर में सलमान खान कैमियो कैरेक्टर प्ले करते नजर आएंगे। इस फिल्म की कहानी बहुत इमोशनल है। फिल्म में सनी देओल और एक चाइल्ड आर्टिस्ट लीड रोल निभाते नजर आएंगे। जो अपने-अपने जीवन में परेशानियों से गुजर रहे हैं। जब सनी ने सलमान से एक कैमियो के लिए रिक्वेस्ट किया, तो उन्होंने तुरंत हां कर दी।

मैं अटल बिहारी वाजपेयी पर किताब लिख सकता हूं

अटल बिहारी वाजपेयी की बायोपिक मैं अटल हूं में उनका किरदार निभाते नजर आने को तैयार पंकज त्रिपाठी का कहना है कि उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री के बारे में इतना कुछ पढ़ा है कि अब वह उन पर किताब लिख सकते हैं।

वह फिल्म के ट्रेलर लॉन्च पर मुंबई में मीडिया से बात कर रहे थे। फिल्म 19 जनवरी, 2024 को रिलीज होने वाली है। अपनी भूमिका के बारे में बात करते हुए पंकज त्रिपाठी ने कहा, हमने फिल्म में उनके जीवन के उन क्षणों को दिखाने की कोशिश की है, जो लोगों को नहीं पता है, जो किसी भी सार्वजनिक मंच पर उपलब्ध नहीं है। मैंने उनके बारे में इतना कुछ पढ़ा है कि मैं उन पर एक किताब लिख सकता हूं, जो इस फिल्म से भी बड़ी होगी। मैंने उनके सभी साक्षात्कार देखे हैं, उनके बारे में इतना कुछ पढ़ा है कि मैं उनके व्यक्तित्व को समझ गया हूं।अपने लुक को सही बनाने के लिए प्रोस्थेटिक्स के इस्तेमाल पर पंकज त्रिपाठी ने कहा, इसमें रोजाना दो घंटे लगते थे। हमने फिल्म की शूटिंग मई और जून में की थी, जब भीषण गर्मी थी। उस लुक को अपनाने के बाद शूट करना वाकई मुश्किल था। मैंने फिल्म के लिए सचमुच अपना खून और पसीना बहाया है।मैं अटल हूं के निर्देशक रवि जाधव हैं। यह फिल्म देश के 10वें प्रधानमंत्री के बहुमुखी व्यक्तित्व को दर्शाता है। वाजपेयी जी को कवि, सज्जन व्यक्ति और मुखर राजनेता के रूप में काफी सम्मान मिला था।

डंकी और सालार के क्लैश पर बोले पृथ्वीराज सुकुमार

बॉक्स ऑफिस वर्ष की दो बहुप्रतीक्षित फिल्मों के बीच रोमांचक टकराव के लिए तैयार हो रहा है। शाहरुख खान की डंकी और प्रभास की सालार - द सीजफायर बैक-टू-बैक रिलीज होने के लिए तैयार हैं। इस क्लैश को लेकर फैंस और फिल्म क्रिटिक्स के बीच काफी हलचल मची हुई है। जहां राजकुमार हिरानी निर्देशित फिल्म 21 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है, वहीं एक दिन बाद 22 दिसंबर को रिलीज होने वाली सालार बॉक्स ऑफिस पर एक-दूसरे को कड़ी टक्कर दे रही है। एडवांस बुकिंग में ये लगातार ट्रेंड कर रहा है। कहा जा रहा है कि शाहरुख खान की डंकी ओपनिंग डे पर रिकॉर्ड तोड़ कमाई करेगी। अब साउथ एक्टर पृथ्वीराज सुकुमार ने डंकी देखने की अपनी एक्साइटमेंट साझा की है. साथ ही बताया कि वह किंग खान के कितने बड़े फैन हैं। पृथ्वीराज सुकुमार ने त्योहारी सीजन और राजकुमार हिरानी और प्रशांत नील जैसे प्रशंसित निर्देशकों द्वारा निर्देशित दो बहुप्रतीक्षित फिल्मों की रिलीज के साथ फिल्म प्रेमियों के लिए आने वाली खुशी पर जोर दिया। अपना उत्साह व्यक्त करते हुए, उन्होंने दोनों फिल्मों को उनके शुरुआती दिन में देखने का इरादा व्यक्त किया। एक्टर ने एएनआई से कहा, यह छुट्टियों का मौसम है और हम सभी फिल्म प्रेमी हैं, हमें राजकुमार हिरानी-शाहरुख खान की फिल्म और प्रशांत नील-प्रभास की फिल्म देखने को मिल रही है, जिसका हम सभी को जश्न मनाना चाहिए। मैं बहुत उत्साहित हूं, मैं ओपनिंग डे पर दोनों फिल्म देखने जा रहा हूं।

शाहरुख और राजकुमार हिरानी के फैन हैं पृथ्वीराज

अभिनेता ने खुलासा किया कि वह डंकी देखने के लिए उत्सुक हैं, क्योंकि वह न केवल शाहरुख खान के फैन हैं बल्कि राजकुमार हिरानी के भी प्रशंसक हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वह मोहनलाल की आगामी मलयालम फिल्म नेरू देखने के लिए भी उत्सुक हैं, जो डंकी और सालार के साथ ही टकरा रही है। पृथ्वीराज उन कुछ अभिनेताओं में से एक हैं, जो विभिन्न भाषाओं की फिल्मों में सहजता से घुलमिल जाते हैं, वह मुख्य रूप से मलयालम फिल्में करते हैं लेकिन उनकी अगली फिल्म तेलुगु है, जो सालार- पार्ट 1- सीजफायर है। जहां वह प्रभास के खिलाफ प्रतिपक्षी की भूमिका निभाते हैं और उसके बाद वह अली अब्बास जफर की बड़े मियां छोटे मियां फिल्म में नजर आएंगे, जहां उनकी टक्कर अक्षय कुमार और टाइगर श्रॉफ से होती है।

जरूरत से ज्यादा सोचते हैं नए अभिनेता

करण जौहर के नए एपिसोड में अजय देवगन और रोहित शेट्टी दिलचस्प खुलासे करते नजर आए। करण जौहर ने दोनों स्टार्स से नई पीढ़ी के कलाकारों के बारे में पूछा? रोहित ने जवाब देते हुए कहा, नए पीढ़ी के कलाकारों को सोशल मीडिया से दूर रहने की जरूरत है। अक्सर देखा जाता है कि सोशल मीडिया पर उन्हें छोटी-छोटी चीजों को लेकर नेटिजंस द्वारा ट्रोल किया जाता है। मुझे लगता है कि वे सोशल मीडिया पर असुरक्षित हैं। हालांकि, मुझे सही से नहीं पता है।

कॉफी विद करण के होस्ट ने आगे पूछा कि क्या नए कलाकार जरूरत से ज्यादा सोचते हैं? रोहित ने करण की बात से सहमत होते हुए कहा, हां बिल्कुल आज की पीढ़ी के कलाकार कुछ ज्यादा ही सोचते है। करण ने आगे कहा, आप ने पहले आसानी से दो-तीन हीरो वाली फिल्में की हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता ऐसी फिल्में आप आगे कर सकते हैं। इस पर अजय ने चुटकी लेते हुए कहा, मुझे नहीं लगता कि रोहित के पास सोलो करने की भी सुरक्षा है। उन्हें यह तय करने में तीन साल लग जाते हैं कि उन्हें यह करना है या वह करना है। करण ने पुरानी और नए पीढ़ी के कलाकारों के साथ काम करने का अनुभव साझा करते हुए कहा, फिल्मों में अभी भी हम लोग अभिनेता के चयन के लिए अजय, शाहरुख, सलमान और अक्षय के पास जाते हैं। मेरा मतलब है कि हम लोग प्रवृत्ति के अनुसार ही पुराने कलाकारों के पास जाते हैं, क्योंकि वे 20 मिनट में ही कहानी को सुनकर पूरी फिल्म को समझ जाते हैं, क्योंकि उन्हें समझ और अनुभव है।

वित्त वर्ष 2024 में बीमा की तैयारी: अपनी बचत को खर्चे बिना किसी आपात स्थिति में वित्तीय रूप से तैयार रहें

नईदिल्ली, एजेंसी। हम सभी पैसे जमाने की इच्छा रखते हैं और ऐसा करने की कुंजी है अनुशासन। अनुशासन व्यवस्थित रूप से और लंबी अवधि के लिए निवेश करने के बारे में है और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह हमारे निवेश की सुरक्षा के बारे में भी है। अचानक में कुछ आपातस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं और इसके कारण या तो उस महीने निवेश करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, या इससे भी बदतर, हमें उन अचानक होने वाली खर्चों को पूरा करने के लिए कुछ निवेशों को बंद करना पड़ सकता है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि आप अपनी निवेश योजना को ऐसी किसी भी स्थिति से सुरक्षित रखें। इसलिए, किसी को बीमा को आपात स्थिति में बचाव के बजाय निवेश रणनीति के हिस्से के रूप में देखना चाहिए।

विशाल गुप्ता, सीइओ, फ़ोनपे इन्श्युरन्स ब्रोकिंग सर्विसेस ने जानकारी देते हुए बताया कि जब हम बीमा को खर्च के बजाय एक रणनीतिक निवेश के रूप में देखते हैं, तो हमें अनिश्चितता, आपात स्थिति या स्वास्थ्य देखभाल खर्चों के समय अपनी बचत में कटौती करने की ज़रूरत नहीं होती है क्योंकि हम पहले से ही बीमाकृत हैं। इसलिए, एक सुव्यवस्थित वित्तीय योजना के लिए तैयारी महत्वपूर्ण है। जब हम तैयार होते हैं, तो संपत्ति निर्माण और बीमा खरीदने पर केंद्रित निवेश साथ-साथ कर सकते हैं, बिना किसी की वृद्धि में बाधा डाले। स्वास्थ्य एवं जीवन बीमा 80ष्ठ और 80ष्ट के तहत कर लाभ भी प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, हाल ही में कोविड-19 महामारी के कारण हुआ वैश्विक संकट ऐसी अचानक होने वाली घटनाओं के खिलाफ जोखिम कम करने और सुरक्षात्मक उपाय के रूप में बीमा के सही महत्त्व का पता चलता है। कई लोगों को अपने वित्तीय लक्ष्य हासिल करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा क्योंकि इस अवधि के दौरान उन्हें स्वास्थ्य खर्चों को पूरा करने के लिए अपनी बचत से पैसा निकालना पड़ा। लेकिन जिन लोगों के पास स्वास्थ्य और जीवन बीमा था वे इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार थे। क्द्धश्ठ्ठद्गक्क पर, हम भारतीयों को प्रभावी ढंग से अपनी बचत बचाने में मदद करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसके लिए निवेश योजना में बीमा की भूमिका की गहरी समझ होना बहुत जरूरी है, खासकर नए साल, 2024 के लिए।

वित्त वर्ष 2024 में सही तरीके से सुरक्षा रणनीति को तैयार करना :क्या आप जानते हैं कि भारत में लोगों की भौतिक संपत्तियों और बैंकों में सावधि जमा में निवेश करने की पारंपरिक रुचि धीरे-धीरे म्यूचुअल फंड और स्टॉक जैसी वित्तीय संपत्तियों में निवेश की ओर बढ़ रही है क्रिसिल मार्केट इंटेलिजेंस एंड एनालिटिक्स द्वारा रिपोर्ट किया गया यह एक उल्लेखनीय बदलाव है। दिलचस्प बात यह है कि यह प्रवृत्ति शेयर बाजार में बढ़ती भागीदारी में परिलक्षित होती है, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (ह्रस्श्व) में डीमैट खातों में साल-दर-साल 26 प्रतिशत की पर्याप्त वृद्धि दर्ज की गई है, जो अगस्त 2023 तक 127 मिलियन तक पहुंच गई है। हालाँकि ऐसी वित्तीय आकांक्षाओं में स्पष्ट वृद्धि हुई है, लेकिन कई लोग अपनी समग्र निवेश रणनीति में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में बीमा को नजरअंदाज करते हैं। यह वित्तीय सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

अधिकतम कवरेज के लिए स्वास्थ्य बीमा तैयार करना :कल्पना कीजिए - श्री राम पंजाब के एक मध्यमवर्गीय कामकाजी पेशेवर हैं। वे एक अच्छा घर खरीदने के अपने सपने को पूरा करने के लिए डाउन पेमेंट का भुगतान करने के लिए नियमित रूप से कुछ राशि अलग रखते हैं। लेकिन अगर 5-10 लाख की इस बचत अवधि के दौरान कोई अचानक चिकित्सा आपात स्थिति उत्पन्न हो जाए तो क्या होगा यह अचानक उत्पन्न होने वाली स्थिति उनके वित्त को प्रभावित कर सकती है, डाउन पेमेंट इकट्ठा करने में 3-5 साल लग सकते हैं। लेकिन मान लीजिए कि श्री राम के पास 10 लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा है जिसकी लागत 700 रुपये प्रति माह या लगभग 8000 रुपये प्रति वर्ष है। वे ऐसे अचानक चिकित्सा खर्चों को आराम से संभाल सकते हैं और वित्तीय परेशानी में पड़े बिना अपने सपनों का घर खरीदने के लिए पैसे बचाना जारी रख सकते हैं।

स्वास्थ्य, जीवन स्तर और निवेश प्रतिबद्धता के आधार पर हमेशा पर्याप्त स्वास्थ्य कवर रखें। विचार करने के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण कारक चिकित्सा मुद्रास्फीति है, इसलिए एक व्यक्ति को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी स्वास्थ्य बीमा राशि वर्तमान और भविष्य के चिकित्सा खर्चों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। कोई 50 लाख रुपये या उससे अधिक की कवर राशि पर भी विचार कर सकता है। दिलचस्प बात यह है कि कवर को 5 गुना बढ़ाने से कुल प्रीमियम राशि केवल 2 गुना बढ़ जाती है। सीधे शब्दों में कहें, तो आपको सही बीमा कवर लेना है, जो ऐसी जीवनशैली के लिए उपयुक्त हो, जो किसी भी चिकित्सा खर्च के मामले में अन्य निवेश और धन सृजन योजनाओं से समझौता नहीं करेगा।

एलन मस्क को 60,000 करोड़ से अधिक का फटका, अंबानी-अडानी ने भी अरबों डॉलर गंवाए

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत समेत पूरी दुनिया के शेयर बाजारों में गिरावट का रुख रहा। इससे दुनिया के टॉप 30 अमीरों में से 27 की नेटवर्थ में गिरावट आई। सबसे ज्यादा नुकसान में रहे दुनिया के सबसे बड़े रईस एलन मस्क। उनकी नेटवर्थ में बुधवार को 7.21 अरब डॉलर यानी करीब 6,00,40,19,35,000 रुपये की गिरावट आई। ब्लूमबर्ग बिलिनेयर इंडेक्स के मुताबिक मस्क की नेटवर्थ अब 228 अरब डॉलर रह गई है। वैसे इस साल सबसे ज्यादा कमाई करने के मामले में वह अब भी नंबर वन हैं। इस साल उनकी नेटवर्थ में 91.1 अरब डॉलर की तेजी आई है।

मस्क के बाद सबसे ज्यादा दौलत गौतम अडानी ने गंवाई। अडानी ुप के चेयरमैन की नेटवर्थ में बुधवार 4.84 अरब डॉलर यानी 4,03,04,25,30,000 रुपये की गिरावट आई। अडानी 81.1 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 15वें और एशिया में मुकेश अंबानी के बाद दूसरे नंबर पर हैं। इस साल सबसे ज्यादा नेटवर्थ गंवाने के मामले में अडानी पहले नंबर पर हैं। इस साल उनकी नेटवर्थ में 39.4 अरब डॉलर की गिरावट आई है। अडानी पिछले साल दुनिया के अमीरों की लिस्ट में दूसरे नंबर पर पहुंच गए थे लेकिन 24 जनवरी को हिंडनबर्ग रिसर्च की एक रिपोर्ट के कारण उनकी नेटवर्थ में भारी गिरावट आई।

मुकेश अंबानी का हाल :देश की सबसे वैल्यूएबल कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी की नेटवर्थ में बुधवार को 1.27 अरब डॉलर की गिरावट आई और अब यह 94.4 अरब डॉलर रह गई है। इस साल उनकी नेटवर्थ में 7.26 अरब डॉलर का इजाफा हुआ है और वह दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 13वें नंबर पर हैं। बुधवार को टॉप 10 में केवल दो रईसों लैरी पेज और सर्गेई ब्रिन की नेटवर्थ में तेजी रही। लैरी पेज 125 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ दुनिया के अमीरों की लिस्ट में सातवें और सर्गेई ब्रिन 119 अरब डॉलर के साथ दसवें नंबर पर हैं।

चीन के आयात पर ड्यूटी बढ़ाने की तैयारी में अमेरिका

300 अरब डॉलर का सामान आ सकता है इसकी चपेट में

इलेक्ट्रिक वीकल समेत कई सामान पर बढ़ सकता है टैक्स

नईदिल्ली, एजेंसी। दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं अमेरिका और चीन के बीच तल्खी कम होने का नाम नहीं ले रही है। अमेरिका से पंगा लेने के बाद से चीन की इकॉनमी को कई मोर्चों पर संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है। खबरों के मुताबिक अमेरिकी चीन को एक और झटका देने की तैयारी कर रहा है। बाइडन प्रशासन चीन से कुछ सामानों के आयात पर टैक्स बढ़ाने पर विचार कर रहा है। इनमें इलेक्ट्रिक वीकल्स भी शामिल हैं। डॉनल्ड ट्रंप के कार्यकाल में चीन से आयात होने वाली गाड़ियों पर 27 प्रतिशत इम्पोर्ट ड्यूटी लगाई गई थी जिसे बाइडन एडमिनिस्ट्रेशन ने और बढ़ा दिया था।

वॉल स्ट्रीट जर्नल की एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका की सरकार चीन से आयात होने वाले 300 अरब डॉलर के सामान पर ड्यूटी लगाने पर विचार कर रही है। साथ ही कुछ चीनी सामान पर ड्यूटी घटाई जा सकती है। ये ऐसे सामान हैं जिन्हें रणनीतिक रूप से महत्वहीन माना जाता है। सांसदों ने चीन से आयात होने वाली गाड़ियों पर टैक्स बढ़ाने की मांग की थी। उनका कहना था कि अभी जो टैक्स है, वह पर्याप्त नहीं है। अमेरिका को निर्यात के मामले में चीन अब मेक्सिको और कनाडा के बाद तीसरे नंबर पर खिसक गया है। करीब 10 साल तक अमेरिका को निर्यात में चीन की बादशाहत रही। **किस बात की है लड़ाई :**पिछले कुछ समय से चीन और अमेरिका के बीच संबंधों में काफी तल्खी आई है। दोनों देशों ने एकदूसरे की कई कंपनियों पर पाबंदी लगा रखी है। इसके साथ ही अमेरिका और दूसरे पश्चिमी देश चीन पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं। खासकर सेमीकंडक्टर चिप्स को लेकर दोनों के बीच ठनी हुई है। इसके भविष्य का ऑयल कहा जा रहा है। यही वजह है कि अमेरिका और चीन दोनों इसकी सप्लाई चेन पर कब्जा करना चाहते हैं।

1 पर 4 बोनस शेयर देगी कंपनी, ऐलान होते ही शेयर खरीदने की लूट

नईदिल्ली, एजेंसी। स्मॉल-कैप कंपनी सालासर टेक्नो इंजीनियरिंग लिमिटेड के शेयरहोल्डर्स को तगड़ा मुनाफा होने वाला है। कंपनी ने अपने इलिजिबल निवेशकों के लिए 4:1 के रेशियो में बोनस शेयर देने का ऐलान किया है। इसका मतलब है कि हर एक शेयर पर कंपनी के चार शेयर बोनस के तौर पर मिलेंगे। बता दें कि टावर बनाने वाली कंपनी के शेयर आज गुरुवार को 9.51 प्रतिशत चढ़ गए और इंट्रा डे में यह शेयर 65.40 रुपये पर पहुंच गया था। यह इसका 52 वीक का हाई प्राइस भी है।

क्या है डिटेल :इंफ्रास्ट्रक्चर सर्विस प्रोवाइडर सालासर टेक्नो इलेक्ट्रिक लिमिटेड ने बुधवार को अपनी बोर्ड बैठक में अपने शेयरधारकों के लिए बोनस शेयर जारी करने को मंजूरी दे दी है। बोर्ड ने प्रत्येक मौजूदा शेयर के लिए 4 मुफ्त शेयर जारी करने को मंजूरी दे दी है। बता दें कि बोनस शेयर जारी करने के लिए पात्र शेयरधारकों को निर्धारित करने की रिकॉर्ड तिथि अभी तक निर्धारित नहीं की गई है। बोनस शेयर जारी करना कंपनी के सिक्योरिटीज प्रीमियम खाते के माध्यम से किया जाएगा। बोनस शेयर जारी करने के लिए 126 करोड़ की राशि की आवश्यकता होगी। कंपनी ने कहा कि बोर्ड मीटिंग की तारीख से 2 महीने के भीतर यानी आज अनुमानित तारीख है जब तक ऐसे बोनस शेयर जमा कर दिए जाएंगे।

कंपनी के शेयरों के हाल :पिछले तीन सालों में स्टॉक ने 408 प्रतिशत मल्टीबैगर रिटर्न दिया है, और पिछले पांच सालों में इसने 314 प्रतिशत मल्टीबैगर रिटर्न दिया है। 2023 में अब तक यह 19 प्रतिशत वायटीडी चढ़ गया है। कंपनी का 52-सप्ताह के निचले स्तर 36 रुपये पर पहुंच गया। इसका मार्केट कैप 2,012.62 करोड़ रुपये का है।

सालासर टेक्नो इंजीनियरिंग ने 2017 में शेयर बाजार में शुरुआत की। उस समय यह भारतीय बाजारों में सबसे अधिक सब्सक्राइब किया गया आईपीओ था। इसे कुल 273.05 गुना सब्सक्रिप्शन हुआ था।

गुजरात से सुजलॉन एनर्जी कंपनी को लगातार मिल रहे ऑर्डर

नईदिल्ली, एजेंसी। सुजलॉन एनर्जी के शेयर लगातार फोकस में हैं। कंपनी के शेयरों में आज गुरुवार को तगड़ी तेजी देखने को मिल रही है। सुजलॉन एनर्जी के शेयर बीएसई पर 4.32 प्रतिशत चढ़कर 37.15 रुपये पर पहुंच गए। शेयरों में इस तेजी के पीछे एक बड़ी वजह है। दरअसल, सुजलॉन एनर्जी को गुजरात में केपी ुप से 193.2 मेगावाट का दोबारा ऑर्डर मिला है। इससे पहले लीडिंग ग्लोबल यूटिलिटी कंपनी से 100.8 एमडब्लू विंड पावर प्रोजेक्ट के डेवलपमेंट के लिए ऑर्डर मिला था। बता दें कि इस ऑर्डर के तहत सुजलॉन को नए उत्पाद के हाइब्रिड लैटिस ट्यूबलर टावर के साथ 3.15 एमडब्लू की रेटेड क्षमता वाले 32 विंड टरबाइन जनरेटर को लगाने की योजना है।

क्या है डिटेल :गुजरात में केपी ग्रुप से 193.2 मेगावाट का दोबारा ऑर्डर हासिल करने के बाद सुजलॉन एनर्जी के शेयर सेशन के निचले स्तर से उबर गए हैं। यह 2.1 मेगावाट की रेटेड क्षमता वाले 92 पवन टर्बाइनों की सप्लाई करेगा। 193.2 मेगावाट की कुल स्थापित क्षमता वाली यह परियोजना गुजरात के भरूच जिले के वागरा और विलायत में पूरी की जाएगी।

कंपनी ने क्या कहा :सुजलॉन ुप के वाइस चेयरमैन गिरीश तांती ने कहा, गुजरात द्वारा पेश किए गए बेहद अनुकूल नीतिगत माहौल के साथ, केपी ग्रुप का यह ऑर्डर टिकाऊ भारत के निर्माण के लिए इंडिया इंक की प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है। कंपनी के प्रमोटरों के पास वर्तमान में कंपनी में 13.29 प्रतिशत हिस्सेदारी है और तांती ने हाल ही में कहा था कि होल्डिंग संरचना को बदलने की अभी कोई योजना नहीं है। सुजलॉन के सीएफओ हिमांशु मोदी ने कहा कि सुजलॉन के पास वर्तमान में 1.6 गीगावॉट के ऑर्डर हैं।

कंपनी के शेयरों के हाल :सुजलॉन के शेयर 36.95 रुपये पर पहुंच गए हैं। पिछले छह महीने में यह 163.93 प्रतिशत चढ़ा है।

इस साल वायटीडी में अब तक यह शेयर 245.33 प्रतिशत चढ़ा है। इस दौरान इसकी कीमत 10 रुपये से बढ़कर वर्तमान प्राइस तक पहुंच गई है। इस शेयर का 52 वीक हाई प्राइस 44 रुपये और 52 वीक लो प्राइस 6.96 रुपये है। कंपनी का मार्केट कैप 49,962.23 करोड़ रुपये पर आ गया है।

सितंबर तिमाही के नतीजे :सुजलॉन एनर्जी ने सितंबर तिमाही के दौरान प्रॉफिट में साल-दर-साल 45 फीसदी की बड़ी बढ़ोतरी दर्ज की। इसी के साथ कंपनी का प्रॉफिट 102 करोड़ हो गया। इस अवधि में कंपनी के राजस्व में मामूली गिरावट आई और यह 1417 करोड़ रह गया।

सुनील सिंघानिया ने खरीदे श्रीराम पिस्टन्स एंड रिंग्स कंपनी के लाखों शेयर

नईदिल्ली, एजेंसी। दिग्गज इनवेस्टर सुनील सिंघानिया ने श्रीराम पिस्टन्स एंड रिंग्स पर बड़ा दांव लगाया है। दिग्गज इनवेस्टर सुनील सिंघानिया के सपोर्ट वाले श्रीराम पिस्टन्स एंड रिंग्स में 326.01 करोड़ रुपये में हिस्सेदारी खरीदी है। इस खबर के सामने आने के बाद श्रीराम पिस्टन्स एंड रिंग्स के शेयरों में रॉकेट सी तेजी देखने को मिली है। कंपनी के शेयर गुरुवार को 5 पर्सेंट की तेजी के साथ 1216.65 रुपये पर पहुंच गए हैं। अबक्कस फंड्स की ए सीरीज ने श्रीराम पिस्टन्स एंड रिंग्स के 29.54 लाख शेयर या कंपनी में 6.7 पर्सेंट हिस्सेदारी खरीदी है। कंपनी में यह हिस्सेदारी 20 दिसंबर 2023 को 1103.6 रुपये प्रति शेयर के दाम पर खरीदी गई है। ए एल मेहवार कमर्शियल इनवेस्टमेंट्स ने इसी दाम पर 4.36 लाख शेयर खरीदे हैं।

उद्योग की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए बिमटेक ने व्यापक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा साइंस कोर्स शुरू किया

नई दिल्ली एजेंसी। वैश्विक बाजारों में एआई-प्रशिक्षित पेशेवरों की मांग में वृद्धि देखी जा रही है। अग्रणी भारतीय आईटी कंपनियों ने भी हाल में एआई से जुड़ी नौकरियों के लिए 4 लाख से अधिक कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने का निर्णय लिया है। उद्योग की इस आवश्यकता को समझते हुए बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (बिमटेक) ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा साइंस मैनेजमेंट में दो वर्षीय फुल टाइम पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा [पीजीडीएम] लॉन्च किया है। कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न डोमेन में प्रबंधन विषयों के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा साइंस टेक्नोलॉजी का समावेशन देना, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर उद्योग और शिक्षा जगत के बीच जुड़ाव को बढ़ावा देना और मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स के एक ऐसे समूह को तैयार करना है, जिनके पास तकनीकी विशेषज्ञता, विश्लेषणात्मक क्षमताओं और प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता का का संयोजन होगा।

यह 24 महीने का प्रोग्राम है। पीजीडीएम को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले छात्र फाइनेंस, एजुकेशन,ऑटोमोटिव, रिटेल, एंटरटेनमेंट, साइबर सुरक्षा और सस्टेनेबिलिटी कंजर्वेशन जैसे क्षेत्रों में अत्याधुनिक एआई प्रोजेक्ट पर काम करने के साथ-साथ फाइनेंस पोर्टफोलियो के प्रबंधन, स्मार्ट लॉजिस्टिक्स के विकास और उन्हें लागू करने सहित एआई का उपयोग करके ई-कॉमर्स आदि के लिए सिस्टम और अनुशंसा प्रणाली बनाने जैसे अन्य क्षेत्रों में काम करने के लिए योग्य होंगे। एआई को 75त्न कंपनियों द्वारा अपनाए जाने की उम्मीद है, इसमें अच्छी नौकरियां निकलेगी। 50त्न संगठनों को उम्मीद है कि इससे नौकरी में वृद्धि होगी। बिमटेक के डायरेक्टर डॉ.हरिवंश चतुर्वेदी ने कहा, भारत में, 2024 तक एआई और डेटा साइंस पेशेवरों की मांग 10 लाख से अधिक होने की उम्मीद है, और वर्तमान में ऐसे पेशेवरों की मांग और आपूर्ति के बीच 51त्न का अंतर है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2030 तक डेटा साइंस और मैथेमेटिकल साइंस से संबंधित नौकरियों में 31.4त्न की वृद्धि होगी, जो ज्यादातर एआई-आधारित हैं। बिमटेक के डीन-एकेडेमिक्स प्रो. एसएस दुबे ने कहा, एआई और डीएस को मैनेजमेंट एजुकेशन के साथ जोड़ते हुए विद्यार्थी एक बहुमुखी कौशल सेट प्राप्त करेंगे जो पारंपरिक सीमाओं से परे है। इन डोमेन का फ्यूजन शिक्षार्थियों को जटिल डेटा पैटर्न को समझने, नवीन रणनीतियों को चलाने और सूचित डेटा-संचालित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाएगा। यह फ्यूजन तेजी से विकसित हो रहे परिदृश्य में आगे रहने की चाबी है, जो व्यक्तियों को आने वाले समय की व्यावसायिक दुनिया की पेचीदगियों को समझने में सक्षम करेगा। प्रोग्राम का फोकस वास्तविक दुनिया की व्यावसायिक चुनौतियों को हल करने के लिए एआई-संचालित रणनीतियों का उपयोग करने में कुशल दूरदर्शी लीडर को तैयार करना है। कार्यक्रम का व्यापक दृष्टिकोण, व्यावहारिक अनुभव के साथ सैद्धांतिक नींव यह सुनिश्चित करती है कि इससे स्नातक हुए विद्यार्थियों के पास एआई परिदृश्य को खंगालने के लिए आवश्यक फुर्ती और विशेषज्ञता हो।

प्रमा ने आईएफएसईसी में नवीनतम वीडियो सुरक्षा उत्पादों और समाधानों के साथ नई रंगीनव्यू कैमरा श्रृंखला पेश की

मुंबई, एजेंसी। प्रमा इंडिया ने इंटरनेशनल फायर एंड सिक्योरिटी एग्जीबिशन एंड कॉन्फ्रेंस (आईएफएसईसी) 2023 में विशेष वीडियो सुरक्षा उत्पादों के साथ-साथ स्वदेशी रूप से निर्मित रंगीनव्यू कैमरा श्रृंखला की अपनी नवीनतम श्रृंखला का अनावरण किया। प्रामा बूथ में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), और आईओटी सुरक्षा प्रौद्योगिकियों, उत्पादों और समाधानों जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को प्रदर्शित किया गया। इंटरनेशनल फायर एंड सिक्योरिटी एग्जीबिशन एंड कॉन्फ्रेंस (आईएफएसईसी) में प्रमा ने स्वदेशी रूप से निर्मित उत्पादों और नवीन समाधानों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदर्शित की। इनमें प्रमा उत्पादों और समाधानों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। नई लॉन्च की गई प्रमा रंगीनव्यू श्रृंखला प्रदर्शन पर थी। भारत के अग्रणी स्वदेशी वीडियो सुरक्षा ब्रांड, प्रमा को इंटरनेशनल फायर एंड सिक्योरिटी एग्जीबिशन एंड कॉन्फ्रेंस में स्वदेशी रूप से निर्मित वीडियो सुरक्षा उत्पादों और विशेष वर्टिकल समाधानों की विस्तृत श्रृंखला के लिए जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली। प्रमाबूथ पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिक्योरिटी टेक्नोलॉजीज और एप्लिकेशन जैसी अत्याधुनिक तकनीकों से युक्त नवीनतम उत्पाद प्रदर्शित किए गए। इंटरनेशनल फायर एंड सिक्योरिटी एग्जीबिशन एंड कॉन्फ्रेंस मेंप्रमा बूथ ने स्वदेशी रूप से निर्मित उत्पादों और नवीन समाधानों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदर्शित की। प्रमाके प्रबंधन प्रतिनिधि ने कहा, प्रमा ने इंटरनेशनल फायर एंड सिक्योरिटी एग्जीबिशन एंड कॉन्फ्रेंसमें नवीनतम उत्पाद और समाधान प्रदर्शित किए। अलंकृत रूप से डिजाइन किए गए विशाल प्रमाबूथ में इंटेलिजेंट बैंकिंग सॉल्यूशन, इंटेलिजेंट बिल्डिंग सॉल्यूशन, स्मार्ट सिटी सॉल्यूशन, मोबाइल एनफोर्समेंट सॉल्यूशन, इंटेलिजेंट लॉजिस्टिक्स सॉल्यूशन, इंटेलिजेंट एजुकेशन सॉल्यूशन, इंटेलिजेंट हेल्थकेयर सॉल्यूशन, रिटेल सॉल्यूशन और बीआई, बैंक, होटल सहित असंख्य उत्पाद और वर्टिकल सॉल्यूशन प्रदर्शित किए गए।

सुप्रीम पावर इक्विपमेंट लिमिटेड का आईपीओ खुलेगा

मुंबई, एजेंसी। बिजली और वितरण ट्रांसफार्मर विनिर्माण उद्योग में कार्यरत एक अग्रगण्य कंपनी सुप्रीम पावर इक्विपमेंट लिमिटेड (एसपीईएल) ने अपना आई पी ओ सार्वजनिक पेशकश करने की अपनी योजना की घोषित की है। कंपनी इस आईपीओ के माध्यम से ऊपरी बैंड मूल्य पर 46.67 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य लेकर चल रही है, जिसमें शेयर एनएसई इमर्ज प्लेटफॉर्म पर सूचीबद्ध होने के लिए तैयार हैं। आईपीओ से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग पूंजीगत व्यय आवश्यकताओं, कार्यशील पूंजी की जरूरतों और सामान्य कॉर्पोरेट खर्चों के लिए किया जाएगा। एंकर भाग के लिए बोली खुलेगी और निर्गम 26 नवंबर, 2023 को बंद होगा। इस मुद्दे के लिए बुक रनिंग लीड मैनेजर मे. नारनोलिया फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड है। इस मुद्दे का रजिस्ट्रार पूर्वा शेयररजिस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड है।इस अवसर पर सुप्रीम पावर इक्विपमेंट लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री. वी राजमोहन ने कहा, यह आईपीओ हमारे लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, और हम भविष्य में आने वाले अवसरों और विकास के बारे में उत्साहित हैं। उद्योग में पिछलें 29 से अधिक वर्षों के कालावधी में, हमने गर्व से खुद को तमिलनाडु में बिजली और वितरण ट्रांसफार्मर के अग्रणी निर्माताओं में से एक के रूप में स्थापित किया है। यह आगामी कदम हमारे दृढ परिश्रम और विश्वसनीयता के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है।इस आइ पीओ से प्राप्त हुई पूंजीस्वरूप शुद्ध आय को हमारी कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने, पूंजीगत व्यय के वित्तपोषण और सामान्य कॉर्पोरेट खर्चों के प्रबंधन के लिए निर्देशित किया जाएगा। हम ट्रांसफार्मर उद्योग में निरंतर सफलता की उम्मीद करते हैं।

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस इंडिया ने रीवा में शिक्षकों के लिए नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क पर एक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया

रीवा, एजेंसी। प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड के विभाग ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस इंडिया ने रीवा में शिक्षकों के लिए नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (एनसीएफ 2023) पर एक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। यह क्षमता निर्माण कार्यक्रम प्राइमरी और फाउंडेशनल स्टेज पर शिक्षण में अभिनव तकनीकों पर केन्द्रित था; इस कार्यक्रम में सतना और रीवा के 75 से अधिक प्राथमिक स्कूल शिक्षकों ने भाग लिया। फाउंडेशनल स्टेज यानी मूलभूत चरण में एनसीएफ पर फोकस करते हुए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बच्चों के लिए प्रायोगिक ज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला गया। अध्यापन संबंधी दृष्टिकोण के साथ शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में तथा पाठ्यक्रम विकसित करने में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस अग्रणी रही है, और 111 वर्षों से भारत में इसकी उपस्थिति रही है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने स्कूल शिक्षकों और अभिभावकों को सहयोग दिया है ताकि समग्रतापूर्ण शिक्षण, अर्थपूर्ण सामग्री और शिक्षण संसाधनों को गतिविधि-आधारित श्रृंखला 'माय लर्निंग ट्रेन (मेरी रेल गाड़ी)' के साथ बुनियादी कक्षाओं में ले जाया जा सके। यह श्रृंखला एनईपी 2020 और नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क` मुताबिक है और इसका लक्ष्य है शिक्षकों को सशक्त करना कि वे हर कक्षा को एक जीवंत शिक्षण केन्द्र में परिवर्तित कर सकें। लेखिका सोनिया रेलिया द्वारा डिजाइन की गई श्रृंखला 'माय लर्निंग ट्रेन' में अनेक गतिविधियां, रिसोर्स बुक, कहानियां, कविताएं, लोक साधन, संगीत, कला, खेल तथा और भी बहुत कुछ शामिल हैं। इसे इस प्रकार डिजाइन किया गया है विभिन्न क्षेत्रों और शिक्षण शैलियों में बच्चों के कौशल में वृद्धि हो। कार्यशाला का संचालन लेखिका सोनिया रेलिया द्वारा किया गया। कार्यशाला का इरादा था कि शिक्षकों की जरूरतों को पूरा किया जाए ताकि वे नन्हे विद्यार्थियों के लिए दिलचस्प गतिविधियों का उपयोग कर पाएं और इसमें मजेदार गतिविधियां भी शामिल होती हैं जिनसे बच्चों के संज्ञानात्मक एवं साइकोमोटर विकास को बढ़ावा मिले। सोनिया रेलिया कीनोलर्न और कीनोफोनिक्स जैसी पद्धतियां भी प्रस्तुत करती हैं जिनके लिए आसानी से उपलब्ध चीजों जैसे पोस्टर, फ्लैशकार्ड, बोर्ड गेम व स्टोरी रीडिंग कार्ड का इस्तेमाल किया जाता है।

हिसार की रेसलर अंतिम पंघाल को अर्जुन अवॉर्ड

पिता ने बेटी की पहलवानी के लिए बेच दी जमीन, रोज साढ़े 7 घंटे प्रेक्टिस, ओलिपिंक खेलेंगी

हिसार (एजेंसी)। हिसार के गांव भगाना की पहलवान अंतिम पंघाल का नाम अर्जुन अवॉर्ड के लिए चुना गया है। एशियन गेम्स में ब्रॉन्ज मेडल जीतने के बाद अब वह ओलिंपिक की तैयारी कर रही हैं। उनका सपना है कि वह ओलिंपिक में गोल्ड मेडल जीते। अंतिम पंघाल ने पहली बार एशियन गेम्स खेलते हुए ब्रॉन्ज मेडल हासिल किया। अंतिम पंघाल ने 53 किलोग्राम भारवर्ग में ओलिंपिक के लिए क्वालीफाई किया है। अंतिम के पिता खेतीबाड़ी करते हैं और मां हाउस वाइफ है। वे 5 बहन-भाई हैं, जिनमें से 4 बहन और एक भाई है। अंतिम पंघाल का कहना है कि वे सुबह करीब साढ़े 5 बजे प्रैक्टिस पर जाती है और करीब साढ़े 9 बजे तक अभ्यास करती है। वहीं शाम को 5 से करीब साढ़े 8 बजे तक अभ्यास करती है।

पहलवानी के लिए पिता ने बेची डेढ़ एकड़ जमीन

अंतिम के पिता रामनिवास ने अपनी बेटी को पहलवान बनाने के लिए जमीन तक बेची दी थी। अंतिम करीब साढ़े 6-7 साल से अभ्यास कर रही है। उनकी बेटी के अभ्यास करवाने के लिए जब आर्थिक तंगी आई तो उन्होंने अपनी डेढ़ एकड़ जमीन बेच डाली। रामनिवास की नजर में बेटी की कामयाबी की राह में आर्थिक परेशानी बाधा न बने, इसलिए जमीन बेचनी पड़ी। शुरुआती दौर में जो परेशानियां हुईं, अब अंतिम के कामयाब आने के बाद उन्हें भूलकर सब खुश हैं।

हरियाणा के ओलिंपियन बॉक्सर छोड़ेंगे पॉलिटिक्स

विजेंदर सिंह ने सोशल मीडिया पर लिखा- राजनीति को राम-राम भाई, कांग्रेस से चुनाव लड़ चुके

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के ओलिंपियन बॉक्सर विजेंदर सिंह ने राजनीति को राम-राम कर दिया है। विजेंदर ने गुरूवार सुबह 6 बजे सोशल मीडिया (एक्स) पर इस बारे में बयान दिया। जिसमें उन्होंने लिखा- 'राजनीति को राम-राम भाई'। उनके इस बयान से कयास लगाए जा रहे हैं कि उन्होंने पॉलिटिक्स से तौबा कर ली है। इससे पहले 2024 में उनके कांग्रेस की टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ने के कयास लगाए जा रहे थे। 2019 में उन्होंने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ली थी। हरियाणा में राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में भी विजेंदर सिंह शामिल हुए थे। इसके साथ ही वह लगातार अपने बयानों में केंद्र सरकार को निशाने पर लेते रहे हैं।

2024 में भिवानी से चुनाव लड़ने का किया था ऐलान – इससे पहले विजेंदर सिंह ने हरियाणा के भिवानी से कांग्रेस की टिकट पर लोकसभा चुनाव 2024 लड़ने का ऐलान किया था। हालांकि,

उन्होंने कहा था कि यह फैसला पार्टी करेगी। इसके बाद उनकी आम आदमी पार्टी में शामिल होने की भी चर्चाएं शुरू हो गई थीं। विजेंदर सिंह ने किसान आंदोलन का भी समर्थन किया था।

कांग्रेस छोड़ने की चल रही थी चर्चा – अपने मुक्के के दम पर दुनियाभर में नाम कमाने वाले और देश को ओलिंपिक मेडल दिलाने वाले बॉक्सर विजेंदर सिंह जल्द ही कांग्रेस का हाथ छोड़ने की चर्चा के बीच यह ऐलान किया है। चर्चा यह भी चल रही थी कि वह बहुत जल्द आम आदमी पार्टी में शामिल होंगे। हालांकि विजेंदर सिंह दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी कब जॉइन करेंगे, इसकी कोई आधिकारिक सूचना सामने नहीं थी।

2019 में लड़ा था लोकसभा चुनाव –साल 2019 में लोकसभा चुनाव से ठीक पहले विजेंदर सिंह ने राजनीति में कदम रखा था। कांग्रेस ने साउथ दिल्ली सीट से विजेंदर सिंह को मैदान में उतारा था, मगर यहां उन्हें करारी हार का सामना करना पड़ा था। विजेंदर सिंह जाट समुदाय से आते हैं। उन्होंने 2008 बीजिंग ओलिंपिक में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। इतना ही नहीं, एशियन गेम्स में उन्होंने गोल्ड मेडल अपने नाम किया था।

बॉलीवुड में भी रहे एक्टिव – विजेंदर सिंह ने एक्टर के रूप में बॉलीवुड में अपनी शुरुआत 13 जून 2014 को रिलीज हुई फिल्म फगली से किया था। फिल्म का निर्माण ग्रेजिंग गोट प्रोडक्शंस द्वारा किया गया है, जिसके मालिक अक्षय कुमार और अश्विनी यार्डी हैं। हालांकि उनकी इस फिल्म को औसत से ऊपर रिव्यू मिले थे। इससे पहले 2011 में दक्षिण भारतीय डायरेक्टर आनंद द्वारा बनाई जाने वाली एक फिल्म को लेकर भी चर्चा शुरू हुई थी, लेकिन बाद में विजेंदर सिंह ने ही इसकी पुष्टि नहीं की।

130 करोड़ हेरोइन में आया था नाम

पंजाब पुलिस ने अर्जुन पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ी जगदीश सिंह उर्फ भोला के घर से 130 करोड़ रुपए की 26 किलो हेरोइन बरामद किया था। तस्कर अनूप सिंह ने दावा किया था कि विजेंदर सिंह और उनके दोस्त राम सिंह ने कई मर्तबा हेरोइन खरीदी थी। पुलिस की कड़ी पूछताछ में विजेंदर के दोस्त राम सिंह ने ड्रग्स लेने की बात स्वीकार भी की थी। तस्कर के घर में बॉक्सर विजेंदर सिंह की तस्वीर मिली तो घर के बाहर उनकी पत्नी के नाम रजिस्टर्ड कार भी बरामद की गई थी। हालांकि इस पूरे मामले में विजेंदर और उनकी पत्नी अर्चना ने पुलिस से पूछताछ में खुद को निर्दोष बताया था।

दक्षिण अफ्रीका टी20 लीग 10 जनवरी से होगी शुरू, शास्त्री करेंगे कमेंट्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व मुख्य कोच और मशहूर कमेंटेटर रवि शास्त्री को 10 जनवरी से शुरू होने वाले दक्षिण अफ्रीका टी20 लीग (एसए20) के लिए कमेंट्री पैनल में शामिल किया गया है। आयोजकों की

विज्ञप्ति के अनुसार शास्त्री के अलावा इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर स्टुअर्ट ब्रॉड, केविन पीटरसन और मार्क बूचर, दक्षिण अफ्रीका के एबी डी विलियर्स, शॉन पोलाक और क्रिस मॉरिस भी कमेंट्री पैनल का हिस्सा हैं। एसए20 लीग के आयुक्त ग्रीम स्मिथ ने कहा, ''हम एसए20 के दूसरे सत्र के लिए मौजूद कमेंटेटरों और प्रस्तोताओं की क्षमता से रोमांचित है। लीग हमारी कहानी बयां करने के लिए माइक्रोफोन के पीछे विश्वसनीय आवाजों के महत्व को समझती है। एसए20 लीग का आयोजन 10 जनवरी से 10 फरवरी के बीच किया जाएगा तथा भारत में इसका प्रसारण जिओ सिनेमा और स्पोर्ट्स18 पर होगा। म्युमेलेलो 'पॉमी' मबांगवा, माइक हेज़मैन, मार्क निकोलस और मोत्शिदिसी मोहोनो भी कमेंट्री पैनल में शामिल हैं।

संजय सिंह रेसलिंग फेडरेशन के अध्यक्ष बने

पिछली बॉडी में जॉइंट सेक्रेटरी थे ; कॉमनवेल्थ चैंपियन अनीता को हराया

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले 11 महीनों से विवादित रेसलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया को आज नया अध्यक्ष मिल गया है। पिछली बॉडी में जॉइंट सेक्रेटरी रहे संजय सिंह नए अध्यक्ष बन गए हैं। उन्होंने कॉमनवेल्थ चैंपियन अनीता सिंह श्योराण को हराया। संजय सिंह को 40 वोट मिले, जबकि अनीता श्योराण को 7 वोट ही मिले। गुरुवार सुबह 11 बजे हुई मीटिंग में बॉडी के पदाधिकारियों के लिए वोटिंग हुई। वोटों की गिनती दोपहर 1.30 बजे शुरू हुई। अध्यक्ष पद की दूसरी कैंडिडेट अनीता सिंह महिला पहलवानों के यौन शोषण के मामले में बृजभूषण के खिलाफ गवाह भी हैं। उन्हें बृजभूषण के खिलाफ धरना देने वाले पहलवानों का समर्थन था। फेडरेशन के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण सिंह इस बार चुनाव नहीं लड़े। वे 12 साल से इस पद पर रहे।

प्रेम लोछब जनरल सेक्रेटरी बने – जनरल सेक्रेटरी के पद पर प्रेम लोछब जीते। उन्होंने पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण सिंह के समर्थक दर्शन लाल को हराया।

राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के पदाधिकारी चुनते हैं अध्यक्ष – डब्ल्यूएफआई के पदाधिकारियों का चुनाव जनरल काउंसिल की बैठक में होता है। चुनाव में फेडरेशन से एफिलिएडेट एसोसिएशन के पदाधिकारी वोट डालते हैं। हर स्टेट फेडरेशन से प्रेसिडेंट और सेक्रेटरी यानी दो वोट होते हैं। दिल्ली से दो और बाकी केंद्रशासित प्रदेश के एक-एक वोट होते हैं। अगर एक पद के लिए एक से ज्यादा दावेदार हैं, तो ही वोटिंग होती है। ऐसा न हो, तो पदाधिकारी निर्विरोध चुन लिए जाते हैं। 2019 में बृजभूषण शरण सिंह निर्विरोध ही अध्यक्ष बने थे।

पिछले साल तक थे माली, अब गुजरात टाइटन्स ने 10 करोड़ में खरीदा

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के स्पेंसर जॉनसन पिछले साल तक 'लैंडस्केप' माली का काम कर रहे थे लेकिन दुबई में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) नीलामी में गुजरात टाइटन्स द्वारा 10 करोड़ रुपए की बड़ी राशि में खरीदे जाने के बाद उनकी मां के चेहरे पर मुस्कान आ गई है। ऐसा भी समय था जब लग रहा था कि जॉनसन का क्रिकेट करियर खत्म हो जाएगा।

जॉनसन ने कहा, 'आठ महीने पहले मेरे पास राज्य क्रिकेट का कोई करार या बिग बैश का अनुबंध भी नहीं था। मैं 'लैंडस्केप' पर पौधे लगाने का काम कर रहा था। इसलिए 18 महीने बाद निश्चित रूप से हालात बदल गए हैं। दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के लिए 2017 में पेशेवर पदार्पण के दौरान उनके पैर में स्ट्रेस फ्रेक्चर हो गया था जिसके कारण वह तीन साल तक क्रिकेट से बाहर रहे और फिर अनुबंध भी उनके हाथों से चला गया।

सर्जरी और 'रिहैबिलिटेशन' के बाद 2022 में इस बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया से फिर अनुबंध किया और इस साल जनवरी में ब्रिसबेन हीट के लिए बिग बैश लीग में पदार्पण किया। पिछले बिग बैश लीग सत्र में इस 28 साल के तेज गेंदबाज ने 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी कर सभी को आकर्षित किया।

पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज आशीष नेहरा की कोचिंग वाली आईपीएल फ्रेंचाइजी ने ही उन्हें खरीदा जिससे वह गुजरात टाइटन्स के राशिद खान के बाद दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए हैं। 'द हंड्रेड' में खेलने के बाद जॉनसन पर राष्ट्रीय चयनकर्ताओं का ध्यान गया और उन्हें ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलने के लिए चुना गया। उन्होंने इंदौर में अगस्त में भारत के खिलाफ अपना एकमात्र वनडे खेला जिसमें उन्होंने आठ ओवर में 61 रन दिए लेकिन विकेट नहीं ले सके। उन्होंने अपने दोनों टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेले। जॉनसन ने कहा कि आईपीएल का लुभावना अनुबंध मिलना विशेष पल है लेकिन इससे ज्यादा संतोषजनक उनकी मां के चेहरे पर मुस्कान देखना था। बिग बैश लीग मैच से पहले जॉनसन ने कहा, 'एडीलेड में अपनी मां के चेहरे पर 'फेसटाइम' पर मुस्कान देखना अच्छा था। यह मेरे लिए ही खुशी का पल नहीं है बल्कि मेरे पूरे परिवार के लिए खुशी का पल है। यह काफी विशेष है।

इंटर मियामी की तरफ से कम से कम छह मैचों में नहीं खेल पाएंगे लियोनेल मेसी

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अर्जेंटीना के दिग्गज फुटबॉलर लियोनेल मेसी अपनी राष्ट्रीय टीम के साथ व्यस्त होने के कारण मेजर लीग सॉकर की टीम इंटर मियामी की तरफ से कम से कम छह मैचों में नहीं खेल पाएंगे। मेसी का यह इंटर मियामी में पहला पूर्ण सत्र होगा। मियामी अमेरिका की शीर्ष फुटबॉल प्रतियोगिता मेजर लीग सॉकर में अपने

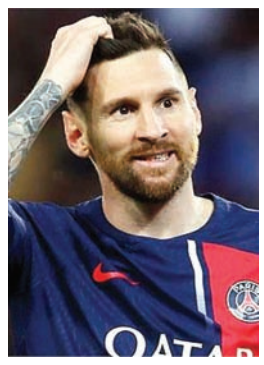

अभियान की शुरुआत 21 फरवरी को रियल साल्ट लेक के खिलाफ अपने घरेलू मैदान पर करेगा। मेजर लीग सॉकर ने बुधवार को अगले सत्र के लिए कार्यक्रम घोषित किया। इसके अनुसार प्रत्येक टीम 34 मैच खेलेगी। विश्व की अधिकतर फुटबॉल लीग फीफा के कार्यक्रम के दौरान अपने मैचों का आयोजन नहीं करती हैं लेकिन मेजर लीग सॉकर ने अंतरराष्ट्रीय मैचों के दौरान भी लीग को जारी रखने का फैसला किया है। इससे कई शीर्ष खिलाड़ी अपनी राष्ट्रीय टीम के साथ व्यस्त होने के कारण इस प्रतियोगिता में नहीं खेल पाएंगे। इन खिलाड़ियों में मेसी भी शामिल हैं। मेसी मियामी के रियल बुल्स के खिलाफ 23 मार्च को होने वाले मैच के दौरान अर्जेंटीना की टीम के साथ हो सकते हैं। इसके अलावा वह फिलाडेल्फिया (15 जून), कोलंबस (19 जून), नैशविले (29 जून), चार्लोट (3 जुलाई) और सिनसिनाटी में (6 जुलाई) के खिलाफ भी मैच नहीं खेल पाएंगे।

पाकिस्तान को लगा करारा झटका, तेज गेंदबाज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला से बाहर

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मंगलवार से मेलबर्न में होने वाले दूसरे टेस्ट क्रिकेट मैच से पहले तब करारा झटका लगा जब उसके तेज गेंदबाज खुर्रम शहजाद पसली में फ्रैक्चर और पेट की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण टेस्ट श्रृंखला से बाहर हो गए। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने पुष्टि की खुर्रम शहजाद की बाईं पसली में फ्रैक्चर है तथा विशेषज्ञों से सलाह मशविरा करने के बाद यह फैसला किया गया कि वह मेलबर्न में 26 दिसंबर से और सिडनी में 3 जनवरी से शुरू होने वाले दूसरे और तीसरे टेस्ट मैच में खेलने के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगे। पीसीबी ने बयान में कहा, 'खुर्रम शहजाद चोटिल होने के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के बाकी मैचों से बाहर हो गए हैं। पहले टेस्ट मैच के दौरान उन्होंने अपनी बायीं तरफ की पसली में दर्द की शिकायत की थी।% खुर्रम शहजाद ने पर्थ में खेले गए पहले मैच में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करते हुए 5 विकेट हासिल किए थे। ऑस्ट्रेलिया ने यह मैच 360 रन के बड़े अंतर से जीता था।

स्टोक्स-आर्चर को टी20 विश्व कप टीम में जगह मिलेगी या नहीं, इंग्लैंड के कोच ने खोल दिया राज

तारोबा (एजेंसी)। इंग्लैंड की सफेद गेंद की प्रारूप की टीम के कोच मैथ्यू मोट ने कहा कि स्टार आलराउंडर बेन स्टोक्स और तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर की मैच जिताने की काबिलियत को देखते हुए उनका 2024 टी20 विश्व कप के लिए टीम में होना निहायत जरूरी है इसलिये चोट से जूझ रहे इन दोनों खिलाड़ियों के लिए टीम में जगह बनी रहेगी।

स्टोक्स के घुटने का नवंबर में ऑपरेशन हुआ था और उनके अगले साल जनवरी से मार्च तक भारत में होने वाली टेस्ट श्रृंखला के लिए इंग्लैंड की कप्तानी के लिए फिट होने की उम्मीद है। वहीं आर्चर कोहनी की चोट के कारण मार्च से इंग्लैंड के लिए नहीं खेले हैं। इन दोनों के फिटनेस हासिल करने के बाद टी20 विश्व कप टीम में जगह बनाने की उम्मीद है जो जून में शुरू होगा।

मोट से जब पूछा गया कि क्या स्टोक्स और आर्चर विश्व कप चयन के लिए उपलब्ध होंगे तो उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि यह लाजमी है। उन्होंने यहां वेस्टइंडीज के खिलाफ पांचवें और अंतिम टी20 अंतरराष्ट्रीय से पहले कहा, 'बेन प्रत्येक विभाग में मैच जिताने की काबिलियत मुहैया कराने के अलावा हमें शीर्ष छह में एक तेज गेंदबाज रखने का विकल्प देते हैं जिससे आपको टीम का संतुलन बनाने के लिए कई विकल्प मिल जाते हैं, इससे चयन काफी आसान बन जाता है। इसलिये यह लाजमी ही है।

उन्होंने कहा, 'जहां तक जोफ्रा की बात है तो वह अपनी तेज रफ्तार से पारी में कोई भी ओवर डाल सकता है। आपके लिए सुपर ओवर डाल सकता है, जब जरूरत हो अंतिम ओवर डाल सकता है। आर्चर लगातार चोटों से जूझते रहे हैं जिससे वह 2021 के बाद से टेस्ट क्रिकेट से बाहर हैं। उन्होंने 2023 में सफेद गेंद के महज सात मैच खेले हैं। उन्हें अगले साल जनवरी-मार्च में भारत का दौरा करने वाली टेस्ट टीम में नहीं चुना गया है।

टी20 विश्व कप अगले साल वेस्टइंडीज और अमेरिका में जून में खेला जायेगा। मोट ने संकेत दिया कि जोस बटलर और फिल साल्ट की सलामी जोड़ी के टी20 विश्व कप टीम में बने रहने की उम्मीद है। इन दोनों ने पिछली दो पारियों में लगातार शतकीय साझेदारी बनायी है। मोट ने कहा, 'यह जोड़ी शानदार खेल दिखा रही है।

धोनी का उत्तराधिकार कौन ?

सवाल पर कोच स्टीफन फ्लेमिंग बोले- हमारे पास 10 साल से योजना है

दुबई (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स के कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने मंगलवार को 5 बार के आईपीएल चैंपियन एमएस धोनी के कप्तान के रूप में उत्तराधिकार की योजना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए

कहा कि उनके पास लगभग 10 वर्षों से पूर्व भारतीय कप्तान के लिए उत्तराधिकार की योजना थी। आईपीएल 2024 की नीलामी में अब तक सीएसके ने रचिन रवींद्र, डेरिल मिशेल और शार्दुल ठाकुर को खरीदा है।

कोका-कोला एरेना में मीडिया से बात करते हुए, फ्लेमिंग ने सीएसके के कप्तान के रूप में धोनी की जगह लेने की योजना के बारे में बात की और कहा कि जब तक टीम और फ्रेंचाइजी के लिए जुनून है, वे आगे बढ़ते रहेंगे। फ्लेमिंग ने कहा कि हमारे पास लगभग 10 वर्षों से एमएस के लिए उत्तराधिकार की योजना है। यह एक चर्चा का विषय होने वाला है, लेकिन वह उतना ही व्यस्त और उत्साही है जितना मैंने उसे कुछ समय से देखा है। जब तक उनमें टीम और फ्रेंचाइजी के लिए वह जुनून रहेगा, हम आगे बढ़ते जाएंगे।

2022 में आईपीएल में अपने पहले गेम से ठीक पहले, चेन्नई ने एमएस धोनी की जगह रवींद्र जडेजा को कप्तान चुनकर एक प्रयास किया। 5 बार के चैंपियन इस बदलाव के बावजूद लड़खड़ा गए और अपने शुरुआती सात मैचों में सिर्फ एक जीतकर स्टैंडिंग में आखिरी स्थान पर रहे। आखिरकार धोनी को दोबारा कप्तानी संभालनी पड़ी। लेकिन 2023 में, इस दिग्गज ने चेन्नई को गौरव दिलाया, जब उन्होंने अहमदाबाद में खेले गए बारिश से प्रभावित फाइनल में गुजरात टाइटंस को हराकर चैंपियनशिप जीती।

पाकिस्तान के पूर्व कप्तान अजहर अली ने एनसीए निदेशक पद के लिए किया आवेदन

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व टेस्ट और एकदिवसीय कप्तान अजहर अली ने लाहौर स्थित राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के निदेशक पद के लिए आवेदन किया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने एनसीए के निदेशक पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए थे और विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार अजहर ने न सिर्फ आवेदन किया है बल्कि उन्होंने इस पद में गहरी

दिलचस्पी भी दिखाई है। सूत्रों ने कहा, 'पीसीबी भी इससे खुश है कि अजहर ने इस पद में दिलचस्पी दिखाई है क्योंकि उनकी क्रिकेट और शैक्षिक पृष्ठभूमि अच्छी है। अजहर ने पिछले साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। उन्होंने पाकिस्तान की तरफ से 97 टेस्ट और 53 वनडे मैच खेले हैं। इसके अलावा उन्हें 263 प्रथम श्रेणी क्रिकेट मैच खेलने का भी अनुभव है।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वेस्टइंडीज ने टेस्ट टीम की घोषणा की, 7 अनकैप्ड खिलाड़ियों को दी जगह

सेंट जॉन्स (एंटीगुआ) (एजेंसी)। वेस्टइंडीज ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अगले महीने होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की है जिसमें सात अनकैप्ड खिलाड़ी शामिल हैं। क्रैग ब्रैथवेट टीम की कप्तानी करेंगे जबकि अल्जारी जोसेफ को उप-कप्तान बनाया गया है। टीम में सात अनकैप्ड खिलाड़ियों में बल्लेबाज जाचरी मैकास्की, विकेटकीपर टेविन इमलाच, ऑलराउंडर जस्टिन ग्रीव्स, केवम हॉज, केविन सिंक्लेयर, तेज गेंदबाज अकीम जॉर्डन और शमर जोसेफ हैं। वेस्टइंडीज टीम 30 दिसंबर को ऑस्ट्रेलिया पहुंचेगी और 2 से 9 जनवरी तक एडिलेड में तैयारी शिविर आयोजित करेगी, जिसके बाद करेन रोल्टन ओवल (केआरओ) में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया इलेवन के खिलाफ चार दिवसीय प्रथम श्रेणी अभ्यास मैच 10 से 13 जनवरी तक एडिलेड में होगा।

दोनों टीमें फ्रैंक वॉरेल ट्रॉफी के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी जिसका नाम वेस्टइंडीज के महान ऑलराउंडर और कप्तान के सम्मान में रखा गया है। पहला टेस्ट 17 से 21 जनवरी तक एडिलेड ओवल में लाल गेंद से होगा और दूसरा गुलाबी गेंद

से डे/नाइट मैच 25 से 29 जनवरी तक ब्रिस्बेन के गाबा में होगा।वेस्टइंडीज के प्रमुख चयनकर्ता डेसमंड हेन्स ने कहा, कुछ प्रमुख खिलाड़ियों की अनुपलब्धता से टीम प्रभावित हुई है। हालांकि हमने पिछले साल से एक बहुत मजबूत रेड-बॉल कार्यक्रम चलाया है जिसने पूरे क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रतिभाओं को उजागर किया है। उन्होंने कहा, चयनित खिलाड़ियों ने उन्हें दिए गए प्रत्येक टेस्ट को पास कर लिया है और अब उन्हें टेस्ट क्षेत्र में अपने कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया से बाहर हमेशा एक चुनौती होती है, लेकिन हमें अपनी टीम पर भरोसा है।

ऑस्ट्रेलियाई दौरे के लिए वेस्टइंडीज की टेस्ट टीम – क्रैग ब्रैथवेट (कप्तान), अल्जारी जोसेफ (उप-कप्तान), टेगेनरीन चंद्रपॉल, किर्क मैकेंजी। एलिक अथानाज़े, केवम हॉज, जस्टिन ग्रीव्स, जोशुआ डासिल्वा, अकीम जॉर्डन, गुडाकेश मोती, केमर रोच, केविन सिंक्लेयर, टेविन इमलाच, शमर जोसेफ, ज़ाचरी मैकास्की

गुरुग्राम नई रफ्तार को तैयार, 16 एकड़ जमीन पर बसेगा सेक्टर-13, ड्रीम सिटी योजना में बदलाव

नईदिल्ली, एजेंसी। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवीपी) द्वारा अब गुरुग्राम में ओल्ड दिल्ली रोड पर 16 एकड़ जमीन में सेक्टर-13 को विकसित किया जाएगा। इसको लेकर एचएसवीपी ने योजना तैयार कर ली है। एचएसवीपी सेक्टर में अतिक्रमण हटाकर रिहायशी प्लॉट काटेगा। इससे पहले यहां पर ड्रीम सिटी बनाने की योजना थी।

एचएसवीपी ने 2003 में ओल्ड दिल्ली रोड पर ड्रीम सिटी विकसित करने के लिए 16 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया था। लोगों ने इसका विरोध किया था। जमीन मालिकों ने अधिग्रहण के खिलाफ कोर्ट की ओर रुख करते हुए याचिका दायर की थी। अब मामले में 20 वर्ष के बाद प्राधिकरण की मामले में जीत हुई है। बुधवार को एचएसवीपी की भूमि अधिग्रहण अधिकारी सुमन भाकर ने जमीन का अवॉर्ड सुनाया। इसमें संबंधित जमीन के मालिकों को चार लाख रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से मुआवजा दिया जाएगा।

फरीदाबाद : मंझावली पुल ओपनिंग को लेकर नया अपडेट; ग्रेटर नोएडा समेत इन 5 कारोबारी शहरों को होगा फायदा: कब्जे हटाने का अभियान चलेगा : जानकारी के अनुसार सेक्टर-13 की इस 16 एकड़ जमीन पर लोगों ने कहीं पर स्थायी और अस्थायी रूप से अवैध कब्जा किया हुआ है। ऐसे में प्राधिकरण सभी औपचारिकताएं पूरा करने के बाद अतिक्रमण हटाकर जमीन को कब्जे में लिया जाएगा। इसके बाद सेक्टर को

विकसित करने की योजना पर काम शुरू किया जाएगा।

वहीं, अब शहर के बीचों-बीच लोगों को सपनों का घर बनाने के लिए रिहायशी प्लॉट मिल सकेंगे। ओल्ड डीएलएफ के सामने यह सेक्टर की जमीन को अधिग्रहण एचएसवीपी ने किया था। सेक्टर-14 के सामने ही सेक्टर-13 को विकसित किया जाएगा। सेक्टर विकसित होने के बाद यहां पर लोगों को भविष्य में काफी सुविधाएं मिलेंगी। साथ ही दूसरे सेक्टरों में भी व्यवस्थाएं बेहतर होंगी।

जमीन मालिकों को मुआवजा मिलेगा: जमीन अधिग्रहण को लेकर जमीन मालिकों ने पहले हाई कोर्ट में फिर सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। अब प्राधिकरण इस मामले में जीत हासिल कर ली है। अब विभाग ने प्रक्रिया को पूरी करते हुए बुधवार को जमीन मालिकों को भूमि अधिग्रहण अधिकारी ने आवॉर्ड सुनवाया है। चार लाख रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से जमीन मालिकों को मुआवजा दिया जाएगा, जो कि आज के समय में कुछ भी नहीं है। ओल्ड दिल्ली रोड पर सेक्टर-14 के सामने की जमीन की कीमत करोड़ों में है, लेकिन 20 साल पहले के हिसाब अब जमीन मालिकों को मुआवजा मिलेगा। कम मुआवजा मिलने से अब जमीन मालिकों में मायूसी छाई हुई है।

देरी के कारण ड्रीम सिटी की योजना रद्द: एचएसवीपी ने जिस समय सेक्टर-13 की जमीन का अधिग्रहण किया था, उस समय एचएसवीपी द्वारा यहां ड्रीम सिटी विकसित करने की योजना तैयार की थी। ड्रीम सिटी विकसित करने के लिए ही जमीन का अधिग्रहण किया गया था, लेकिन बाद में अब 20 साल तक लंबा मामला चलने के कारण विभाग ने योजना में बदलाव कर दिया है। अब यहां 16 एकड़ जमीन में 100 गज, 200 गज, 300 गज, 500 गज के प्लॉट काटे जाएंगे। इसके अलावा यहां लोगों को पार्क, ग्रीन बेल्ट, सामुदायिक भवन समेत कई प्रकार की सुविधाएं लोगों को इस सेक्टर में मिलेगी।

-विकास ढांडा, संपदा अधिकारी-1, एचएसवीपी, जमीन पर ड्रीम सिटी विकसित करने के लिए अधिग्रहण किया था, लंबा समय बीतने के बाद सेक्टर-13 को विकसित किया जाएगा।

आईजीआई पर बनेगा देश का पहला मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब, यात्रियों को मिलेंगी हाईटेक सुविधाएं

नईदिल्ली, एजेंसी। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट (आईजीआई) पर जल्द ही देश का पहला मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब बनेगा। इसे एयरोसिटी के पास एयरपोर्ट संचालन कंपनी जीएमआर बनाएगी। इसके बनने से यात्रियों के लिए एयरपोर्ट से हवाई जहाज और मेट्रो के अलावा बस की सुविधा भी उपलब्ध होगी। इसके अलावा यहां पर ऑटोमेटेड पैसेंजर मूवर, आरआरटीएस और पैसेंजर ट्रांसपोर्ट सेंटर बनाने का भी प्रस्ताव है।

डायल के अनुसार, आईजीआई एयरपोर्ट से विदेश सफर करने के लिए दिल्ली के अलावा उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश से यात्री आते हैं। इनमें से बड़ी संख्या में यात्री बस से अलग-अलग बस अड्डों पर आते हैं।

फिर वहां से बस-मेट्रो में सवार होकर एयरपोर्ट पहुंचते हैं। इसकी प्रमुख वजह दिल्ली एयरपोर्ट पर बसों के खड़े होने की सुविधा न होना है। ऐसे यात्रियों की सुविधा के लिए एयरपोर्ट पर ही बस अड्डा तैयार किया जा रहा है। इसमें 50 बसें एक साथ खड़ी हो सकेंगी। दिल्ली परिवहन विभाग के परामर्श से इसे विकसित किया जाएगा।

दूसरी मेट्रो लाइन भी जल्द पहुंचेगी: डायल के अनुसार, अभी एयरोसिटी में मेट्रो एक्सप्रेस लाइन का स्टेशन है। डीएमआरसी द्वारा चौथे फेज में सिल्वर लाइन मेट्रो बनाई जा रही है। यह लाइन तुगलकाबाद से एयरोसिटी जाएगी। इस लाइन के एयरोसिटी पहुंचने से नई दिल्ली के साथ दक्षिण दिल्ली भी एयरोपोर्ट से मेट्रो के जरिये जुड़ जाएगी।

यात्रियों को अत्याधुनिक सुविधाएं दी जाएंगी: प्रस्तावित बस अड्डे में एयरपोर्ट के मानक अनुसार, यात्रियों के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं होंगी। इसमें एफ एंड बी आउटलेट, ईवी चार्जिंग स्टेशन, वेटिंग हॉल, इंटरनेट सेवा, बेहतर माहौल, व्यवसाय केंद्र आदि उपलब्ध होंगे। विभिन्न राज्यों से आने वाले यात्री बस अड्डे पर उतरकर ऑटोमेटेड पैसैंजर मूवर या मेट्रो में बैठकर एयरपोर्ट पहुंच सकेंगे।

एसआईटी ने बस से भेजी मुआवजे की एक हजार फाइलें, अब मेरठ में होगी जांच ; सुको में सुनवाई से पहले सरकार को देनी है रिपोर्ट

नईदिल्ली, एजेंसी। एसआईटी ने मुआवजे से जुड़ी जांच तेज कर दी है। इसी कड़ी में प्राधिकरण ने बुधवार को करीब एक हजार फाइलों को बस के जरिए मेरठ भेजा। अब एसआईटी के सदस्य मेरठ में बैठकर फाइलों की और गहनता से जांच करेंगे। उच्चतम न्यायालय के आदेश पर एसआईटी बीते 10-15 सालों में बांटे गए मुआवजा प्रकरणों की जांच कर रही है। करीब 20 दिन पहले एसआईटी के चेयरमैन की अध्यक्षता में समिति ने नोएडा प्राधिकरण आकर जांच की थी। बोर्ड ऑफ रेवेन्यू के चेयरमैन हेमंत राव को एसआईटी का हेड बनाया गया है। उनके साथ सदस्य के रूप में एडीजी मेरठ राजीव सभरवाल एवं मेरठ मंडल की आयुक्त सेल्वा कुमारी जे शामिल हैं। इस महीने के शुरुआत में करीब तीन दिन तक प्राधिकरण दफ्तर में रहकर फाइलों को खंगाला गया। अब एक बार फिर टीम ने प्राधिकरण आकर जांच की। सोमवार और मंगलवार को प्राधिकरण में ही रहकर टीम ने जांच की। एसआईटी की टीम बुधवार को प्राधिकरण दफ्तर नहीं आई, लेकिन फाइलों को मेरठ मंगाया। दोपहर करीब साढ़े बारह बजे मिनी बस के जरिए पुलिस सुरक्षा में अलग-अलग बक्सों में करीब एक हजार फाइलें मेरठ भेजी गईं। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इन फाइलों की गहनता से जांच करने के बाद एसआईटी इनको लौटा देगी। न्यायालय के आदेश पर या जिन किसानों के मामले न्यायालय में चल रहे हैं, ऐसे करीब 1500 मामलों की फाइलें भेजी गई हैं। इन फाइलों की जांच एसआईटी प्राथमिकता पर कर रही है। मुआवजा प्रकरण से जुड़े मामले में अब 18 जनवरी को उच्चतम न्यायालय में सुनवाई होनी है। इससे पहले एसआईटी शासन को रिपोर्ट सौंप देगी। शासन न्यायालय में रिपोर्ट जमा करेगा। सूत्रों ने बताया कि मुआवजा वितरण में वर्ष 2015-16 के दौरान सबसे ज्यादा गड़बड़ी हुई। ऐसे में एसआईटी ने भी इसी साल की फाइलों की गहनता से जांच कर रही है। गेझा तिलताबाद में इसी दौरान गलत तरीके से 89 करोड़ रुपये का मुआवजा बांटने में गड़बड़ी का खुलासा हो चुका है। अब तक गेझा गांव से ही जुड़े हुए 11 प्रकरण सामने सामने आ चुके हैं। इन मामलों में प्राधिकरण केस दर्ज करा चुका है। नोएडा के गांवों में मुआवजा बांटने में गड़बड़ी का सबसे पहले खुलासा वर्ष 2021 में गेझा तिलपताबाद गांव में हुआ था। इसके बाद प्राधिकरण ने अपने दो अधिकारियों और किसान के खिलाफ कोतवाली सेक्टर-20 में मामला दर्ज कराया था।

विपश्यना के लिए होशियारपुर पहुंचे केजरीवाल; टीवी, मोबाइल से रहेंगे दूर

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा 21 दिसंबर को पूछताछ के लिए तलब किए जाने के बीच बुधवार को 10 दिनों के लिए विपश्यना करने के लिए होशियारपुर पहुंचे। केजरीवाल होशियारपुर से करीब 11 किलोमीटर दूर आनंदगढ़ में धम्म धजा विपश्यना केंद्र पहुंचे। ऐसे में जब ईडी ने कथित शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में पूछताछ के लिए उनको नया समन जारी किया है, वह बुधवार को पूर्व निर्धारित ध्यान पाठ्यक्रम के लिए करीब डेढ़ बजे रवाना हो गये।

पहली बार पंजाब में पड़ाव: यह पहली बार है कि आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक केजरीवाल पंजाब में विपश्यना करेंगे। नियमित रूप से विपश्यना करने वाले केजरीवाल पहले जयपुर, नागपुर, बेंगलुरु में विपश्यना का अभ्यास कर चुके हैं।

सुबह 4 बजे से रात 9:30 बजे तक सख्त दिनचर्या : केजरीवाल सुबह 4 बजे से शुरू होकर रात 9:30 बजे तक सख्त दैनिक दिनचर्या का पालन करेंगे। वह साधारण भोजन लेंगे। उनको दोपहर के बाद भोजन की अनुमति नहीं होगी। उनके कमरे में एक साधारण बिस्तर होगा।

सरकारी काम-काज से रहेंगे दूर: इस विपश्यना अभ्यास के दौरान केजरीवाल किसी भी सरकारी दायित्व से दूर रहेंगे तथा वह केंद्र के नियमों का पालन करेंगे जिनमें मोबाइल , इंटरनेट, टेलीविजन और अखबारों से दूर रहना भी शामिल है।

एक दूसरे से भी बातचीत नहीं करेंगे: प्रवक्ता ने बताया कि प्रतिभागियों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करने से प्रतिबंधित किया गया है। संचार को उनके प्रशिक्षकों के साथ विशिष्ट अंतराल तक ही सीमित रखा गया है।

क्या है विपश्यना?: विपश्यना एक प्राचीन भारतीय ध्यान विधि है जिसमें साधक अपनी मानसिक स्वास्थ्य के लिए लंबे समय तक हर तरह के संचार से दूर रहते हैं। केजरीवाल रात 8 बजे शुरू होने वाले 10 दिवसीय माइंडफुलनेस मेडिटेशन रिट्रीट की शुरुआत करेंगे। धम्म धजा विपश्यना ध्यान केंद्र के एक प्रवक्ता ने कहा कि विपश्यना सदियों पुरानी ??गैर-सांप्रदायिक ध्यान विधि है जिसका उद्देश्य मानसिक अशुद्धियों को दूर करना और मानसिक स्वास्थ्य लाभ करना है।

ऐसे होती है मन की शुद्धि: विपश्यना पाठ्यक्रम की अनुशासन संहिता की आधारशिला में नैतिक आचरण (सिला) शामिल है, जिससे मन की एकाग्रता का विकास होता है और अंतर्दृष्टि के ज्ञान से मन की शुद्धि होती है।

ईडी के समन पर क्या रहेगा रुख?: आम आदमी पार्टी ने मंगलवार को ईडी के समन के समय पर यह कहते हुए प्रश्न उठाया था कि पार्टी के वकील नोटिस का अध्ययन कर रहे हैं तथा कानून सम्मत कदम उठाये जाएंगे। केजरीवाल का विपश्यना पूर्व निर्धारित है और इसके बारे में सभी को पता है। इससे पहले केजरीवाल को दो नवंबर को ईडी ने तलब किया था लेकिन वह नोटिस को गैर कानूनी और राजनीति से प्रेरित बताकर ईडी के सामने पूछताछ के लिए नहीं पेश हुए थे।

अब स्पा सेंटर और देह व्यापार में लिप्त लोगों पर लगेगा गैंगस्टर एक्ट

नईदिल्ली, एजेंसी। स्पा सेंटर संचालकों और देह व्यापार में लिप्त लोगों पर शिकंजा कसने के लिए गाजियाबाद पुलिस ने उनके खिलाफ निरोधात्मक कार्रवाई का फैसला लिया है। कानून के जानकारों से रायशुमारी के बाद इस तरह के अपराध में लिप्त लोगों पर गैंगस्टर ऐक्ट के तहत कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने गैंगस्टर ऐक्ट लगाने के लिए इस साल के 14 मामलों में शामिल मिले 123 लोगों को चिह्नित किया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि दिल्ली से नजदीकी और आर्थिक संपन्नता के चलते गाजियाबाद में स्पा सेंटर और देह व्यापार के अड्डे बड़े पैमाने पर संचालित हैं। आमतौर पर पुलिस की मिलीभगत से इन गोरखधंधों के फलने-फूलने का आरोप लगता है। अधिकारियों के संज्ञान में आने पर पुलिस कार्रवाई भी करती है तो सात साल से कम सजा होने के कारण आरोपी या तो जेल जाने से बच जाते हैं या फिर चंद दिनों में उन्हें जमानत मिल जाती है। इससे स्पा सेंटर संचालक और देह व्यापार में लिप्त आरोपी फिर से काम में जुट जाते हैं।

अधिकारियों के मुताबिक, आदतन देह व्यापार तथा स्पा सेंटर संचालित करने के चलते पुलिस ने अब ऐसे लोगों पर सख्ती बरतते हुए गैंगस्टर एक्ट लगाने का फैसला लिया है। अधिकारियों का कहना है कि गाजियाबाद में इस तरह के अपराध में लिप्त लोगों पर पूर्व में कभी भी गैंगस्टर की कार्रवाई नहीं हुई है।

लंबे समय तक जेल में रहेंगे, संपत्ति जब्त होगी: इस साल स्पा सेंटर तथा देह व्यापार के भंडाफोड़ के 14 मामले सामने आए हैं। सर्वाधिक नौ मामले ट्रांस हिंडन जोन में सामने आए, जबकि सिटी जोन में तीन तथा ग्रामीण जोन में दो मामले सामने आए। इनमें 123 आरोपी शामिल मिले। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक स्पा सेंटर तथा देह व्यापार में लिप्त लोगों पर गैंगस्टर लगाकर उन्हें लंबे समय तक जेल में रखा जाएगा तथा आरोपियों की संपत्ति कुर्क की जाएगी।

90 सेकंड पहले एग्जाम खत्म करने पर केस

साउथ कोरिया में कॉलेज एडमिशन के लिए हुई थी परीक्षा, मुकदमा हारी तो भारी जुर्माना चुकाएगी

सियोल , एजेंसी। साउथ कोरिया में कॉलेज एडमिशन के लिए एंट्रेंस एग्जाम देने वाले स्टूडेंट्स ने सरकार पर केस कर दिया है। इन स्टूडेंट्स का आरोप है कि उनका एग्जाम तय वक्त से 90 सेकंड पहले ही खत्म कर दिया गया और इसकी जिम्मेदार सरकार है। बहरहाल, अगर कोर्ट में छात्रों के आरोप साबित होते हैं और वो इस गलती की जिम्मेदार साबित होती है तो उसे हर छात्र को 20 लाख वॉन (15 हजार 400 डॉलर या 12 लाख 77 हजार रुपए) देने होंगे। यह एक स्टूडेंट की एक साल की ट्यूशन फीस के बराबर है। 'द टेलिग्राफ' की रिपोर्ट के मुताबिक- स्टूडेंट्स इसे सरकार की बड़ी लापरवाही बता रहे हैं, क्योंकि इसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ेगा। छात्रों के वकील ने कहा- इस गलती का एक नुकसान ये भी है कि इसका नुकसान बाकी छात्रों को भी उठाना पड़ेगा।

साउथ कोरिया में कॉलेज एडमिशन आसान नहीं है। इसके लिए मुश्किल एंट्रेंस एग्जाम होता है। इसे लोकल लैंग्वेज में 'सुनेउंग' कहा जाता है। इस एग्जाम के लिए कुल 8 घंटे दिए जाते हैं। इस दौरान उन्हें कई एग्जाम पेपर्स सॉल्व करने होते हैं। ये एग्जाम पेपर्स अलग-अलग सब्जेक्ट के होते हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक- सुनेउंग, दरहकीकत दुनिया की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक है और इसके लिए स्टूडेंट्स को लंबे वक्त तक तैयारी करनी पड़ती है। लिहाजा, उनके लिए हर मिनट बेहद कीमती होता है।

हमास ने की बंधकों की रिहाई से पहले युद्ध पर पूरी तरह रोक लगाने की मांग

तेल अवीव, एजेंसी। इजराइल के साथ युद्धरत आतंकी समूह हमास कथित तौर पर अपने बंधकों की रिहाई के लिए आंशिक युद्धविराम से पीछे हट गया है। इज़राइल के प्रधान मंत्री कार्यालय (पीएमओ) के सूत्रों के अनुसार, काहिरा में वरिष्ठ हमास नेताओं की एक प्रतिनिधित्वि कर रहे हमास के राजनीतिक प्रमुख, इस्माइल हानियेह ने मिस्र के वार्ताकारों को सूचित किया है कि उनका संगठन गाजा पट्टी में केवल युद्ध के पूर्ण अंत के लिए ही सहमत होगा। इजराइल युद्ध को पूरी तरह से बंद करने पर असहमत है और इसके कारण हमास द्वारा बंधक बनाए गए लगभग 120 बंधकों का भविष्य अधर में है। इस्माइल हानियेह ने वार्ताकारों से कहा है कि वह युद्ध रोकने के लिए काहिरा में हैं और अंशकालिक युद्धविराम और बंधकों की रिहाई संभव नहीं है।

गौरतलब है कि इज़राइल ने हमास की हिरासत में 40 बंधकों की रिहाई के लिए लड़ाई में एक सप्ताह के संघर्ष विराम पर सहमति व्यक्त की थी, इसमें महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग शामिल थे, जो बीमार हैं और उन्हें दवा की जरूरत है। इज़रायल ने इज़रायल की जेलों में बंद फ़िलिस्तीनी कैदियों को रिहा करने पर भी सहमति व्यक्त की है और यहां कहा था कि जो फ़िलिस्तीनी अधिक गंभीर अपराधों के लिए सलाखों के पीछे हैं, उन्हें बंधकों की अदला-बदली के लिए छोड़ा जा सकता है। इज़राइल व हमास के बीच 7 अक्टूबर को शुरू हुए युद्ध के दौरान 24 नवंबर से 1 दिसंबर तक एक सप्ताह के युद्धविराम में 105 बंधकों को रिहा किया गया, जिन्हें 7 अक्टूबर को दक्षिण इज़राइल में तबाही और नरसंहार के बाद हमास ने पकड़ लिया था।

हम रिश्ते बेहतर बनाना चाहते लेकिन , जस्टिन ट्रूडो बोले- अमेरिका की वजह से भारत के रिश्तों में आया बदलाव

ओटावा , एजेंसी। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा है कि भारत और कनाडा के रिश्तों में अचानक बदलाव देखा जा रहा है। यह बदलाव तब आया जब अमेरिका ने भारत पर आरोप लगाए कि अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या करने के लिए भारत सरकार के कर्मचारी ने एक व्यक्ति से संपर्क किया था।

भारत में सहयोग करने की भावना आ चुकी है: ट्रूडो: जस्टिन ट्रूडो कनाडा के न्यूज चैनल सीबीसी न्यूज को साक्षात्कार देते हुए कहा कि शायद भारत को यह अहसास हो चुका है कि वो हमेशा आक्रमक रुख अख्तियार नहीं कर सकते। इसलिए भारत में सहयोग करने की भावना आ चुकी है। ट्रूडो का मानना है कि अमेरिका के कड़े रुख की वजह से भारत में यह बदलाव आया है।

ट्रूडो ने आगे कहा कि हम भारत के साथ टकराव नहीं चाहते और रिश्ते बेहतर बनाना चाहते हैं। हम इंडो-पैसिफिक रणनीति को आगे बढ़ाना चाहते हैं। लेकिन कनाडा के लिए लोगों के अधिकारों, लोगों की सुरक्षा और कानून के शासन के लिए खड़ा होना हमारा कर्तव्य है।

कनाडा ने भारत पर लगाया हरदीप सिंह निज्जर की हत्या का आरोप: दरअसल, पिछले कुछ महीनों से कनाडा और भारत के रिश्तों में खटास बनी हुई है। कनाडा ने भारत पर आरोप लगाया है कि खालिस्तान समर्थक नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के पीछे भारत के एजेंसियों का हाथ है। हालांकि, कनाडा के पास इस आरोप को लेकर कोई ठोस साक्ष्य मौजूद नहीं है।

वहीं, भारत का कहना है कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने हमेशा खालिस्तानी नेताओं को कनाडा में पनाह दी है और खालिस्तानी विचारधाराओं को फैलाने में कनाडा मदद भी कर रहा है। वहीं, कुछ दिनों पहले अमेरिका ने भारत पर यह आरोप लगाया कि अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या करने के लिए भारत सरकार के कर्मचारी ने एक व्यक्ति से संपर्क किया था।

ट्रूडो ने निज्जर हत्याकांड के सिलसिले में साक्ष्य देने की कोई बात नहीं कही: कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को उम्मीद है कि अमेरिका में अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की साजिश का पता चलने के बाद कनाडाई नागरिक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या की जांच को गति मिलेगी। निज्जर की हत्या के मामले की जांच में भारत सहयोग करेगा। साक्षात्कार में उन्होंने भारत को निज्जर हत्याकांड के सिलसिले में साक्ष्य देने की कोई बात नहीं कही है।

ट्रूडो ने कहा, पन्नू मामले में अमेरिका के कड़े रुख से भारतीय एजेंसियां जांच में सहयोग देने को तैयार हुई हैं। उन्हें उम्मीद है कि अब निज्जर हत्याकांड की जांच में कनाडा को भी वैसा ही सहयोग मिलेगा। इससे मामले के असली अपराधी दंडित किए जा सकेंगे।

भारत-कनाडा के रिश्ते कब बिगड़े: ट्रूडो ने 18 सितंबर को कहा था कि कनाडा की खुफिया एजेंसियों को विश्वसनीय साक्ष्य मिले हैं कि निज्जर हत्याकांड में भारत सरकार के एजेंट शामिल थे। भारत में हुई कई आपराधिक घटनाओं में शामिल निज्जर की कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया शहर में जून में गोली मारकर हत्या हुई थी। भारत को हत्याकांड से संबंधित साक्ष्य दिए बगैर ट्रूडो के इस सार्वजनिक बयान से भारत और कनाडा के संबंधों में तनाव आ गया था। भारत ने ट्रूडो के बयान पर कड़ा विरोध जताते हुए कनाडा के नई दिल्ली स्थित दूतावास में तैनात अतिरिक्त राजनयिकों को निष्कासित कर दिया था।

इजरायल-हमास युद्ध: गाजा में फिलीस्तीनियों की मौत का आंकड़ा 20 हजार पहुंचा

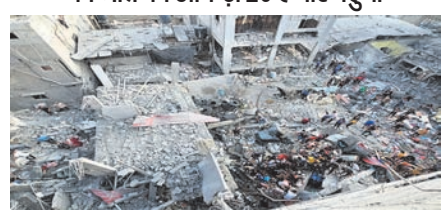

गाजा, एजेंसी। हमास द्वारा संचालित सरकारी मीडिया कार्यालय द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, 7 अक्टूबर से गाजा पट्टी में इजरायली हमलों में मरने वाले फिलिस्तीनियों की संख्या 20 हजार तक पहुंच गई है। समाचार एजेंसी शन्हिुआ की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार को बयान में कहा गया कि मृतकों में 8,000 से अधिक बच्चे और 6,200 महिलाएं शामिल हैं, जबकि 52,000 से अधिक लोग घायल हुए हैं और 6,700 अन्य लापता हैं। इसमें कहा गया है कि इजरायली हमलों में कुल 310 चिकित्सा कर्मी, 35 नागरिक सुरक्षा कर्मी और 97 पत्रकार मारे गए। इस बीच, फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय ने बुधवार को कहा कि वेस्ट बैंक के हेब्रोन और बेथलहम शहरों में इजरायली सैनिकों के साथ झड़प में दो फिलिस्तीनी मारे गए। आधिकारिक फ़िलिस्तीनी समाचार एजेंसी डब्ल्यूएएफए के अनुसार, 7 अक्टूबर को इज़रायली-फ़िलिस्तीनी संघर्ष का यह नया दौर शुरू होने के बाद से कब्जे वाले क्षेत्र में इज़रायली गोलीबारी से मरने वाले फ़िलिस्तीनियों की संख्या बढ़कर 303 हो गई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129